ISSN:2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता साहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

वर्ष - 11 / अंक - 6
अगस्त - सितंबर - 2026

KBS AIR & GAS
KBS Air & Gas Engineering
SALE & SERVICE
* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.
GAS DRYER
Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India
E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com
MOB. : +91-7042608107, 8010108288

CompuNet Solution
CNS
Network Services
Service
AMC
Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला

विनोद यादव, गाजियाबाद

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी

(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह

(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)

सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)

डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)

सौरभ पाण्डेय,नैनी, प्रयागराज (उ0प्र0)

दिनेश पाण्डेय, पटना

डॉ जयंत शुक्ला, इंदौर (म0प्र0)

तकनीकी एडिटिंग-कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र (कवर पेज)सहयोग

केशव मोहन पाण्डेय –**नई दिल्ली**

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)

डॉ. हरेश्वर राय (सतना)

अशोक कुमार तिवारी (बलिया)

राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्य गण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना, डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002

PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com

Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

संपादकीय

समय के आरोह-अवरोह के बीच समाज
–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

धरोहर

कउवा- आनंद संधिदूत/6

आलेख/शोध लेख/निबंध

गंगा के नवगीत के भीतर भाव के उत्पात –कनक किशोर /37-38
भोजपुरी साहित्य के काल विभाजन: एगो अध्ययन –जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /40-41
भोजपुरी नाटक के विविध रूप-डॉ सुधांशु कुमार सिंह/45-47

कहानी/लघुकथा/रम्य रचना

के कहSता- राम यश ‘अविकल’/18-23
कस्तुरी हियरा-शरण आशुतोष /23-25
माटी के रोवाई-डॉ सुरेश कुमार मिश्र ‘उरतृप्त’/26
दोसरा के बेटी –अंकुश्री/44

कविता/गीत/गजल

युद्ध विराम आ लइकन –कनक किशोर /27
पवनसुत आवा ना –धीरेन्द्र पांचाल /28
एह लोकतंत्र में सब बा जायज –डॉ राम बचन यादव/28
आफातारा में-डॉ हरेश्वर राय /29
कहीं खो गइल बा हमार गाँव –अवेद्य आलोक/29-30
बिरधाश्रम में माई-अंकुश्री/30
भोजपुरी गजल-मनोज भावुक/31
कजरी-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /32
गीत-योगेन्द्र पाण्डेय/33
लउके नाही इनार –डॉ सुनील कुमार उपाध्याय /33-34
ज्योतिर्लिंग सोमनाथ पर कजरी – सुरेश मिश्र/34
कजरी-लालबहादुर चौरसिया ‘लाल’/35
मुखिया जी –योगेंद्र शर्मा ‘योगी’/35

कविता/गीत/गजल

प्रेमवा के रोग-श्याम कुँवर भारती /39
रूहानी गजल – अभियंता सौरभ कुमार /39
गीत-भालचन्द्र त्रिपाठी /42
केकर भइलें-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /42
आस जरत बा-शम्स जमील /43
गजल- बलजीत सिंह ‘बेनाम’/43
गीत –जितेंद्र कुमार ‘नूर’/44

पुस्तक चर्चा / समीक्षा

चन्द्रेश्वर के कविता संग्रह ‘गोहार’ पढला-गुनला के बाद –डॉ सुनील कुमार पाठक /7-13
जिनगी के पेंड पर असरा के पात –डॉ विष्णुदेव तिवारी /14-17
कविता समीक्षा-ज्योति पाण्डेय /36

■■

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता

www.bhojpurisahityangan.com

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

समय के आरोह-अवरोह के बीच समाज

कतों सत्ता लोलुपता का चलते सत्ता के स्वामी लोग के करतूत, ओकरा चलते समाज के , नवहा लोगन के भा बच्चा-बुतरु सभ के बिखियाइल नजायज कइसे बा, परिभाषित नइखे कइल जा सकत। कुछ लाख लोगन का चलते डेढ़ अरब जनता के दरकिनार क के देखत सरकार अब कुरसी का छोड़ अउर कवनो बात समुझे-बुझे के तइयार नइखे देखात । सरकार के भाषा हिटलर , मुसोलिनी भा रावण आ कंस के भाषा लेखा बन चुकल बा। आपुसे में बिख के खेती करत-करावत सरकार आ सरकारी तंत्र अपना गुरूर में आन्हर हो चुकल बा। एस सी /एस टी , यू जी सी जइसन कानून एगो खास वर्ग के बिरोध में लिया के देस के गृह युद्ध में ढकेले के परयास लेखा बा। मंहगाई का चलते आम जिनगी गवें-गवें दुरूह भइल जात बा।शिक्षा चौदहवीं क चाँद बनि चुकल बा। सरकार आ शासन-प्रसासन में बइठल लोग बस आपन घर भरे में लागल बा।

भाषा, साहित्य आ संस्कृति के हाल त कहे-सुने जोग बचले नइखे। सरकार अकादमियन के ज़मींदोज़ करे में जी-जान से जुटल बा भा ओह ओर देखलो नइखे चाहत, कहल ना जा सके।बिहार, उत्तर प्रदेश भा दिल्ली के अकादमी आ ओहसे आस लगवले साहित्यकार लोगन के स्थिति साँप-छछूंदर लेखा हो चुकल बा। सरकार का लगे कलाकार/साहित्यकार लोग खातिर समये नइखे। हाँ , टिनहिया कलाकारन के सरकार में बइठावे के जुगत जरूर बा। जे लोग भाषा/ संस्कृति के मान मर्दन कइले बा, आज सरकार में बा। एह बातिन के लेके कवनो आंदोलन खड़ा होत बा , त ओहमें सरकार में बइठल लोगन के विदेशी हाथ लउके लागत बा। मने सरकार अपने कर्तव्य के त तिलांजलि दे चुकल बा।

जंतर-मंतर पर एक का बाद एक रैली आ ओहमें जुटत जन समूह बहुत कुछ कह रहल बा। सरकार हर बात के बरजोरी दबावे में लागल बा। लइका, लइकी , मरद , मेहरारू, बुढ़-पुरनिया सभे पर लाठी भांजल सरकार के आदत बनि चुकल बा।चउथा स्तम्भ सरकार के तोता बनि के जनता के गुमराह करि रहल बा। एकरा इतर चले वाला पत्रकार लोग के अपना रोजी-रोटी से विलग कइल जा रहल बा भा कवनो एक्ट में जेहल भेंजल जा रहल बा। बौद्धिक तंत्र के कुंद करि के माला पकड़ा दीहल गइल बा। मने सड़क से संसद तक अराजकता के महल खड़ा कर दीहल गइल बा। सवाल पूछल जुर्म हो चुकल बा।

प्रकृति के कहर अलगे बा। कतों सुखाड़ त कतों दहार। खेती-किसानी से नवकी पीढ़ी के पलायन पर ना त कतों बात-बतकही होत बा आ नाही ओकरे निवारन के कवनो उपाय। जनसंख्या सुरसा के मुँह लेखा बढ़ले जा रहल बा। अपनइत के चिता में आग लगले जमाना हो गइल। फेर बचल का बा। एक-दोसरा के लूटे-खसोटे आ टँगरी खींचे के कवायद। आजु के आपन बा, एह पर कुछ कहल आ तथाकथित आपने पर सहज में बिसवास कइल बहुते मोसकिल हो चुकल बा। मुँह में राम , बगल में छुरी लेहले फिरे वाले लोगन के जनसंख्या बढ़ते जा रहल बा। एक भाई दोसरा भाई के हिस्सा खाये में प्राण-पन से जुटल बा आ मोका लगते नटई दबावे में ओकरा सोचहूँ के नइखे परत। कतने मई-बाबू लोग अइसने के साथ देखाई दे रहल बाड़ें। इहो ढेर बाउर बाति बा, जवना पर सभे के सोचे के जरूरत बा।

अइसन स्थिति-परिस्थिति से ना त लेखक लोग बाचल बा आ ना त संपादके बाचल बाड़ें। पढ़निहार लोगन के अकाल त सभे भाषा-साहित्य में बा। फेर भोजपुरी जइसन बेगर मान्यता वाली भाषन के स्थिति सोचनीय त रहबे करी भा ई कहीं कि बड़ले बा। एकरा बादो अगर कतों आस के किरन लउकत होखी त उ साहित्ये में होखी। जहाँ आस बा,उमेद बा, उहाँ का बारे में सोचलो जरूरी बा आ कुछ कइलो जरूरी बा। अइसने कुल्हि आरोह आ अवरोह से जूझत भोजपुरी साहित्य सरिता के टटका अंक रउवा सभे के हाथ में सँउप रहल बानी। जय भोजपुरी।

■■

रउरा सभे के आपन--

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

www.bhojpurisahityangan.com

कउवा

टॉव-टॉव रात भर कइलन सऽ कउवा
भोरे संगीतकार भइलन सऽ कउआ

उज्जर ना भइलन सऽ पदवी-प्रतिष्ठा में
कूद-कूद केतनो नहइलन सऽ कउआ

श्रोता में ठाड़ रहे निर्धन अस कोयल
ज्ञान-कला लूट-लूट खइलन सऽ कउआ

मोर के सिकार भइल सुग्गा के जेल भइल
हर खाली डांढ पर भरइलन सऽ कउआ

अनठेनवल दम्भ भरल अइसन अनगंवलस
कउए के जाति में हेरइलन सऽ कउआ।

❑❑

आनन्द संधिदूत

जन्म—11 जनवरी 1951
मृत्यु—28 मई 2023

मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश

www.bhojpurisahityangan.com

चन्द्रेश्वर के कविता संग्रह 'गोहार 'पढ़ला-गुनला के बाद ---

डॉ सुनील कुमार पाठक

भोजपुरी में गद्य से शुरुआत करिके पद्य के दुनियाँ में उतरे वाला हिन्दी-भोजपुरी के सुप्रतिष्ठित साहित्यकार चंद्रेश्वर जी के पहिला भोजपुरी कविता -संग्रह 'गोहार ' के पढ़े से पहिले हम 'कवि का ओर से दूर गो बात ' के पढ़े लगनीं।अपना एह आत्मकथ्य में कवि कविता के लेके कुछ साफ-साफ बतकही कइले बाड़न।उनकर कहनाम बा -

1-" कविता सच्चाइयन से जोड़ के मनुष्य-जीवन के एगो गति प्रदान करेले।××××× सभ्यता -संस्कृति के रचे-गढ़े में मय संसार में ओकर योगदान विशेष रहल बा।ऊ प्रेम आ प्रतिरोध साथ लेके आपन जय-जतरा प निकलेले।"

2- "कविता से मनुष्य के आत्मा के अंदर के टेढ़ापन दूर हो जाला।ऊ संस्कारित हो जाला।कविता अच्छाई आ बुराई में फर्क करे के पाठ पढ़ावेले।ऊ सच आ झूठ के हिगरावल जानेले ।ऊ समाज में फइलल अन्हार के सबसे पहिले चीन्ह लेबे ले।ऊ विवेक आ तर्क के जरिये अँजोर के ओर ले जाले।"

3-"कविता खालिस सोहर ना हऽ।ऊ मिरतू-राग भी हऽ।मर्सिया भी हऽ।कविता के बारे में इहो कहल जा सकेला कि ऊ दूधारी तलवार लेखाँ होले।"

कविता के बारे में कवि के एह नजरिया से ई बात त साफे हो जात बा कि चंद्रेश्वर जी अपना कवितन के जरिये समय आ समाज के सच्चाइयन उकेरे के हरसंभव कोशिश कइले बाड़न।साथही इहो बात ऊ सँकरले बाड़न कि कविता प्रेम आ प्रतिरोध दूनू के साथे लेके आगे बढ़ेले।ऊ कविता के जनम के बेरा गावल जायेवाला सोहर के साथे-साथे ओकरा के मरन-रागो मान के चलल बाड़न-दू धारी तलवार मतिन। कवि के ई समझदारियो वाजिब बा कि कविता के लगे अइसनका विवेक जरूर रहेला कि ऊ नीमन आ बाऊर के ठीक तरे पहचान-परख सके।कविता नीमन आ अच्छाई के पक्ष में बराबर ठाड़ रहेले जबकि कवनों तरे के विसंगति आ बाऊरपन के खिलाफ ओकर स्वर प्रतिकार के रहेला।चंद्रेश्वर जी के कविता में विचार पक्ष जेतना मजबूती के साथ उभरेला ओकरा में संवेदना के तरलता आ अनुभूतियन के मौलिकतो ओतने भरपूर रूप में रहेला।एही बात का ओर इशारा करत ऊ खुदो लिखले बाड़ें अपना आत्मकथ्य में -"कविता पढ़ि भा लिख के हम अपना भीतर तरी आ तरावट के अनुभव करीला।हमार ग्यान कबो सूखे ना ,ऊ संवेदना से जुड़ल रहेला।ई बात आज समकालीन कविता के कवि चंद्रेश्वर जी कहत बाड़ें त एह में कुछऊ अजूबा भा नयापन नइखे।मध्यकालीन भक्तिकाल के महाकवि तुलसीदासो जी के त अइसनके मान्यता रहे-"जौं बरषइ बरु बारि बिचारू।होहिं कवित मुकुतामनि चारू।" श्रेष्ठ विचारन के सजलता से कविता मुकुतामनि के चारुता आ सौन्दर्य गहि लेले।कहे में कवनों संकोच नइखे कि चंद्रेश्वर जी के कविता भाव आ विचार आउर सोच आ संवेदना-दूनू के पूरा संतुलन बना के चलल बिया।

[2]

भोजपुरी में चंद्रेश्वर जी के कविता संग्रह आवे के पहिले उनकर दू गो कथेतर गद्य के महत्वपूर्ण किताब आइल बाड़ी सँ- 'हमार गाँव '(2020)आ 'आपन आरा'(2023)।एह दूनू किताब के भोजपुरी साहित्य जगत में पूरा सम्मान मिलल बा इहे कारण बा कि पहिलकी के त दूसरका संस्करण प्रकाशक का निकाले के पड़ल बा।पहिलकी किताब हमहूँ बढ़िया तरे पढ़ले बानीं।बहुते रोचक आ गाँव-जवार के कथा , बोली-बात , आचार-व्यवहार, परम्परा-संस्कृति, कुरीति-कमजोरी, गीत-गवनई, प्रकृति से लगाव ,आपसी प्रेम आ मनमुटाव,प्रगति आ ठहराव-सबके फोटोग्राफिक डिस्क्रीप्शन के साथे -साथे ओजवा हो रहल बदलाव के सकारात्मक आ नुकसानदायी दूनू तरह के परिणामो के झलकावत लेखक अपना कृति में चलल बा।एह सुललित गद्य के भाषा में एतना प्रवाह आ व्यंजना बा कि ई पूरा कृति एके बइठकिये पढ़ जाये लायेक बिया।किताब में गाँव के प्रति अतीत-राग (Nostalgia)के भाव के साथे-साथे बहुत कुछ अइसनका बा जवना से जवना से वर्तमान भारतीय गाँवन के ऊ छवि उभरि के सामने आ जात बिया जवना से ई बात साफ हो जात बिया कि तमाम तरे के गड़बड़ियन आ चकरचाली के बावजूद भारतीय गाँव आजो आपन सुघरता आ सम्मोहन बरकरार राखे में कामयाब बाड़ें सँ। चंद्रेश्वर जी के 'हमार गाँव ' उनका कवितो में चित्रित भइल बा।एह गाँव में 'खेती -बारी' बा, 'अन्नदाता' बाड़ें,उनका पधोराई खातिर 'सतुआ' बाटे , 'माई रहे से माइये रहे' बाड़ी,'केवना डाढ़ी प कोइलरि' बइठल बाड़ी ,त कवनों दुआरी 'बबुआ के लोरी' गावल जा रहल बा।अपना एह ग्राम्यबोध के चंद्रेश्वर जी अपना एगो कविता में अभिव्यंजित करत कहत बाड़ें -

"तोहरा बतकही में आ जाला /कबो- कबो देस/दुअरा के धवरा बैल /बाबा के बड़का पितरिया लोटा/लहरात टीकासन भरि के सोटा/ई सब देखि -सुनि के /अचरज होत बा।"

[तोहरा कविता में]

गाँवन के चित्रित करे के दौरान कुछ खतरा होला जवना ओर इशारा करत डा.बलभद्र जी एह किताब के अपना

www.bhojpurisahityangan.com

भूमिका में लिखलें बाड़न- "लोक आ लोक संस्कृति पर बात करत अतीत के माया-मोह में लपेटाये के जादे जोखिम होला।" चंद्रेश्वर जी ई जोखिम उठवले बाड़ें बाकिर पूरा सावधानीपूर्वक। ऊ बात बनऊवल भा अझुरऊवल ले जादे उचित समझलें बाड़ें सही तस्वीर सामने खड़ा कर दिहल।ऊ किसान के 'अन्नदाता' भर बताइये के उनकरा के सिकहरा चढ़ा दिहल उचित नइखन मानत।ऊ साँच के परत -दर- परत उटकेर देबे के चाहत बाड़न।उनकर साफ कहनाम बा कि 'अन्नदाता' कहिके आ पलखत पावते मुड़ी उतार देबे वाली छली मानसिकता के समुझे के जरूरत बा। ना केवल समुझे के बलुक जमके एकर प्रतिरोध आ विरोध करे के जरूरत बा।कवि के शब्दन में ओकर खफाई खुल के सामने आइल बा-

1-"नेयाय आ हक माँगे खातिर/जब उतरबऽ लोगन/राजधानी के राजमारग पऽ/तऽ छछनावहूँ जानेलन/उन्हिका जिनिगी के एगुड़े /मकसद हऽ/रोआइ रोआइ मारल /पदा-पदा रोआवल / तोहरा अस लोगन के /ढेर बढ़ि जाला प्रतिरोध तऽ/देश के दरोही बतावेलन/जुझारू लोगन के।"

[अन्नदाता]

2-"अब किसान राजा ना/रंक के कतार में शामिल होई/जमीन से मिलल मुआवजा ओकरा/बेटा-बेटियन के शादी में खर्च होई/ऊ सरकारी इमदाद से ना /ओकरा खैरात पऽ जीही लोग/ बाकिर ऊहो आखिर कब तक?"

[खेती-बारी]

विकास के नाम पर फोरलेन के जाल ,औने-पौने भाव पर खेतीबारी लायेक जमीनो के बिस्कुट आ साइकिल कंपनियन खातिर हड़प वाली मानसिकता ई बतावत बिया कि 'अन्नदाता ' साथे कइसनका परपंच हो रहल बा।महँगा खाद-बीज आ मजदूरन के घरे भ्रष्टाचार सिखावत ओह लोग में खैराती बाँट के कामचोर बना दीहल-ई एगो अइसनका समस्या बा जवना चलते किसान आज एकदम लाचारी के हालत में आ गइल बा।चंद्रेश्वर जी के कविता एह सगरी सच्चाइयन के उघार के सोझा रख देत बिया।ऊ किसान भा मजदूर के जाँगरचोर बना के उनकरा आगे खेयाली पोलाव परोसे के गलत मानत बाड़ें आ ओह लोग के वास्तविक समस्यन, यथा -फसलन खातिर कम दाम पर खाद-बीया -पटवन आदि के सुविधा मुहैया करावे आ वाजिब बाजार मूल्य उपलब्ध करावे आदि -के निबटारा चाहत बाड़ें। चंद्रेश्वर जी के कविता किसानी जीवन के हलकानि,ओकर पीड़ा आ संघर्ष के बहुत नजदीक से निरेखत भोजपुरी समकालीन कविता के ताकतवर बनावे के भरपूर कोशिश करत बिया।

[3]

चंद्रेश्वर जी लगातार हिन्दी कविता लिखत आ रहल बानीं।अन्य भारतीय भाषा आ विश्व साहित्य के प्रगतियो से उहाँ के सबका बनल रहल बा।इहे कारण बा कि उहाँ के भोजपुरी कवितो के कथ्य में विषय के विविधता बनल रहल बा।आम तौर पर भोजपुरी कविता जवना के बारे में ई धारणा रहल बा कि उहाँ खाली गीते-गजल भा छंदबद्धे रचना सराहना बिटोर सकेली सँ ,भा जवना कवितन में लयकारी कम -से-कम जरूर रही ताकि ऊ गावल-रेघावल जा सके ओजवे 'बाकिर '(शारदानंद प्रसाद),'ई हरनाकुस मन '(पांडेय सुरेन्द्र), 'जोत कुहासा के '(प्रो.ब्रजकिशोर), 'टटात परछाईं' (विश्वरंजन),'लेके ई लुकार हाथन में(डा.स्वर्णकिरण), 'एगो मेहरारू'(महेन्द्र गोस्वामी), 'कुछ खास किसिम के आवाज '(शशिभूषण लाल) , 'औरत जात' (मलयार्जुन)आदि दर्जनन महत्वपूर्ण कविता संग्रहनो के भोजपुरी के समकालीन कविता के समृद्ध करे में प्रमुख योगदान रहल बा। तैयब हुसैन पीड़ित, भगवती प्रसाद द्विवेदी,ब्रजभूषण मिश्र, प्रकाश उदय, बलभद्र, जितेन्द्र कुमार, चंद्रदेव यादव, सदानंद शाही ,लक्ष्मीकांत मुकुल आदि कवियन के परम्परा में चंद्रेश्वर जी के भोजपुरी समकालीन कविता में प्रवेश एगो अइसन परिघटना मानल जाई जेकरा जरिये हिन्दी के आउरो बहुते कवि भोजपुरी में अपना कवितन के संग्रह सौंपे के सोचिहें।

हिन्दी समकालीन कविता में देशज बिम्बन-प्रतीकन के प्रयोग,लोक-संस्कृति , लोकाचार आ लोककथा आदि के छटा आ भाव-भंगिमा के उपयोग के जवन प्रवृति हिन्दी में नागार्जुन, त्रिलोचन, अरुणकमल, अष्टभुजा शुक्ल आदि से लेके आज रूपम मिश्र आ प्रभात जी तक ले देखे के मिलत बा ऊ सब त भोजपुरिया कवियन खातिर अपना घर के थाती रहल बा।अपना भूमिका में चंद्रेश्वर जी के 'गोहार ' के कवितन पर अपन बात राखत डा.बलभद्र जी कुछ बहुत सार्थक चर्चा कइले बाड़न।ऊ कहत बाड़ें-

"सत्ता से सवाल आ असहमति चंद्रेश्वर के कविता के एगो आपन स्वर बा।आज के अस्सी प्रतिशत से अधिक भोजपुरी साहित्य सत्ता से इयारी के साहित्य ह।भोजपुरी के मंच पर सत्ता के दखल बा आ कवि-लेखक लोग सत्ता के चाकर।चंद्रेश्वर के लेखन एह से अलग बा।"

भोजपुरी साहित्य के लेके बलभद्र जी के ई टिप्पणी बहुत गंभीर बा। बलभद्र जी अपना टिप्पणी में एक ओर अगर अधिकतर भोजपुरी साहित्य के 'सत्ता से इयारी के साहित्य' कह रहल बानीं त दोसरा ओर भोजपुरी मंच पर सत्ता के 'दखल के गैरवाजिब बता रहल बानीं । भोजपुरी मंचन पर सत्ता के दखल खूब बढ़ल बा एमें कवनों दू राय नइखे बाकिर आज के भोजपुरी साहित्य के अस्सी प्रतिशत के सत्ता से इयारी के साहित्य बता दिहल हमरा तनिका आक्रोश आ नाराजगी लेखाँ जादे लागत बा।हमनीं आज के सैकड़न ओह जनधर्मी कवियन के देशज संवेदना के ,सत्ता के विरुद्ध उनका संघर्ष के नइखीं नकार सकत जवन भोजपुरी कविता के आज मूल स्वर बन सके में कामयाब दिख रहल बा।अपना एगो हिन्दी आलेख

www.bhojpurisahityangan.com

'समकालीन भोजपुरी कविता' में अइसनका अनेक कवियन के रचनन के जरिए भोजपुरी कविता में हाजिर मौजूदा समय आ समाज के बीच उपजल तल्खी आ ओकरा कारनन के पहचान करत सत्ता के खिलाफ प्रतिरोध के रेखांकित करे के प्रयास कइले बानीं। हमरा उमेद बा बलभद्र जी ई आलेख जरूर पढ़ले होखबि आ भोजपुरी साहित्य खास करि के भोजपुरी कविता से उहाँ के शिकायत कमल होई। चंद्रेश्वर जी सत्ता से सवाल करे वाला आज इकलौता भोजपुरी कवि नइखन।जितेन्द्र कुमार, प्रमोद कुमार तिवारी,प्रकाश उदय,खुद बलभद्र, कुमार विरल, सुरेश काँटक, गुलरेज शहजाद, हरेन्द्र हिमकर, मिथिलेश गहमरी, तंग इनायतपुरी ,चंद्रदेव यादव, नुरैन अंसारी आदि दर्जनन कवियन के जमात उनका साथे ठाड़ बा।एह कवियन के कविता पर नजर डालल जा सकत बा जिनका कविता के मूल स्वर सत्ता से असहमति आ शोषण के प्रतिरोध के रहल बा। रहल बात सत्ता के मंचन पर दखल के त हमरा कबो-कबो बुझाला कि भोजपुरी में शुरुए से पाग-पगड़ी,चादर-माला के जवन लकम लाग गइल ऊ आज महामारी के रूप ले लेले बा।अब त मानपत्र मढ़वा के खूबसूरत मोमेंटो के साथे दिआये लागल बा।सिकहरा चढ़ाके गैरसाहित्यिक संस्कार वाला साहित्यकारन के भोजपुरी मठाधीश लोग अपना विरोधी के खिलाफ लोहकारे आ गारागारी में भिड़ा देत बा। ई मठाधीश लोग के आँवक में भोजपुरी मंच अझुरा के रह गइल बा।जाति ,धरम, क्षेत्र के आधार पर गुटबंदी से भोजपुरियो साहित्य आज अछूता नइखे रह गइल। सत्ता के ओर झुकाव के एगो आउर कारन ऊ 'आठवीं सूची' वाला कंगनवो हो गइल बा जवना के लालच में भोजपुरिहा अब ठगाते ना हताइलो शुरु हो गइल बा। हमरा समझ से ई नवरतनी कंगना मिलबो करी त ओह लेखाँ जइसे हारल-थाकल मन के कवनों जीवन-अनुदान मिलल होखे,तड़कल खेतन के कवनों घटा के दूई बूँद फुहार मिलल होखे,सेराइल सपनन के झूठा दिलासा मिलल होखे।बलभद्र जी बिलकुल ठीक कहले बानीं मंचन पर सत्ता के दखल वाली बात। सत्ता के गोदी में बइठके ओकर मुखालफत ना हो सकी।आरती उतारत ढेर दिन हो गइल। गिरोहबंदी आ आपन छोट-छोट मन-मुटाव छाड़ि के भोजपुरिया एकवट के जब आपन बिगुल बजा दीहें त सत्ता के कान खड़ा होखे लागी। जबले आपन नोकसान ना बुझाय ,सत्ता ना चेतेलो।तथ्य आ तर्क सब भोजपुरी के हक में बा, बस घाती बाड़ें अपने कुछ पोंछ डोलावन महाप्रभु सभे, जे जिनिगी के आखिरी दिनो में सभ चढ़ावन अपने माथे सहोटे खातिर आतुर हो उठल बाड़ें। सत्ता के विरोध के साथे-साथे भोजपुरी का अपना भीतरी भस्मासुरो लोग से जान बचावे के बा।

[4]

समकालीन भोजपुरी कविता के कवियन के अनेक अइसन कविता मिल जइहें सँ जवनन में कवि कविता भा कवि के लेके कुछ बात कहले होई भा अपना काव्य-दृष्टि के स्पष्ट कइले होई। 'गोहार ' के कवियो अपना कुछ कवितन में कविता के लेके आपन कुछ बात रखले बाड़न जवनन के जरिये उनकरा काव्य-दृष्टि के परिचय मिलत बा।कहल जाला कि कविता आ कवि-व्यक्तित्व के फरिया-फरिया के देखल कठिन होला।कविता में कवि के व्यक्तित्व के साफ झलक देखे के मिलेला।काव्य-शैलियो पर कवि-व्यक्तित्व के भरपूर प्रभाव पड़ेला।अपना कविता संग्रह 'परिमल ' के 'भूमिका' में निराला जी के कहनाम रहे कि मनुष्य के मुक्ति के तरे कवितो के मुक्ति के होले।मनुष्य के मुक्ति कर्म के बंधन से अलग हो गइल हटे आ कविता के मुक्ति के मायने छंदन आ काव्य- रुढ़ियन के बंधन से कविता के स्वतंत्र हो गइल मानल जाला।भोजपुरी के समकालीन कविता के अधिकतर कवियन मतिन चंद्रेश्वर जी के काव्य-शैलियो पर उनका निर्बन्ध,सर्वतंत्र-स्वतंत्र व्यक्तित्व के भरपूर प्रभाव पड़ल बा।फ्रांसिसी चिंतक आ विचारक बफन के मान्यता बा कि -"Style is the man him-self. " माने कि जीवन -शैली मनुष्य के व्यक्तित्व के सीधे तौर पर अनुगामिनी होले ।मनुष्य एकरे जरिए अपना के अभिव्यक्त करेला।चंद्रेश्वर जी के कविता आ उनकरा काव्य- शैली पर उनकरा स्वतंत्रता आ समानता- कामी कवि -व्यक्तित्व के स्पष्ट छाप देखे के मिलत बा।अपना एगो कविता में ऊ कहत बाड़न-

" ई एगो अइसन समय रहे/जेवना में कई -कई गो कवि गन / थोरिके असुविधा में पड़ते /चुपाई मार जात रहे/भा पूँछ हिलावे -डोलावे लागत रहे/जादा होखे त मोका पर बोलहीं के बेर/पगुराये लागत रहे /भोरहरिए से साँझ ले ।"

(हरि गुन)

-कविता में पगुरइनी साँचो बड़ बाऊर बेमारी हऽ।

समकालीन कवि पर समय के अइसनका दबाव बा कि ऊ कविता में 'पगुरइनीं' देखावत अपना कवि- धरम के ठीक से नइखे निबाह सकत। चंद्रेश्वर जी एक जगे एह 'पगुरइनीं ' आ 'ठकुरसोहाती ' बात बोले के हेय मानत खुल के कह रहल बाड़न -

"झूठे आवत बा आँकड़ा/टीवी न्यूज चैनलन प/अखबारो से सच अब/दूर परा गइल/कवितो के हाल बेहाल बा बहुत/मैराथन में पाँव ओकर/साचहूँ लड़खड़ा गइल। /गोली चलल बहुते एनकाउंटर में /माफिया के मकान प/देखते देखत केस रेप के / बढ़िया गइल /गजबे ई आइल बा बखत /बखत प आपन तनिके में /चीन्हा गइल।"

(गजबे ई आइल बा बखत)

-एह रचना में कवि एकसाथे कई-कई बातन पर से भरम आ छल के छिलका नोचत -हटावत ई साफ कह रहल बा कि विभिन्न

www.bhojpurisahityangan.com

संचार-माध्यमन के जरिए समाचार आ सूचनन के जवन ढेह लागल दिख रहल बा ओमें कवनों सच्चाई नइखोऊ सब झूठ के पोलिंदा बाड़े सँ। ओइसहीं धकाधक बिना गंभीर सोच आ संवेदना के जवन कविता लिखा रहल बाड़ी सँ आ कवि सब मैराथन में शामिल बाड़े ओकरा चलते कवितो के हाल बेहाल होत जा रहल बा।भोजपुरी समकालीन कवितो में जवन एकतरहीपन देखे के मिल रहल बा ओकर कारण छंदमुक्ति के नाजाइज फायदा उठावत अँवाट-बँवाट कुछऊ परोस के कइसहूँ लोकप्रसिद्ध हो जाये के विकल मनोकामना बा। कवि के एह 'मैराथन दौड़' के एगो कारण आज के समय में हो रहल लगातार सूचना के विष्फोटो हो सकत बा।सूचना के ई विस्फोट लगातार एतना तेजी से हो रहल बा कि ओकर सम्यक आ सघन प्रभाव कवि-मन पर पड़ल कठिन हो जात बा। विश्व के कवनों कोना में घटे वाली घटनन के जानकारी पल भर में सभका मिल जा रहल बा।एक जगह के कवनों घटना पर मनई जब ले कुछ गंभीरता से सोचो-समझो ताले ऊहू ले जादे हैरान करे वाली कवनों घटना दुआरे हाजिर हो जात बा। सूचना के एह रेलारेलियो के ई नतीजा बा कि कवि गंभीर सोच आ विचार के साथे अपना रचनन में उपस्थित नइखे हो पावत।चंद्रेश्वर जी आज के दौर के एह मजबूरी के बूझत-समुझत अपना रचनन में पर्याप्त विषय-वैविध्य ले आवे के प्रयास में बाड़न।ऊ अपना कविता के मामूली से मामूली बातन आ चीजन से जोड़ के चलल बाड़ें आ अपना अड़ोस-पड़ोस के लोग -बाग,देस-दुनिया ,पशु-पक्षी,बेवहार, बेवस्था -सभके निरखत-परखत चलल बाड़ें।उनकर कहनाम बा-

" तोहार कविता में आवत बा /बार-बार देस/तोहरा चिंता में समाइल बा देस/ई पढ़ि-सुनि के अचरज होत बा ××××× तोहार बतकही में आ जाला /कबो-कबो देस/दुआर के धवरा बएल/बाबा के बड़का पितरिया लोटा /लहरात टीकासन भरि के सोटा /ई सब देखि-सुनि के अचरज होत बा।"(तोहार कविता में)

- एजवा "बाबा के पितरिया थरिया " आ "दुआर के धवरा बएल" जइसनका प्रतीक लोक जीवन में सभ्यता- विमर्श के अइसनका सवाल खड़ा कर रहल बाड़े सँ जवना में परम्परागत जीवन -मूल्यन आ विरासत के संगिरहा के एगो बहुते सार्थक बहस भोजपुरी कविता में छिड़त दिख रहल बा।

जवना दौर में केहू आपनो तनिके में आपन स्वारथ लेके प्रकट हो जात बा आ जुरते लखा जात बा ओह दौर में निराशा के धुँधुलका छाँटे खातिर कवि के सजगता काबिलेगौर बा ।ओकर गोहार बा -

"कवि साँचो/शब्दन के संगत से /अब बनि जा पहरुआ/हो जा सावधान/एह समय के बहुते/ जरूरत बा/तोहार..।"

(शिकायत पेटी)

कवि अपना एह गोहार के पहिले अपना एही रचना में एक जगहा सावधान करत कहले बा -"चूमत चाहे लऽ हाथ ऊहे / जवन सनाइल बा खून से /तोहार शब्द डूबल रहत बा /एहघरी चमचई के /गाढ़ चासनी में।"

(शिकायत पेटी)

'शिकायत पेटी' कविता के अंत जवना तरे गोहार के रूप में भइल बा- ऊ आज के कविता के शिल्प आ कहन के तौर -तरीका के दिसाँई तनिका निराश करे वाला जरूर बा बाकिर कवि के मंगल कामना के ईमानदारी पर अचिको शंका नइखे कइल जा सकत। कविता के शुरुआती पंक्ति बाड़ी सँ- "कवि ,तोहार दिमाग/खलिसा शिकायत पेटी तऽ / ना हो सके।" स्पष्ट बा कि कविता के नकारात्मक चिंतन आ वर्णन से भरि के कवि खाली इहे नइखे बतावे के चाहत कि एह दुनिया में जवन कुछ बा -सब बाऊरे बा। ई सही बा कि हमनीं के जनतंत्रो आज जाति ,धरम,संप्रदाय, नसल आदि में बुरा तरे बझल-फँसल दिख रहल बा। नेता अपना हिसाब से एह जनतंत्र के परिभाषा गढ़त जा रहल बाड़ें। समाज के बाँट के राखल आज अपना सत्ता के बरकरार राखे खातिर जरूरी समझल जाये लागल बा।हैरत वाली बात बा कि सत्ता के मायाजाल के समझला के बावजूदो आम जन ओकरा से टकराये खातिर तइयार नइखे। बाकिर कविता लगातार एह कोशिश में बिया कि प्रतिरोध आ संघर्ष के ऊ तेवर ओकर बनल रहे ताकि जेतने आ जवन कुछ नीमन आ जीवन के सुघर आ सुन्दर बनावे खातिर बाचल रह गइल बा ओकरा के कम- से- कम जरूर बचा लिआव।बाचल नीक के बचा लेबे के कोशिश में चंद्रेश्वर के कवितो खूब तत्पर दिखत बिया।

(5)

चंद्रेश्वर जी के कविता के कैनवास बहुत लमहर बा।एमें गाँव-जिरात, पशु-पक्षी, अन्न-पिसान, खेती-बारी, किसान- मजदूर, सामाजिक कुपरंपरा, भ्रष्टाचार, विकास के नाम पर जमीन-हड़प, दारू के नशा में बिलात आ भटकत समाज,शहरी जीवन के दिखावा-आडम्बर, बाजारवाद आ कारपोरेटी कल्चर के चलते फइल रहल भौतिकतावादी संस्कृति,धार्मिक सहिष्णुता आ सामाजिक सद्भावना के तहस-नहस करेवाली ताकतन के लगातार मिल रहल समर्थन आदि एमें मजिगर ढंग से चित्रित भइल बा।बाकिर एह कविता-विरोधी समयो में जीवन में रचल -बसल कुछ राग ,कुछ आग ,कुछ मस्ती ,कुछ संवेदना,कुछ संघर्ष आ कुछ स्पंदनो के चंद्रेश्वर जी अपना कविता में बखूबी उतरे आ जगह बनावे देले बाड़ें।

एह संग्रह के शीर्षक- कविता 'गोहार ' एह संग्रह के सायिद सबसे लमहर कविता बिया।कवि एह दौर के सगरी

www.bhojpurisahityangan.com

विसंगतियन आ विडम्बना के झलकावत ई स्पष्ट करे के चाहत बा कि थोरिके भरोसा आ उम्मीद अभियो कविते के प्रति बाँचल बा काहे कि ई प्रतिरोध के स्वर बनला के साथे-साथ जीवन जीये के सलीके सिखावत लउक रहल बिया।एह कविता के कुछ पंक्ति विचारे जोग बाड़ी सँ -

"ऊ एगो कायर समय रहे/जेवना घरी /केवनो गुंडा के गुंडा कहे से/ बचत रहे / शरीफ लोग/××× झूठ के डंका बाजत रहे /देश - दुनिया में ××× दागदार होखे से /ना डरत रहे केहू /अब ईहे सब तऽ/अलंकरन बाँचल रहे /सभ्य कहाये वाला /लोगन खातिर/ नयकी सभ्यता में।"

(गोहार)

-दागदार हो जाये के भय जहाँ ना रह गइल होखे,आदिमिये आदिमी के काट खाये खातिर बेताब हो गइल होखे,जिनगी में इयारी ना खाली बैर -भावने के बोलबाला बन गइल होखे,कायर समय में गुंडा के गुंडा कहे में लोग कतरात होखे ,विचारवाने के जहाँ चऊपट-चपाट मान लेबे के मानसिकता मुनासिब बनल जात होखे, साँच सकुचाइल कोना में कतहूँ ठाढ़ होखे आ झूठे के चारू ओर डंका बाजत होखे- अइसनका अनैतिक आ अमानवीय समय में कविते पर सगरी आश टिकल बा-"भरोसा आ उम्मीद जइसन/सुन्नर शब्द बाँचल रहि गइल रहन सँ / खलिसा कवियन के कविते में।"

(गोहार)

-कविता के प्रति इहे भरोसा आ विश्वास कवि चंद्रेश्वर के एगो जिंदादिल आ दूरदर्शी कवि साबित कर रहल बा।कविता के प्रति कवि के ई भरोसा मनुष्यता के प्रति ओकरा अखंड आस्था के परिचायक बा।ऊ मनुष्य मनुष्य के बीच हर रिश्ता -नाता के जगवले-जोगवले रहे के चाहत बा।ऊ माई,बाप,भाई ,मामा सभके संबोधित आपन नन्हबीतनी छोट-छोट बाकिर सुबुक-सुबुक कविता लिखले बा जवनन में संवेदना के धार देखे लायेक बा-

" ए माई ! दे किछु खाई"/"का दीं, लऽ ना खा हमार कपार।"

(ए माई)

बस दू लाइन के एह कविता के पढ़िके माई के स्नेह-भरल खीझ तऽ प्रकट होइये जात बा साथही ई कपार खाये वाला मुहावरा आ जुमलो साकार हो जात बा जवन झालमूढ़ी खाये के दौरान कवनों महामानव ओह मूढ़ीवाला के संबोधित करत कहत बाड़ें। एजवा कपार खाये वाला काम ना ऊ मतारिये करत बिया ना ऊ मूढ़िये वाला करत बा।अचरज ई होत बा कि दिनरात बकबक करि के जे सभकर माथा खा रहल बा ,चाट रहल बा, ऊहे कहत बा कि "कपार खाये के थोड़े माँगत बानी!"

'बाप रे बाप','ए भाई ', 'ए मामा ', ' ए हो ', 'दोबरी दुख' , 'जीए के ढब ना आइल ' आदि अइसन कविता बाड़ी सँ जवन अपना लघुता में काफी मार्मिक आ मारको बने में सफल हो गइल बाड़ी सँ।चंद्रेश्वर जी के एगो संवादधरमी रचना बिया -'ए मामा'। छौ पाँति के ई कविता अपना सहजता आ अभिधात्मकते में अइसन एगो 'कम्प्लीट कविता' बिया जवना से गृहस्थ जीवन के जिम्मेवारी भरल बंधन के सौंदर्य मुखरित हो गइल बा-

"ए मामा!"/"का हो भगिना गामा ! " /काहे सूतल बाड़ऽ घामा ?" /"बड़बड़ो मत तोरो बुझाई/जब पहिनेबे बियाह के / जोड़ा जामा।"

(ए मामा)

-एह कविता में भोजपुरी अंचल में बियाह के लेके जवन सोच देखे-सुने के मिलेला ,ओह से अलगा कवि के विचार नइखे। बिगड़ैल आ मनबढ़ू लइका लोग के 'नाथे' खातिर बियाह एगो कारगर तरीका भोजपुरी अंचल में मानल जाला जवना के जरिये लड़िका लोग सीधे बिना बहकले 'हराई' में बहे लागेलें।

चंद्रेश्वर जी के एह कवितन पर कविता के कुछ गंभीर आस्वादक सभे चुटकुलाबाजी के आरोप लगा सकत बा बाकिर हमरा तऽ एकनीं के खिलंदड़ापने में एगो खास तरे के जीवन-रस से भरल अनुभूतियन के जथारथ से जुड़ल अभिव्यक्ति साफ-साफ नजर आ रहल बिया ।

चंद्रेश्वर जी के कविता में गाँव-जवार,खेत-खरिहान , खेती-बारी आ किसानी जीवन के समस्यन के वास्तविक पहचान करि के ओह कारननो के बतावल गइल बा जवनन के चलते एकनीं पर संकट के बदरी घिरल जा रहल बा।कवि किसान के लगातार मटियामेट होत जा रहल जिनिगी के लेके बहुत चिंतित बा -

"अब किसान राजा ना/ रंक के कतार में शामिल होई /जमीन से मिलल मुआवजा ओकरा /बेटा-बेटियन के शादी में खर्च होई/ऊ सरकारी इमदाद से ना /ओकरा खैरात पऽ जीही लोग /बाकिर ऊहो आखिर कब तक?" " ऊहो आखिर कबतक के सवाल " - अइसन बा जवन एक ओरि स्थितियन के गंभीरता झलकावत बा तऽ दूसर ओरि ओह चुनौतियन से जूझे खातिर आगाहो करत बा। सत्ता के पूंजीवादियन से गँठजोर किसानी जीवन में हलकानि ले आ देलेबा।बाजारवाद चसका-चसका अलगे जान मार रहल बा-

"भइया हो काढऽ काढ़ऽ काढ़ऽ करजा/मनावऽ रोज दिवाली/ जरावऽ दियरी घीव के /अब नइखे जरूरत कि बचा के /पाई -पाई जमा करऽ बैंक में।"(ठाढ़ बा माथ के बल)दिखावा आ आडम्बर के पीछे संगिरहा के मानसिकता पर 'बाजारवाद' आपन आसन जमा लेले बा।

किसान के राजनीति आ पूंजीवाद के इयारी के कुफल एतना ले भोगे के पड़त बा कि कवि का कहे के पड़ल बा -

"उन्हुका जिनिगी के एगुड़े/मकसद हऽ/रोआइ -रोआइ मारल / पदा-पदा रोआवल/तोहरा अस लोगन के/ढेर बढ़ि जाला प्रतिरोध तऽ /देशै के दरोही बतावेलन/जुझारू लोगन के।"(अन्नदाता)

दिन-रात देह ठेठवला के बावजूदो किसान-मजदूर के ना माली हालत सुधर पावत बा ना सामाजिके न्याय मिल पावत बा।ई सब

www.bhojpurisahityangan.com

देखि के कवि कहीं -कहीं घोर निराशा में डूब जात बा -
"एह दुनिया में काम बा/ जबूनके के /नीमनका के ना ××××आगे के छीनल थरिया/लूट लिहल गरीब के /छज्जा के /खपड़ो आ नरिया ऊ लोग से ना होखे /हमरा अब ई बुझाला कि /सच्चाई प ना /झूठे के थूनी प/टिकल बिया /ई सोगहग दुनिया।"(झूठ के थूनी प टिकल दुनिया)
चंद्रेश्वर जी के कविता के एह नकारात्मकतो में एगो सकारात्मक ध्वनि उभर के सामने आ रहल बा।बुझात बा जइसे कवनों रोगी आजिज आके आपन पाकल घाव के जुरते चिरवा लेबे खातिर तइयार हो गइल होखे।
(6)
अपना पहिलके भोजपुरी कविता संग्रह के जरिए चंद्रेश्वर जी भोजपुरी कविता के ओह दिशा के ओरि मोड़े के कोशिश कइले बाड़ें जवना चलते ऊ वैश्विक समस्यन से अपना आँखिन के चार करे लागत बिया।पूरा विश्व आज तीसरका विश्वयुद्ध के मुहाना पर ढाढ़ बा।शासकन के अहंकार से भरल अगंभीर ढुरमुल आचरण से ई खतरा आउरो खतरनाक आ गंभीर बनल जा रहल बा।कवि एह खतरा से पूरा तरे वाकिफ बा।ओकर चिन्ता 'जइसे यूक्रेन अकेल बा ','दहशतगर्द ' आ "बुद्ध बनल कठिन ' -जइसन कवितन में खुलि के सामने आइल बा- जहवाँ युद्ध से मानवता के खतरा के दिसाँई सावधान करत बुद्ध के शांति आ अहिंसा के शिक्षा के विश्व मानवता खातिर संजीवनी बतावल गइल बा-
"जुद्ध कइल आसान बा /बुद्ध बनल कठिन। /मरल मारल आसान बा जियल जिनगी कठिन। /××××× ए घरी चुपाइल आसान बा /बोलल त बहुते कठिन ।"
(बुद्ध बनल कठिन)
- एजवा चंद्रेश्वर जी जवना 'चुप्पी' के बात कर रहल बाड़न ऊ तथाकथित भद्रजन लोग के अपना सुविधा-सुख-शांति में खलल ना पड़े देबे के लालसा के परिणाम बा।ऊ लोग कुछ बोल के कवनों झंझट मोल लेबे के नइखे चाहत। एही वर्ग में भारतीय बुद्धिजीवियो शामिल बाड़ें। दोसरका ओरि , विश्व स्तर पर विभिन्न देश के रहनुमाई करेवाला लोग के बकबकइनीं रोगो से पूरा दुनिया के कान अब पाक गइल बा।
एह संग्रह में चंद्रेश्वर जी के एगो कविता बिया जवना के शीर्षक बा - 'बबुआ के लोरी'।ई लोरी खाली लोरी भर नइखे।बबुआ के हर तरे के बात बतावत दुनियादारी सिखावे वाली रचना बिया।एकर पाँतियन के देखल जा सकत बा -
"एकदम हलुवा मत बनऽ × ××/नरम चारा /मत बनऽ/
कि दलदल में ठाढ़/कंगन वाला बूढ़ा शेर के /तराना कि फसाना/ मत सुनऽ।"
बबुआ के एतना बतावत-समुझावत कवि आउरो तनिका गज्झिन बात के ओरि इशारा कर देत बा -
"नदियने में नइखे भरल /खाली गाद/इंसानी दिलो में/भर गइल बा /गादे-गाद।" कवि आउरो बहुत कुछ सीख देत बा एह कवितामें बबुआ के, जवना बूते शहर गइला के बादो ऊ ठीक से आपन जिनगी गुजार सकस।इंसानी दिल में बइठल गादो (काल के प्रवाह में बटोराइल भावनात्मक गंदगी के ढेर) के सफाई एक दिन के काम नइखे। धीरे-धीरे मनई एह से मुक्ति पा सकत बा।लोरी के जरिए दिहल सीख बबुआ लोग का साथे-साथे आम मनइयो खातिर ओतने प्रेरणादायी बा।

एह संग्रह के एगो निठाह राजनीतिक कविता 'मोरे राजा ' सामयिक व्यंग्य कविता के जबरदस्त नमूना बिया।एकरा पाँतिन के देखल जा सकत बा -
"एगो घेरलस महामारी/ ई लाचार दुनिया सारी /ऊपर से जनि करऽ /बमबारी मोरे राजा हो/दिमाग फाटेला ××× अबकी फाटल ढोल ना मँढ़ाई/लोगवा जानि गइल बा सच्चाई/मोरे राजा हो कि पह फाटेला/पूरब के आसमान से /अँजोर लउकेला/चरम प बा मँहगाई/चरमे प रोजगार के छीनाई / देशवा डूबल जात बा /साँचो डूबल जात बा/रसातल में/हे हो मोरे राजा जी !"

चंद्रेश्वर जी के भोजपुरी कवितन में कोरोनाकाल के मानवीय तबाही,व्यथा आ संघर्षो के पुरहर स्वर मिलल बा।ऊ प्रेम ,दाम्पत्य, जीवन-मृत्यु आदि पर भी भोजपुरी में बहुते मार्मिक रचना कइले बाड़ें।एजवा अनुभूतियन के भावनात्मक आ वैचारिक आग्रह के बीच संतुलन बइठावे के भरपूर प्रयास भइल बा-
"प्यार हमरा खातिर /गुलामी ना रहे /आउर जरूरत से जादे आजादियो ना रहे ×××× हर मउसम के कइनीं जा मुकाबला /साथे लड़नी जा /साथे हँसनी -रोअनी जा /हर मोरचन पर।"

(पियार)
-ऊपर के कविता में पियार के बारे में बतावत कवि जवना संतुलन के कायम रखे के कोशिश कइले बा ओही तरे के वैचारिकता ओकरा 'कतो एगो खिलल फूल' शीर्षक कवितो में देखे के मिलत बा।नारी -विमर्श के लेके भोजपुरियो में कइगो बहुचर्चित कविता- संग्रह आइल बाड़े सँ जवना के केन्द्र में नारी-जीवन बा। एजवा भोजपुरी में नारी-विमर्श के लिहाजन समकालीन भोजपेरी कविता के पोढ़पन के झलकावे वाली कृति - 'एगो मेहरारू'(महेन्द्र गोसाई) आ 'औरत जात'(मलयार्जुन) के उल्लेख कइल बहुत जरूरी बुझात बा।एह दूनू कविता- संग्रहन के कवितन में भोजपुरिहा क्षेत्र के नारी- जीवन के समस्या,पुरुष वर्चस्व वाला समाज से मुक्ति खातिर ओकर जारी संघर्ष आ धीरे -धीरे परिस्थितियन

www.bhojpurisahityangan.com

में आ रहल बदलाव के साफ तौर पर परखल-निरेखल जा सकत बा। चंद्रेश्वर जी के कविता में नारी -विमर्श के बात भोजपुरिहा समाज के हिसाब से बहुते स्वाभाविक रूप में आइल बा। ऊ जानत बाड़ें कि भोजपुरिहा समाज के नारी पुरुष से एगो सीमे तक आजादी चाहेली आ पुरुष के संघर्ष में डेग में डेग मिलावत चलेली।महिला आरक्षण आ आउरो केतना सरकारी योजना आ प्रयासनो के चलते नारियन में आर्थिक स्वावलंबन आइल बा आ ओह लोग के सामाजिक प्रतिष्ठो बढ़ल बा। चंद्रेश्वर जी भोजपुरिहा नारी -जीवन के दुविधाग्रस्त मानसिकता के उकेरत इहे बतावे के कोशिश कइले बाड़न कि भोजपुरिहा नारी दुविधो में अपना पति के साथ निभावे के भरपूर प्रयास करेली -

"जब से भइल बा तोहार संग /ना जिअते बानीं/ ना मुअते बानीं /ना हँसते बानीं /ना रोअते बानीं /ना तोहरा के छोड़ते बनत बा /ना तोहरा संग रहते बनत बा /तोहार किरिए /बियाहे के बाद जनलीं/कि का होला तिरिया- जनम !"(कतो एगो खिलल फूल)

"बियाहे के बाद जनलीं/ कि का होला तिरिया -जनम!"- एह बात में पूरा सच्चाई नइखे।साँच पूछीं तऽ आम भारतीय नारी आज जनमते विभेद, पीड़ा आ प्रताड़ना में जीये खातिर मजबूर हो जात बाड़ी। बियाह जिनिगी में एगो नया जतरा के शुरुआत जरूर होला औरत खातिर, बाकिर पुरुष प्रधान भोजपुरिहा समाज में मेहरारुन के दुरदसा के कहानी जनमते शुरु हो जाला। शिक्षा के प्रसार के साथे-साथे हालांकि रोजी-रोजगार आ घर के बहरी दुनिया में बढ़हन सामाजिक बदलाव देखे के मिल रहल बा तबो औरत के आजादी आ बराबरी के सपना पूरा होखे में अभी देरी बा।सामाजिक बराबरी के चाह में नारी वर्ग के उग्रता कहीं-कहीं नया ढंग के समस्यो पैदा कर रहल बा तबो एह बदलाव के स्वागत होखे के चाहीं,काहे कि जुगन से पीड़ित नारी समाज के स्थितियन में आ रहल बदलाव समाज के आउरो गतिशील बनावे में कवनों -ना -कवनों रूप में सहायके बा।

(7)

हम पहिलहीं कह चुकल बानीं कि चंद्रेश्वर जी के कविता के पाट बहुत फइलल बा। हर तरे के संवेदना आ भावधारा के रचनन के जरिये कवि अपना पहिलके संग्रह से भोजपुरी समकालीन कविता के समृद्ध करे के हर संभव प्रयास कइले बाड़न। चंद्रेश्वर जी भोजपुरी कविता में हाथ-आजमाइश के पहिले भोजपुरी कथेतर गद्य -लेखन में आपन कमाल दिखा चुकल बाड़न ।ओही से प्रेरित होके भोजपुरी कविता के दिसाँई उनकर जवन सृजनशीलता शुरू भइल बिया ओकर सराहना करत हम ईहो जोड़े के चाहब कि चंद्रेश्वर जी का भोजपुरी कविता लिखे के बेरा अपना सोच आ संवेदना के पूरा तरे भोजपुरिहा लोक समाज, लोक संस्कृति आउर लोक के आचरण आ बेवहार से जोड़ले रहे के चाहीं।अपना कविता 'सतुआ ', 'केवना डाढ़ प कोइलर ' आ 'झूठ के थूनी प टिकल दुनिया ' ,'अमरफल' आदि में कवि जहाँ लोक से अपना गहिर लगाव के परिचय देले बा ओजवा ओकर कविता भोजपुरिहा मन-मिजाज के जादे करीब बिया।हिन्दी में सोचल -समुझल अनुभूतियन आ भाव-विचारन के अभिव्यक्त करत बेरा अतिरिक्त सावधानी के जरूरत ओह हर कवियन खातिर बा जे हिन्दी आ भोजपुरी दूनू में समानान्तर रूप से सक्रिय बा।एजवा हम इहो रेखांकित करे के चाहब कि लोक से लगाव के साथे-साथ भोजपुरी कविता का बीच-बीच में शहरी जीवनो का ओरि आपन नजर दउड़ावत रहे के पड़ी । आज ई एगो सच्चाई बा कि गाँव आ शहर के दूरी अब काफी कम गइल बा । गाँव आ शहर एक दोसरा में घुसिया के आपन-आपन असर एक दोसरा पर खूब छोड़ले बा।बाकिर तबो हम कहबि कि लाख विकास के बादो अभी बहुत कुछ अइसनका बा जवना के चलते गाँव अभियो गाँव बा आ शहर शहर।

देश-दुनिया के गतिविधियन आ दोसर भारतीय भाषा में रचल जा रहल कवितन के देखत-पढ़त रहला से भोजपुरी कविता में विषयगत आ शिल्पगत आऊरी पोढ़पन आ ताजगिये आई-एमें दुई राय नइखे।बाकिर सही रही कि लोक के आलोक में भोजपुरी कविता इतर भारतीय भाषा में हो रहल प्रयोगन आ सोच-विचार के स्तर पर पावल जायेवाला खुलापन के अपनावत लगातार डेगारे बढ़त चले ।चंद्रेश्वर जी के कविता संग्रह 'गोहार' के एह दिशा में एगो महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखत हम उनकरा भोजपुरी कवि के खुशी के साथ स्वागत कर रहल बानीं।चंद्रेश्वर जी अपना एगो कविता 'अमरफल ' में कुछ एही तरे के विचार रखले बाड़न कि लोक के पीड़ा ,पुलक आ मरम से गँठजोर करिये के कवनों कवि श्रेष्ठ सिरिजना परोस सकत बा -

"दुनिया के बड़हन -बड़हन /कवियन के कविता में / समाइल बा जेवन जादू /ई एकरे त कमाल हऽ/चाहे भाव होखे भा भाषा /भा कहन के अंदाज /सबमें ईहे छवले रहेला /अमरफल के मिठास बनि के।" हमरा भरोसा बा- चंद्रेश्वर जी के आगे आवे वाली कवितन में भोजपुरी लोकजीवन के ई 'अमरफल' मिठास के साथे-साथे ओकरा धड़कन आ स्पंदनो के स्वर देत, हर तरे के सवाद आ सौन्दर्य से परिपूरन करत भोजपुरी कविता के घर-अँगना के गुलजार राखी।

❑❑

❍ फ्लैट नंबर–303,परमानन्द पैलेस
(दानापुर–801503(पटना),बिहार।

www.bhojpurisahityangan.com

जिनगी के फेंड़ पर असरा के पात

डॉ विष्णुदेव तिवारी

(शशि प्रेमदेव के गजलन पर कुछ बातचीत)

विजयदान देथा के एगो प्रसिद्ध कहानी ह 'आशा अमरधन'। एह में, दुगो छोटे-छोटे बच्चन आ उहनी के ऊपर उहनी के मयभा महतारी के द्वारा कइल गइल जुलुम के कहानी कहल गइल बा। जबले बच्चन के मन में आशा आ विश्वास बाँचल रहत बा, तबले उहनी के जानो बाँचल रहत बा। जइसहीं आशा खतम होत बा,निरछल हृदय बच्चन के जानो खतम हो जात बा। ई करुण कहानी बतावत बा कि असरे जिनगी के जान ह। भोजपुरी आ हिन्दी के, अपना नियर अपने कवि, शशि प्रेमदेव, अपना एगो शेर में ई बात एह तरी बतावत बाड़न–

फेंड़ झराई ना जिनगी के, जहिया ले
बा हरियर असरा के एगो पात 'शशी'

सब के जिनगी में सुरुज के ललाई आ चनरमा के लुनाई ना रहे। कतने लोग तऽ अन्हरिए में जनमेला आ अन्हरिए में मर-खप जाला। कबो- कबो तऽ ई अन्हार पुरखन-पुरनियन से सँसरत बाद के पीढ़ियन तक चलत चलल आवेला आ कइसनो जोत के कवनो झाँक तक ना मिले। बाकिर, जे प्रकाश के चाह में, असरा के किरिन ना छोड़े, जीवन से जूझेला-- उहे जीवन के मरम बूझेला आ अन्हारो के मस्ती में पीयत दोसरो खातिर एगो प्रेरन-जोत जला के विदा लेला। बकौल प्रेमदेव–

बनि के दीया जरे के आन्हीं में
भूत सिर पर सवार बा आजुओ

अन्हार, आन्हीं आ अनुभव के कोख एके ह– एकरा के आँचर में बान्ह के राखे के चाहीं।

000

साहित्य में अनुभव के महत्व तऽ बड़ले बा बाकिर अनुभवे मए चीजु ना होला। असली चीजु ह अस्तित्व-बोध। एह अपार संसार में दोसर लोग कहाँ बा आ का कर रहल बा से बेसी जरूरी ई जानल बा कि हम कहाँ बानीं आ का कर रहल बानीं? जबले रउआ अपना के नइखीं जानत तबले दोसरा के कइसे जान सकत बानीं? प्रेमदेव अपना एगो गजल में एह बात के बड़ा सहज ढँग से कहत बाड़े-

धीरे-धीरे आगे डेग बढ़ावे सीख रहल बानीं
अब हमहूँ जिनगी के थाह लगावे सीख रहल बानीं
हाथ बढ़ाके तरई तूरे के सपना कइसे देखीं
अबहीं तऽ माटी में फूल उगावे सीख रहल बानीं
केतनो तीत रहल होखे भा केतनो मीठ रहल होखे
हर बीतल घटना के हम बिसरावे सीख रहल बानीं
हम का बीनब रउआ के फाँसे खातिर जंजाल 'शशी'
हम तऽ अपने अझुराहट सझुरावे सीख रहल बानीं

सहजता शशि प्रेमदेव के काव्य के मुख्य गुण ह। हर आत्मबोधी कलमकार के ई मुख्य गुण होला। साहित्य के समझ से, सहजता आत्मबोध के कार्य ह। एकर कारण सजगता होले। अपना एगो आलेख 'बलिया जनपद के काव्य-परंपरा: भाषा के ठेठ-ठाट पर समय आ समाज' में डॉ अशोक द्विवेदी शशि प्रेमदेव के सधल आ सचेत रचनाशीलता के कवि कहले बाड़न। गजल कहे में सचेत होखे के मतलब ई भइल कि एहिजा बह् र, काफ़िया, रदीफ आदि के अनुशासन भंग मत होखे आ जवन कहाउ, ऊ माथे चढ़े, धूहा के टाटी बन के मत रह जाउ।

भोजपुरी में बढ़िया गजल लिखेवाला लोग ढेर नइखे। जे ढेर नइखे, ओमे एगो महत्वपूर्ण नाँव बा शशि प्रेमदेव के। प्रेमदेव महत्वपूर्ण एह से बाड़े कि उनका अपना स्थिति के बारे में कवनो अझुरहट नइखे। उनकर पढ़वइयो उनका के लेके कवनो भ्रम में ना रहसु, काहें से कि उनकर सृजन बेअरथ तुकबंदी ना, जिनगी आ ओकरा जद्दोजहद से निकलल जथारथ ह-

साँच के कइसे छिपावल जा रहल बा, देखि लऽ
लाश के पानी चढ़ावल जा रहल बा, देखि लऽ
नीम, पीपर, बऽर के जबरन बताके बुर्जुआ
रेंड़ के माला पेन्हावल जा रहल बा, देखि लऽ

शोषक-शोषित वाला गर्-हल विचारधारा मद्धिम धार से गँवे-गँवे साँच के गर रेतेले। एकरा सुंदरता, श्रेष्ठता आ सामरस्य से घिरिना के हद तक चिढ़ ह। ऊ जहाँ चाहेले, जइसे चाहेले, जेकरा के चाहेले ओकरा के शोषित साबित कऽके ओकरा के सिरमौर घोषित कर देले आ जेकरा के चाहेले, जइसे चाहेले शोषक सिद्ध करके लतमरुआ बना घालेले। सबसे पहिले, विचारधारा लोगन के निरछल मन पर आपन अधिकार जमावेले फेर विद्या, शिक्षा, संस्कार आ संस्कृति के सुतंत्र के अपना गिरफ्त में जकड़ेले। आगे, छोटहन समाज से सरकत सत्ता आ शासन तंत्र पर आपन पकड़ एह तरी मजबूत करेले कि एकरा खिलाफ खाड़ होखे के हियाव केहू ना कर पावे। अंत में ऊ अपना गिरोह के कपारे पगरी बान्ह के हर ओह भाव, विचार आ तथ्य के होलरी जरावे शुरू कऽ देले जे कबो कवनो सभ्य समाज के मूल उत्स रहल बाड़े।

www.bhojpurisahityangan.com

विचारधारा दाम आ काम के खेत में पनकल ऊ जहरफेंड़ ह, जेकर फर खाते लोग पगला जाला आ संसार सुधारे के ठीका ले लेला। ई सुधार सेलेक्टिव होला।

विचारधारा के शत्रु हर ऊ आदमी, समाज आ ओकर दर्शन होला, जे अपना तपस्या आ अध्ययन, धीरज आ बल-बउसाव, लगन आ तेजस्विता आ परंपरा से प्राप्त मानवीयता के कारन दुर्दिनो में चमकत रहल बा -

खूब गतरे-गतर फरी केहू
ठूँठ-जस देखि के जरी केहू

तब, कबो कवनो बहाना लेके, कबो कवनो बहाना लेके, विचारधारा के झंडाबरदार हर सुन्नर चीज के एनकाउंटर करें निकल परेले-

रो रहल बा सिवान में कुक्कुर
फेरु टूटी कहर, मरी केहू
का बिरिध का सयान का लरिका
फारि दी लाद ए घरी केहू

अब ई पाठक के मनोभूमि आ चेतना के ऊपर बा कि ऊ, ऊपर के पंक्तियन के भाव-संदर्भ केकरा से जोड़त बा। विचारधारा से हटियो के यदि आज के माहौल के देखल जाउ तऽ कमोबेश इहे लउकी कि हर जगह बड़ मछरी छोट मछरी के चबा रहलि बा। सामान्य जन बेबस आ अलचार बा, जेकर लाठी गम्हिराह बा, ओकरे बहार बा। जब मडरे आ लफुआ द ग्रेट लोग शासन आ सरकार के सर्वेसर्वा होइहें तऽ केअर मजाल बा कि ऊ कवनो अनेति के खिलाफ खोंखबो करी?--

दिन-दहाड़े अनेति समरथ के
देखियो ली तऽ का करी केहू

करे के तऽ बहुत कुछ कइल जा सकत बा, बाकिर जब अवकाते गायब बा, तऽ सब गायब बा। जन के अवकात गायब करे के कुचक्कर सुराज मिलते शुरू हो गइल रहे, बाकिर बुझात ना रहे। ओघरी देशप्रेम के जुनून रहे।

सुराज मिलला के बाद जनता के, देश के कर्णधारन से ढेरे आशा हो गइल। आशा रहे कि सब के आँख-ठेहुन सलामत रही आ सब चैन से मन मिला के, मन से खाई-पीही-गाई। देश तरक्की करी, त सबके मान बढ़ी। बाकिर, सब फटनासी हो गइल। सब त्याग, सब सोहाग-भाग अरपन, सब प्रेम-वेम बिला गइल। अपने कहाये वाला लोग अइसन करे लगले कि आत्मीय सम्बन्धन के हवे निकल गइल। जेकरा पऽ दया कऽ के आपन शक्ति आ धन अर्पित कइल गइल रहे, उहे दया के पात्र बना दिहल।अइसना स्थिति में, दुश्मन के दुकान चल निकलल-

जुलुम जब यार लोऽ के ना सहाला
सरन में आदमी दुश्मन के जाला

शशि के ई शेर एगो महत्वपूर्ण सृजन बा। एह में, एके संगे इतिहास के दर्शन आ वर्तमान के जथारथ के साथ भविष्य के प्रवर्तन के सूत्र अनुस्यूत बा। आदिकाव्य रामायण के सर्व विदित कथा के अनुसार लंकाधिपति दशशीश के खोभसन आ ताड़ना से दुखी होके विभीषण भगवान राम के शरण गहले। श्रीराम बेशक भगवान रहले, बाकिर रहले तऽ लंकेश के शत्रुए नूँ? लंका के अनैतिक राजा अइसन करनी कइले कि अपने छोट भाई के दुश्मन बना के, दुश्मन के शरण में जाए के विवश कऽ दिहले। विभीषण राम के भिरी अपना भक्ति के वजह से ना(भक्ति तऽ ऊ करते रहले) बलुक, अपना ऊपर होत आइल अपना अग्रज के जुलुम के वजह से गइले। साहित्य के पिता वाल्मीकि, ओह घरी, रावण के मनोदशा के वर्णन करत, जवन ऊ कहत बा, ऊ कहत बाड़े तऽ ई कतहूँ से नइखे जनात कि ई आज के जथारथ ना ह। लंकेश रावण कहत बा कि अपने लोग मोका परला पर आग लगावे, जहर देबे, शस्त्र चलावे, धन आ नारी के अपहरण करे में ना चूके। ई लोग अपना जाति भाई पर संकट अइला से बड़ा खुश होला बाकिर अतना कूर आ भयानक होखलो पर मन के भाव प्रगट ना होखे देला। विभीषण, तोरा छोड़ि के जे केहू दोसर रहित तऽ ओके जीयते ना छोड़ले रहितीं-

नित्यमन्योन्यसंहृष्टा व्यसनेष्वाततायिन:।
प्रच्छन्नहृदया घोरा ज्ञातयस्तु भयावहा:।।5।।
***
योऽन्यस्त्वेवंविधं ब्रूयाद् वाक्यमेतन्निशाचर।
अस्मिन मुहूर्ते न भवेत् त्वां तु कुलपांसन।।16।।
(युद्धकाण्ड सोरहवाँ सर्ग)

रावण ह तऽ पतित-पुलई; बाकिर का जवन ऊ कहत बा, ऊ, आज के (भा आवेवाला काल्ह के) साँच ना ह?

आदमी के स्तिथि आ नियति हरमेस प्रकृति के निश्चित-नियत नियमन से आपन रूप ना गहें। ई जरूरी नइखे कि त्रेतायुग में कवनो विभीषण श्रीराम अस मर्यादा रक्षक वीर के शरण में जाके आपन कुल आ देश सँवरले तऽ

आजुओ के विभीषण अपना कुल, जाति आ देश के सँवारे आ श्रेष्ठ बनावे खातिर दुश्मन देश के अधिपति भा ओकरा पायकन के अँकवारी भरिहें। आज तऽ अइसन विभीषण लोग के संख्या बढ़ गइल बा, जे देशे में रहत बा, देशे के खात बा आ देशे के गरिआवत डफली बजावत बा।। सिस्टम के छेद, वोट के राजनीति आ विदेश से फन्डिंग- भारत के जवन दुर्दशा कर रहल बा, ऊ अब अबूझ नइखे रह गइल। जाति, धर्म आ संप्रदाय के तथाकथित झंडाबरदार लोग सरेआम अत्याचार कर रहल बा। श्रेष्ठ आ शरीफ आदमी डरने पटुआइल बाड़े। तंत्र खामोश बा आ आदमियत बेहोश। जे देश जरा रहल बा, ओकरे पर जल ढारल जा रहल बा।

बाकिर युगद्रष्टा कवि चुपचाप ना बइठी। ओकर वेदना भरल मन देश के जन आ तंत्र दूनों से पूछी कि अइसन काहें आ कबतलक?-

www.bhojpurisahityangan.com

धरम का नाम पर जारी रही उत्पात कहिया ले
डेराई आदमी से आदमी के जात कहिया ले
कबो घाटी, कबो जंगल से आई गाँव में हमरा
तिरंगा में लपेटल लाश के सौगात कहिया ले
पुजाई पाँव कबले, ए 'शशी' अलगाववदियन के
दिआ के सामने सूरुज चियारी दाँत कहिया ले

शशि प्रेमदेव के शायरी में दिआ, सूरुज, जोत, फूल, अन्हार जइसन प्रतीक आ-आके ई बता रहल बाड़े कि घमासान जारी बा। अनेति बेर-बेर जीतत बा। तबो आखिर में नेतिए-धरम जीती। सदियन से उगत-खिलत आइल संस्कृति जब विदेशी आक्रांता लोग से ना कुम्हिलाइल तऽ हई लूट मचा के, देश के धन पर ऐश करे वाला बिरिन्ही लोग ओकरा सुवास के कब ले टुँड़ियावत रही?

बाकिर कवि के आक्रोश अइसना लोगन पर जरूर बा जे सब बूझतो रहला पर अनबुझ बनल अपना के आ अपना जइसन कुछ लोगन के भरमावत पथ-समन्वय के राग अलाप रहल बाड़े-

सदियन से नूँ दुनिया देख रहल बाटे
हिन्दू मुस्लिम कहिया एक रहल बाटे

देश सबसे ऊपर होला। देश रही तबे सब रही। 'बटोहिया' के अमर गायक रघुवीर नारायण अपना देश के 'जग के निचोड़' कहले रहले। शशि प्रेमदेव अपना देश से अतना प्रेम करत बाड़े कि ऊ हर जनम में, हर योनि में एही देश में जनम लेबे के इच्छा प्रगट करत बाड़े। अपना संगी-सँघतियन से बतियावत ऊ कहत बाड़े-

सरग-नरक कतहूँ ना जाइब, ए गुइयाँ
इहँवे फेरु लवटि के आइब, ए गुइयाँ
उटकरते तोहरा हम फेरु सुनुगि जाइब
भलहीं केतनो बेर बुताइब, ए गुइयाँ
किरिन बनब तऽ जूझब रोज अन्हरिया से
फूल बनब तऽ गन्ध लुटाइब, ए गुइयाँ

देश प्रेम के ई भावधारा हर श्रेष्ठ कवि के हृदय से उमगेले। कृष्णभक्त रसखान के सवैया आजुओ सहृदय पाठकन के हृदय में विराजमान बटुए। बंगला कवि जीवानानंद दास (1899-1954) अपना प्रसिद्ध कविता 'लौट कर आऊँगा फिर' में कहले रहले-

खेत हैं जहाँ धान के, बहती नदी के किनारे
फिर आऊँगा लौट कर एक दिन बंगाल में, नहीं शायद
होऊँगा मनुष्य तब, होऊँगा अबाबील
या फिर कौआ उस भोर का
फूटेगा नयी धान की फसल पर जो
कुहरे के पालने से कटहल की छाया तक
भरता पेंग, आऊँगा एक दिन!

(अनुवाद- प्रयाग शुक्ल)

कबो-कबो देश-प्रेम, जइसन कि कवनो प्रेम, हठवादी नृशंसता के नगीच-पास पहुँच जाला जे प्रायः विपरीत भाव के प्रतिक्रिया में होला। एहिजे सचेत रचनाकार अपना के सहज भाव से संभार लेला, प्रतिक्रिया में ना बहे। साहित्य प्रतिक्रिया ना स्वभाव ह, भलहीं ओकरा पीठी पचास ना, पचास हजार प्रतिक्रिया लागल होखे।

शशि प्रेमदेव में साँच के साँच अस कहे के लूर बा बाकिर एकरा के कहे में ऊ साक्षी भाव के साथ स्वस्थ रहत बाड़े, इचिको कूर नइखन होत एह से काव्य के सुनराई अक्षत रहत बिया, ओह पर कवनों चिहार नइखे लाग पावत।

000

प्रेमदेव कवनो हाल में सर्जक के स्वभाव नइखन छोड़त। लाख अन्हार रश्मिस्रोत के बिरावत होखे, लाख झंझा झकोरत होखे, कवि दीया बन के अनवरत जरत रही। आज ना त काल्ह सूरुज के अपना भुलाइल सामरथ के पता जरूर लागी! सुरुज से तात्पर्य देश के हर संभाग के सर्वोच्च प्रतिभा आ अन्हार के मतलब ओहिजा तंत्र आ विधान के चूक से पोसात अनीति-अनाचार। कवि के उदासलो शब्दन में ओह ओज के निरेखल जा सकत बा, जे कवनो देश के अस्मिता के प्रमुख तत्व होला-

हाल ओसहीं हमार बा आजुवो
खंडहर घर-दुआर बा आजुवो
बनि के दीया जरे के आन्हीं में
भूत सिर पर सवार बा आजुवो
पीठ सूरुज कऽ के तरे ठोकीं
मोंछि अइँठत अन्हार बा आजुवो

सर्जना प्रकृतिगत होइयो के अध्यवसाय पर निर्भर करेले। ई वेदना के एगो अइसन नदी ह, जेमें हरमेस आँख खोलले पँवरत रहे परेला। रुकला पर डुबला के अलावे अउरी कवनो विकल्प ना बाँचे। हर महान सर्जक के जिनगी के नगीचा से देखला पर ई एकदम साफ लउक जाई कि ओकर पीर अपार रहे, चाहे ऊ आपन रहे चाहे आन के रहे। शशि के सर्जक के सबसे बड़ दर्द ई बा कि लोग उनके समुझल ना-

पद्य होइयो के गद्य रहि गइलीं
केहू हमरा के गुनगुनाइल ना

इहे दर्द-पीर महाकवि भवभूतियो के रहे, बाकिर उनकरा अपना कृति के ऊपर अथाह आस्था आ अगाध विश्वास रहे। शशियो प्रेमदेव भवभूतिए के परंपरा के कवि हवे।

ऊपर के शेर गजलकार के ओहू पीड़ा के इजहार बा, जेकर अर्थ ई खुलत बा कि ओकरा क्षमता के उपयोग संसार सही जगह आ सही दिशा में ना कर पावल। चाहे चूक

www.bhojpurisahityangan.com

जेकर होखे अइसन मलाल त रहिए जाला। एह शेर के सामान्य प्रेमिका के ओर से दर्द देबे वाला कार्य-व्यापार से भी जोड़ल जा सकत बा।

प्रेम के अभिव्यंजना वाला शेर भी शशि के पासे कुछ कम नइखन स। एह में कुछ बेहतर, कुछ सामान्य आ कुछ कमतर बाड़े स। नीचे लिखल गजल देखे जोग बा, जेमें क्रमश: तीनों तरह के शेर आइल बाड़े स-

चान फक्कड़ मुसाफिर सफर में रहल
चाँदनी रात भर खण्डहर में रहल
ऊ भले दू घरी हमरा घर में रहल
फुसफुसाहट महीनन शहर में रहल
छाँह के सुधि रहे ना खबर घाम के
हाथ जबले केहू के कमर में रहल

दू गो अन्य सुघर शेर इहो बाड़े स-

आँखि जब फागुन के छलकत जाम जइसन हो गइल
हर पियासल दिल बदे पैगाम जइसन हो गइल
ओठ धइलस जइसहीं सूरुज -- क्षितिज का ओठ पर
साँझ कऽ सँउसे बदन गुलफाम जइसन हो गइल

एह शेरन में उपमा अलंकार के सरस आ विभोर कर देबे वाला प्रयोग इहनी के सुघराई में जादुई रंग भर देत बा। वाजिब शब्दन के चुनाव आ इहनी के दुरुस्त जगहन पर स्थापना से, प्रयोग पारंपरिक होखलो पर कथन-भंगिमा अभिनव लागत बा। दूसरा शेर में मानवीकरण के अलावे एगो मुग्ध करेवाली क्लासिक कारीगरी भइल बा। गजलकार कहत बा कि जइसहीं सूरज क्षितिज के ओठ पर आपन ओठ रखलस ओइसहीं साँझ के गाल गुलाब अस उग आइल।(मतलब सूरज डूबे वाला रहे। साँझ गुलाबी(सिंदूरी) हो गइल।

एहिजा सूरज आ क्षितिज- प्रकृति के दूनों उपादानन के बीच के प्रेम-व्यवहार, दूनों के पुलिंग होखला से, उचित नइखे जनात। तब? बारीकी से देखला पर ई पता चलत बा कि गजलकार के कहनाम एहिजा ऊ नइखे, जवन ऊ कहत जनात बा। दरअसल गजलकार के सूरज के ओठ धरे के कथन के मतलब सूरज के ओठ धरे से ना, सूरज के किरनन के ओठ धरे से बा। क्षितिज पर सूरज होला ना, आभाषित होला, बाकिर किरन नभ, जल, थल सगरो होले। ऊ सूरज के बिसवला के बादो कुछ देर ले क्षितिज के अधरन पर आपन अधर रखले रह जाले।

सूरज के किरन जसहीं क्षितिज के ओठ पर आपन ओठ धइली स तसहीं, साँझ के मुँह लाज के मारे गुलाबी-गुलाबी हो गइल। एह तरह, क्षितिज पुलिंग (रंग साँवर) आ किरण स्त्रीलिंग (रंग गुलाबी भा सिंदूरी)-- के बीच अधरचुम्बन भइल उचित बा, मधुर बा।

बाकिर इहवें एगो प्रश्न अउरी उठ आवत बा– सूर्य के किरिन आ क्षितिज में प्रेम-भाव के झाँकी से साँझरानी काहें लजा गइली?

आर्ष ग्रंथन में संध्या के सूर्य के पत्नी बतावल गइल बा। सूर्य के किरण सूर्य के पुत्री होखला से संध्यो के पुत्री भइली स। स्वाभाविक बा, जब सूर्य के किरन क्षितिज के संगे रागरंग में रंगा गइल होई लोग तऽ संध्या के बहुते लाज लागल होई। एही लाजे उनकर मुँह (गुलाबी) लाल हो गइल स्वाभाविक बा।

श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड में आइल एगो प्रसंग से एह काव्य-भाव के संपुष्टि कइल जा सकत बा। श्रीरामचंद्र अपना छोट भाई लछुमनजी के साथे महाराज जनक के फुलवारी देखे आइल बाड़े। एने श्रीजानकीजी भी अपना सखी लोग के संगे में ं गौरीजी के पूजा करे आइल बाड़ी। संजोग अइसन बनत बा कि श्रीराम आ जानकी अचके आमने-सामने आ जात बा लोग। श्रीजानकीजी के छवि अलौकिक बा। श्रीराम के आँख उनकरा मुखचंद्र के निहारे खातिर चकोर बन जाता बा। उनकर पलक जस के तस अडोल हो जात बाड़ी स। मानसकार उत्प्रेक्षा करत कहत बाड़े कि अइसन जनाइल– जइसे निमिजी (जनकजी के पूर्वज, जिनकर वास पलकन पर मानल गइल बा) बेटी आ (भावी) दमाद के प्रेम में परल देख के, लाजे पलकन पर से हट गइलीं (जेसे पलकन के गिरल रुक गइल)--- 'भए बिलोचन चारु अचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल।।'

000

शशि प्रेमदेव के गजल परंपरा के ज्ञान, युग के अनुभव आ खुद के अनुभूति के काव्य-व्यवहार हई स। इहनी में अइसन कुछुओ नइखे जे जिनगी के सहज धारा के बहाव के खिलाफ कुछ सोचे, कहे भा करे के कोशिश के रूप में लउकत होखे। इहनी में जिनगी के बेहतर बनावे के संकल्प जरूर बरकरार बा, जे काव्यकला के अंतिम लक्ष्य ह। शशि के गजल अपना पढ़वइयन के कवनो तिलस्मी लोक में ना ले जाके एही धरती, एही आसमान, एही सूरज-चान के बीचे— सुख-दुख आ एह से उपजल जीवन-राग के बीचे, आदमी के आदमी बनवले रहे के संकल्प के रूप में याद कइल जइहन स। साहित्य के मकसदो इहे होला। इहे मकसद होखहूँ के चाहीं।

❑❑

❍ बक्सर, बिहार

www.bhojpurisahityangan.com

" के कहSता ?"

राम यश अविकल

" के कहSता कि हमनी के शूद्र हईं जा ? शूद्र त चमार , दुसाध,मुसहर ,धोबी,पासी,डोम, मेहतर, हवें सं। हमनी के यदुवंशी क्षत्रिय हईं जा। यदुवंश आ रघुवंश दूनो लोग एके कुल खानदान के हवें। यदुवंश में कृष्ण आ रघुवंश में राम भइले । " मोछ पर ताव देत वंशी यादव कहलें

" वाह -- वाह भाई! वंशी यादव, तू लोग कहिया से क्षत्रिय हो गइल हो ? क्षत्रिय घराना में ना शादी - वियाह , ना भाई - भवधी, ना उठन - बइठन आएं--। उतर प्रदेश के मुख्यमंत्री त तोहरे जात के नू रहन ? पद से हटते आवास खाली भइल त ओह आवास के साथे कुर्सी, टेबुल, जवना पर मुख्यमंत्री जी बइठल रहन। सब गाय के मूत गोबर आ गंगाजल से धो के पवित्र कइल गइल। तब जाके एगो क्षत्रिय मुख्यमंत्री ओह आवास में रहे लगलें। अगर पूर्व मुख्यमंत्री क्षत्रिय कुल के रहते त अइसे पाखंड कके अपमान कइल जाईत ? कए पीढ़ी भरम में रहSब लोग भाई? जहां तक चमार ,दुसाध ,मुसहर,धोबी,पासी, डोम मेहतर के बात बा त ई लोग शुरू से चारो वर्ण से बाहर बा। पहिले अछूत आ अतिशूद्र, अब दलित कहल जाता। आ संविधान के अनुसार अनुसूचित जाति कहल जाता। " जबाव देले सहदेव।

जबाव सुन के तिरमिरा गइलें वंशी यादव। चेहरा के रंग उतर गइल । दांत पीसत कहले, " तू साला चमार होके हमरा के जबाव देबे रे--? तोर अतना औकात हो गइल ? हमरा से तू एके क्लास नू बेसी पढ़ल बाड़े रे ? बाकिर जात में हमरा से नीचे बाड़े नू ? तू राड रेयान आ हम बड़ जात। ओह में तू साला विधर्मी। धर्म के ना माने वाला। धरम के खिलाफ बोले वाला। देवता देवी के उल्टा पुल्टा बोले वाला। हिन्दू धर्म के दुश्मन। तोहनी के पाकिस्तान चल जाए के चाही। "

" ए भाई वंशी यादव तोहरा लेखा हमरो गारी आवे ला। बाकिर हमनी के संस्कार अइसन नइखे । तोहरे लोग के संस्कार में गारी गलौज बा। त गारी देत बाड़S । जहां तक विधर्मी के बात बा त ई आरोप बहियात बा। अगर अंधविश्वास पाखंड आडम्बर से बाहर निकल गइल विधर्म ह , त हमनी के विधर्मी हईं जा। धरम एगो धंधा ह, तोहरा समझ के बाहर के चीज़ बा। हम जवन बात तोहरा से कहनी ओकर जबाव तोहरा लगे नइखे । अगर अपना के विद्वान बूझत बाड़ त हमार बात तर्क से काट द। बाकिर तोहरा लगे तर्क त बा ना। जेकरा लगे तर्क ना होला उहे गारी गलौज आ मारपीट करे पर उतारू हो जाला । "

" तुही भइल बाड़े बड़का विद्वान --? बाकी लोग जाहिल बा ? "

" हम कहां कहSतानी केहू के जाहिल --? ई तू कहSताड ।"

"देख सहदेउआ, हमनी के हिन्दू हईं जा। एह से एह धरम के मानी ला जा। हमनी के पुरखा पुरनिया मानत आवSता । एही से ई धरम के माने आ रक्षा करे खातिर हमनी के फर्ज बनSता। जे धर्म के रक्षा करी ऊ क्षत्रिय कहाई ।"

" आहो वंशी भाई! हमनियो के धरम के रक्षा करब जा त क्षत्रिय कहाय लागब जा --?"

"तोहनी के कइसे क्षत्रिय कहईब स रे --? तोहनी के सब जात से नीच बाड़ सं। हमनी के त धरम के रक्षा पूर्वजे करत आइल बा। कृष्ण भगवान धरम के रक्षा करही खातिर नू अवतार लेले रहन। ऊ हमनी के पूर्वजे नू हवें । एह से हमनी के पूर्वज क्षत्रिय हा। "

" ठीक बा तू लोग कर धरम के रक्षा। ओह से हमनी के का लेवे देवे के बा ? बाकिर दोसरा के ऊपर कवनो बात थोपे के अधिकार नइखे केहू के। एह देश में सभे आजाद बा। आपन जिनिगी अपना ढंग से जीए के सभे स्वतंत्र बा। तोहरा लोग के आदत हो गइल बा, जे कमजोर बा, गरीब बा ओकर कवनो काम में चाहे कवनो कार्यक्रम में घूस के अड़ंगा डाले के। जइसे कहल जाला कबाब में हड्डी बने के। जे बरियारा बा ओकरा ओरे ताके के हिम्मत नइखे । "

(2)

"आरे -- त तोहनियों के हिन्दुये नू हवSस । हिन्दू होके हिन्दू विरोधी काम करे लस त हमनी के खराब लागे ला। हमनी के संस्कृति आ संस्कार बा पंडी जी के गोड लागे के आ दान दक्षिणा देवे के। शादी वियाह पंडी जी से कराई ला जा। तोहनी के, का जाने कवन आंबेडकर बाड़े जे उल्टा सीखा देले बाड़े ? तोहनी के पंडी जी के राम सलाम आ पायलगी सब छोड़ देलस। ना वियाह शादी ना कवनो दोसर अवसर पर पंडी जी के पूछले छोड़ देलस। का जाने कहां से जयभीम जयभीम करे के सीख लेलस ? "

"एकदम गलत बात कहSताड भाई। हमनी के हिन्दू एकदम ना हईं जा। अगर हमनी के हिन्दू रहती जा त मंदिर में जाय के पावंदी लागीत ? मंदिर में दलित के जाय से तोहरा लोग के भगवान छुआ जालें। दलित के साथ उत्पीड़न होता भा दलित

www.bhojpurisahityangan.com

महिला के बलात्कार होता त एको हिन्दूवादी संगठन दलित के साथे खाड होला ? चाहे तुही लोग कबो साथ देले बाड़ -? एकदम ना। ओह साल गांव में जग भइल त चंदा हमनियो के मोहल्ला से लिहल गइल। तबो, जग में कुंड लेवे के भइल त महंत माइक से ऐलान क देले कि कवनो चमार, दुसाध के कुंड ना मिले के चाही। ना त जग के पवित्रता भंग हो जाई। जग के पवित्रता बनवले रखे खातिर ई नियम के पालन बहुत ज़रूरी बा। ई बात त पूरा गांव सुनल। कवनो चुपा चुप्पी त ना रहे। तुहू लोग सुनबे कइल। काहे ना महंत के विरोध कइल लोग ? अगर हमनी के हिन्दू रहती जा त एह किसिम के बात कहते महंत? "

" आरे ----त का चाहत रहस ? महंत के विरोध कके जगवे खरमंडल कर दिआव। गांव के कतना शिकाइत होइत, पता बा तोहनी के ? "

"एकर मतलब बा कि महंत हमनी के विरोध कके निम्मन कइले आ गांव के मान सम्मान बढ़ा देले, ना----? दलितन के चंदा जग में लागल त ओह से जग के पवित्रता भंग ना भइल ? हमनी के दोसर गांव के निवासी रही जा का--?"

" आरे अइसन मंशा थोरे बा हमनी के ? शास्त्र में अइसन वर्जित होई तबे नू महंत कहले होइहें ई बात। अपना मने थोरे कहले होइहे ? ऊ शास्त्र के ज्ञाता हइये नू हवें। शास्त्र के नियम पालन करें परी नू ?"

" ठीके बा ---तू लोग बचाव आपन धरम। जब धरम बचावे के ठीका तोहरे लोग के मिलल बा त फेर बात खतम। बाकिर नेता ,मंत्री ,अफसर ,धन्नासेठ के बेटा धरम बचावे खातिर सड़क पर कबो उतरल देखले होइब --? एकदम ना। ई काम तोहरा लोग के थोप के ओह लोग के लइका सब के सब विदेश में पढ़ाई करऽ ता, ना , त कवनो व्यवसाय में लागल बाड़े सं। जब कि नेता मंत्री जादे चिल्ला रहल बा कि हिन्दू धर्म खतरा में बा। कबो पलट के पूछ लिह कि तोहरा लोग के लइका हिन्दू धर्म बचावे खातिर कब सड़क पर उतरिहे सं ? ई पूछे के बेंवत नइखे तोहरा लोग के। "

तबतक सहदेव के फोन के घंटी बाजल। सहदेव बगली से मोबाइल निकाल के स्क्रीन पर निहरले। उनुकर संस्था "जन चेतना मंच " के सचिव के फोन रहे।

" हैलो --सचिव जी का हाल बा? काहे खातिर फोन कइले बानी ? कवनो विशेष बात बा का ? "

" हं अध्यक्ष जी दुलहिनगंज गांव में एगो अजीब घटना घट गइल। "

"का हो गइल बा उहां?"

"उहां एगो दलित समाज के बच्चा खेलत खेलत गांव के मंदिर में भीतरे चल गइल। बच्चा अभी सात साल के बा। मंदिर के महंत ओह लइका के बाप के बुला के गारी गलौज त कइबे कइलस आ दस हजार रोपया के जुर्माना ठोक देले बा। ओह लइका के बाप से कहत रहे कि लइका सम्हारे नइखे होत त काहे आवारा कुता कुती लेखा पैदा क देल स ? तोर लइका के मंदिर में घूसे से पूरा मंदिर परिसर अपवित्र हो गइल। "

" ल --- सुन हो वंशी भाई ! दुलहिनगंज में एगो छोट लइका मंदिर में ढूक गइल त मंदिर अपवित्र हो गइल।

(3)

एहीखातिर लइका के बाप पर दस हजार के जुर्माना महंत लगा देले बा। तू कहत बाड़ कि तोहनिओ के हिन्दू हवऽस। "

ई बात सुन के वंशी यादव महटिया के चल गइले

हं सचिव जी , ई त बड़ा बरियार आ अजूबा घटना हो गइल। जबकि लइका के देवता के रुप मानल जाला। निर्दोष बालक के का ज्ञान बा, कहां जाय के बा कहां ना ? एह राज में तथाकथित साधुए, महंत, मठाधीश के ढेर मन बढ़ल बा। सब बेलागाम हो गइल बाड़े सं। तत्काल एगो काम करे के बा कि तीन दिन के भीतर संस्था के कार्यकारिणी के बइठक के सूचना निकाल के सबके मोबाइल पर सूचना भेज दिआए। ओह बइठक में खाली एही मुद्दा पर विचार विमर्श होई। तब कवनो फैसला लिआई। ओह गांव के जे सदस्य बा लोग ओहू लोग के बुलावल जरूरी बा। एकरा बाद ओह गांव में बैठक कइल जाई। उहां के लोग के विचार जानल जरूरी बा कि उहां के लोग का सोचत बा। आ कहां तक एकरा के प्रतिकार करे खातिर आगे बढ़ी लोग ? गांव के लोग के सहमति से ही कवनो कदम आगे बढावल जाई।

" ठीक बा अध्यक्ष जी! अभी हम तुरंत सूचना प्रसारित कर देत बानी। "

" जन चेतना मंच " वंचित शोषित लोग के एगो बडहन संगठन बनल जात रहे। एकर विस्तार राज्य स्तर से देश के हरेक राज्य तक विस्तार होत रहे। एह संस्था से प्रगतिशील सोच के आदमी ढेर जुडल रहन। ई खाली एगो जातीय संस्था तक सीमित ना रहे। एह संस्था के काम देख के लोग के एह संस्था के प्रति झुकाव बढ़ल जात रहे।

दू दिन के भीतर जन चेतना मंच के कार्यालय परिसर में बैठक भइल। एह बैठक में दुलहिनगंज के सदस्य भाग लेले। बैठक में तय भइल कि एको रोपया जुर्माना नइखे देवे के। आ आखिरी फैसला ओह गांव के लोग आ पीड़ित परिवार के लोग ली।

www.bhojpurisahityangan.com

विहान भइला संस्था के कार्यकारिणी के दू गो सदस्य भेज के ओह पीड़ित परिवार से जानकारी लिआइल। उनुका से पूछल गइल कि जुर्माना देवे के बा कि ओह मठाधीश पर केस करे के बा ?

पीड़ित अलगू कहले, " हमरा लगे फूटल कौड़ी हइये नइखे त अतना रोपया जुर्माना कहां से देब ?

"गांव के मुखिया से मिल के आपन बात रखनी हं ?. ऊ का कहत बाड़े ? "

"ऊ का कहिहे --? ऊ कवनो दोसर हवे --? बिना मुखिया के सह के महंत जुर्माना लगा दी? ई एकदम असंभव बा। अगर जुर्माना दिआ जाई त दूनो मिल के बंदरबांट कर लिहे सं। महंत के जाते के नू मुखिया हवे। ऊ आपन जात के खिलाफ कबो जइहे ? दूनो में खूब सांठगांठ बा। "

"थाना में गइल रहीं केस करे खातिर ? "

" ना , हम थाना में ना गइल रही। उहां बिना रोपया के केस थोरे लिखाई। अतना आसान बा एह घरी केस कइल । उहो दलित के, आ महंत के खिलाफ ? "

" हमनी के एगो दरखास्त लिख देत बानी जा। गांव से कुछ आदमी अपना संगे ले ली। साथ में संस्था के सदस्य जइहे । थाना में चल जाई केस हो जाई। हमनी के कानूनी लडाई लड़े परी। "

कुछ लोग के साथे अलगू थाना गइले । थानाध्यक्ष के दरखास्त देले।

थानाध्यक्ष अलगू के समझावे लगले, "कुछ कम बेसी कके गांव में फरिया लेवे के त केस करे से का होइ ? महंत पर केस कइल ठीक नइखे । ई बहुत संवेदनशील ममिला बा। "

(. 4)

संस्था के सदस्य कहले, "हमनी के इहां सलाह आ समझौता करे खातिर नइखी जा आइल। थानाध्यक्ष महोदय केस करे खातिर आइल बानी जा। "

" ठीक बा हम अलगू के दरखास्त ले लेले बानी एकरा के संज्ञान में लेके जल्दी कारवाई कइल जाई। "

एक सप्ताह तक करवाई ना भइल । एने महंत जुर्माना वसूले खातिर अलगू पर रोज दबाव बनावत रहे। साथे मुखियो कहस कि कुछ कम बेसी देके फरिया ले।

जब कवनो किसिम के कारवाई ना भइल थाना से तब " जन चेतना मंच " के कार्यकारिणी के सदस्यगण आ ओह गांव में जाके बैठक कइले सहदेव । ओह बैठक में दलित समाज के साथे दोसरो समाज के जे प्रगतिशील सोच के रहे उहो भाग लेले। एक स्वर से महंत के मनमानी के विरोध जतवले लोग । सभे कहल कि महंत के पीछे मुखिया के हाथ बा। सरकारी योजना में लूट से पेट ना भरल त अब नीचतई पर उतर गइलें। एहू में बंदरबांट के फेर में लागल होइहे। "

पूरे पंचायत में लोग मुखिया से त्रस्त रहन। बैठक के बाद सब लोग एगो जुलुस के सकल में थाना पहुंचले। केस लिखे आ कारवाई करे के दबाव बनल। मजबूरन थानाध्यक्ष के केस लिखे परल। जल्दी कारवाई करे खातिर भी दबाव बनावल गइल ।

केस भइला के सूचना मिलते महंत रातों-रात फरार हो गइल । हरमेश खातिर मंदिर छोड़ के भाग गइल।

महंत के भागे से मुखिया आ मुखिया के बिरादरी के लोग में केस कइला से बड़ी नाराजगी बढ़ गइल। कुछ अउरी सवर्ण समाज के लोग जे दकियानूसी सोच के रहे पूरा गरमा गइल लोग। कहे लगले, ई ठीक ना भइल । अब मंदिर के पुजारी कहां से आई ? मंदिर उपास रही ? अलगुआ महंत पर केस ना करीत त महंत ना नू भगते ? अलगुआ के गलती बा कि ना ? मुखिया ओह लोग के उकसावे लगले। गते गते गांव में तनाव के माहौल हो गइल । एह मुद्दा पर पूरा गांव दू फांड में बंट गइल । दलित समाज के लोग आ गांव के प्रगतिशील सोच के सब बिरादरी के लोग एक तरफ आ ब्राह्मणवादी मानसिकता के लोग एक तरफ। हालात दिन पर दिन बिगड़ल जात रहे। ब्राह्मणवादी लोग एको बेर महंत के गलती ना कहले । दलित चेतना मंच के सदस्यगण आ सहदेव जाके ई ममिला के सूझबूझ से सलटावे से गांव में बरियार झंझट होत होत बांच गइल ।

बतावत चली कि सहदेव के गांव भदेहर यादव बहुल ह। राजपूत आ ब्राह्मण जाति , यादव लोग से कम बा लोग। यादव आ ब्राह्मण, राजपूत छोड़ के दोसर जात जइसे कुशवाहा, नोनिया, कहार, कुर्मी , नाई, जोलहा आ सब दलित बिरादरी के मिला देला पर सबसे जादे संख्या हो जाला। यादव आ राजपूत, ब्राह्मण चाहे कि मिल के अकेले आपन मुखिया, सरपंच बना लीं त ई संभव नइखे । तबो गांव में यादव लोग के दबदबा जादे बा। एह लोग से गांव के सभे लोग तंग रहेला। मवेशी से केहू के फसल चरा देल आम बात बा। ई लोग दोसरा के फसल खेत के आरी पर खाड हो के चरवा देला लोग। ई लोग के दोसरा के नोकसान करे में बड़ा मजा आवे ला। बोलला पर मारपीट पर उतारू। पढ़ाई लिखाई में जादे लोग के ध्यान ना। ऊंच शिक्षा में आबादी के हिसाब से ढेर कम बा लोग। जे पढ़ लिख के नोकरी में आ गइल ऊ लोग शहर ध लेले। गांव में केहू के शादी वियाह आ मरनी जिअनी में लोग जुटे ला। बाकिर जे गांव में बा ऊ सभे खटलिहा। दूध के कारोबार में आ खेती किसानी में बा लोग। डेयरी उद्योग चले से गांव गांव जाके डेयरी के गाड़ी दूध बटोर के ले आवे ला। एह से खटलिहा के जादे भाग दउर ना करे परे ला। एह से दूध के कारोबार फलत फूलत बा। एगो बड़ खूबी बा एह लोग में। आपस में भले कतनो दुश्मनी होखे, बाकिर दोसरा जात जोरे तनिको झंझट भइला पर सब दुश्मनी भुला के एकवट जाला लोग। लोहा गाहे खातिर तैयार।

www.bhojpurisahityangan.com

सावन के महीना रहे। गांव के लोग के बैजनाथ धाम में जल ढारे के लहर चढल रहे। हरेक हप्ते गांव से कांवडियन के जत्था लेके दू गो तीन चार चक्का वाला गाड़ी खुले। खासकर यादव बिरादरी में भक्ति के लहर जादे चढ जाला। ई लोग में जल ढारे खातिर बड़ा उत्साह आ उमंग देखे में आवे ला। कांवडियन के जत्था में बढ़ चढ़ के भूमिका निभावे ला लोग। एह बिरादरी के नवजवान सबसे आगे रहे लन । गला में कृष्ण भगवान के आकृति बनल सोना के लांकेट जादे देखे के मिल जाला। गेरूआ रंग के गमछा, गंजी, हाफ पैंट पेन्ह के कांवड़िया बन के जल ढारे के हुलस खूब रहेला। बाकिर ओह

(5)

पंचायत के दलित समाज के एको लइका आ आदमी जल ढारे के फेर में ना रहे। सहदेव आपन समाज में अतना चेतना पैदा क देले रहन कि ई लोग आपन रोजी रोजगार आ शिक्षा के फेर में रहे। कांवड़ लेके जल ढारे के फेर में ना। धार्मिक अंधविश्वास पाखंड से लगभग सभे बाहर रहे। सहदेव के प्रयास बा कि पूरे पंचायत के सभे लोग अंधविश्वास पाखंड से दूर हो जाय। शिक्षा पर जादे ध्यान देवे आ खर्च करे। एगो अलग किसिम के पूरे पंचायत ना त कम से कम गांव आदर्श बन जाय। गांव गते गते एह राह पर चल देले रहे। बाकिर यादव समाज के, एगो दलित समझा दे, ई एकदम संभव नइखे । एगो सबसे बड़ कारण जातीय श्रेष्ठता के बोध में गहराई तक डूबल। सवर्ण समाज के प्रगतिशील सोच वाला आदमी सहदेव के बात सुने आ प्रभावित होत रहे। भले थोरही लोग बा। काहे कि संघ के असर त गांव गांव तक पसर चुकल बा। अतिपिछड़ा समाज के लोग भर सावन जल ढारे में तत्पर लउके । जल ढार के लवटला के बाद लागे कि जइसे युद्ध के मैदान में किला फतह कके आइल होखे। भर सावन भक्ति के माहौल में लोग सराबोर रहे ला। जल ढार के लवटला के बाद देखे के मिले ला कि लोग आपन टोला पड़ोस के बड़ बुजुर्ग के गोड लाग के आशीष लेला लोग। भर सावन भक्ति के लहर , जवान , अधेड़ से लेले मेहरारूअन पर छा जाला। पीछिला साल एही गांव के कावंडियन से भरल पीक अप राह में ट्रैक्टर से टकरा गइल । एको जना ना बचलें। तबो पीछिला साल से एह साल कावंडियन के संख्या में कमी ना, अउरी बढ़ोतरी पर रहे।

जल ढार के अइला के बाद कुछ यादव लोग आदत से अलचार दारू पी के दलित मोहल्ला से गुजरत बेरा अनसोहातो गरियावत चल जाला लोग। ई सरवा चमरन, दुसधन कुल्ही कुकर्मी, विधर्मी बाड़े सं। पापी बाड़े सं। ई सरवा एको साल जल ढारे ना जा स। ई मूइहे स त सब नरके में जइहे सं । एक दिन मुरली यादव असही गरिआवत जात रहन। ई उनुकर रोज के आदत रहे। दारू पीअले रहन। जसही दलित मोहल्ला से पार कके आगे बढले त अचके गिर गइले । छटपटाय लगले। हल्ला भइल त टांग के ले गइले लोग। शहर के अस्पताल में भर्ती करावल गइल । डाक्टर बतवले कि इनिका लकवा मार देले बा।दाहिना अलंग सिर से पांव तक देह सुन्न हो गइल । कुछ दिन बाद अस्पताल से घरे अइले । बिछौना पर परले पेशाब पैखाना होखे। उठ के बइठहू लायक ना रहन। उठावे बइठावे , सेवा करे वाला केहू ना। ई वंशी यादव के बड़ भाई रहन। मुरली यादव के वियाह भइल त कुछुए महीना में उनुकर मेहरारू जर के मू गइल । ससुराल वाला उनुका पर दहेजउ कानून में केस क देले। वंशी यादव इनिका से अलगा रहन। एह से केस में इनिकर नाम रहे। बाकिर बाबूजी के नाम रहे। माई त पहिलही मू गइल रही। पांच साल तक बाप बेटा जेल में रहले। जेल से छूटला पर बाबूजी ना टिकले। जल्दीए गुजर गइले । जेल से छूटला के बाद मुरली यादव हरेक साल कांवड़ लेके जल ढारे जात रहन। हर साल जल ढार के अइला के बाद दारू पी के दलित मोहल्ला में गारी देत चल जास। अब देह के गींजन होखे लागल। केहू सेवा करे वाला ना। वंशी रहस त साफ सफाई कर देस। ना त ओही पर तवांत रहन।

भावह गरिआवे," नतिया जवरे रहे त बड़ी दुख देले रहे। हमरा के आदमी बूझते ना रहे। हम ठेकत नतिऊ के ? अब गुह थापस। अपना आगा केहू के कुछो समझत रहे ? मलिकांव चलावत रहे। इंगुर टिकुली कीने खातिर एगो अधेली खातिर तरसा देत रहे। मरद हमार बहरा रहत रहन। "

मुखिया के चुनाव के दिन नियराइल रहे। गते गते गांव में राजनीति गरमाय लागल। प्रवेश यादव वर्तमान मुखिया। पंचायत में विकास के काम जमीन पर कम कागजे पर जादा कइले । साइकिल पर चलत रहन। तीन साल के भीतर स्कार्पियो कीना गइल । खटाल में गाय बढ़ गइल। बिना पइसा लेले पंचायत में एको बृधा पेंशन भा विधवा पेंशन ना करवले। पंचायत के लोग बदलाव के मन बना लेले रहे। भदेहर पंचायत खातिर एगो ईमानदार उम्मीदवार के खोज रहे। एक दिन " जन चेतना मंच " के बैठक भइल । बैठक में तय भइल कि दलित खाली आरक्षित सीट से चुनाव काहे लड़ी ? सामान्य सीट से काहे ना ? बहुत बहस भइल । आधा से जादे लोग के मत रहे कि अब सामान्य सीट से चुनाव लड़ के एगो नया इतिहास रचाव। खाली मुखिया के चुनाव में ना विधानसभा, लोकसभा के चुनाव में सामान्य सीट से उम्मीदवार लडावे पार्टी। एकर मांग जोर-शोर से उठे। कवनो पार्टी में दलित खाली दलिते प्रकोष्ठ के अध्यक्ष सचिव काहे बनिहे ? सामान्य जिला अध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष आ केन्द्रीय अध्यक्ष काहे ना ? ई लकीर मेटावे के परी। कुछ लोग शंका संदेह जतवले कि हार पक्का होई। कारण कि दलित उम्मीदवार के दलित छोड़ के दोसर जात वोट ना करी। आरक्षित सीट पर त मजबूरी हो जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

तबो भइल कि हमनी के गंवावे के का बा? पावे खातिर ढेर कुछ आ मान सम्मान बा। सहदेव मुखिया खातिर उम्मीदवार घोषित भइलें। ई एगो नया प्रयोग के शुरुआत रहे।

(6)

सहदेव पूरे पंचायत में लोकप्रिय रहन। "जन चेतना मंच "के अध्यक्ष के नाते हरेक आदमी के सुख दुख में खाड रहस। चाहे आपन जात होखे भा परजात। अतिपिछड़ा समाज में भी खूब लोकप्रिय ना रहन। कुशवाहा समाजो में पैठ रहे इनिकर। जन चेतना मंच से मुखिया के उम्मीदवार धोषित भइले त सब लोग इनिका पीछे लामबंद हो गइलें। ई सब लोग भावी मुखिया के रूप में देखे लगले। इहे लोग सहदेव के जीत के रणनीति बनावे लगले। यादव समाज के मुखिया केहू के पसन ना। सभे लोग त्रस्त रहे यादव समाज से। सवर्ण समाज एक से जादे उम्मीदवार खाड होखे से हार जाय। सहदेव चुनावी राजनीति से दूर रहल चाहत रहन। बाकिर लोग के साथ देवे के वादा आ सहयोग के चलते चुनाव लड़ें खातिर हामी भरले।' जन चेतना मंच' 'जानत रहे कि हार हो जाई। बाकिर ऊ एगो संदेश देल चाहत रहे कि अब दलित लोग खाली आरक्षित सीट से ना सामान्य सीट से भी चुनाव लड़ी। अतिपिछड़ा आ कुछ पिछड़ों समाज के साथे प्रगतिशील सोच के आदमी सब किसिम के मदद देवे के वादा कइले। लोग दिल खोल के चंदा देके सहयोग कइले। पर्चा पम्पलेट के साथे नोमिनेशन के खर्चा चंदा से पूरा भइल। ढेर लोग प्रचार प्रसार आ जन सम्पर्क में लाग गइले।

प्रवेश यादव के मुखिअई के चस्का लाग गइल रहे। सहदेव के रणनीति के समीकरण देख प्रवेश यादव के हार के डर सतावे लागल। संगे सवर्णो समाज में बेचैनी ध लेलस। प्रवेश यादव के जीत के उमेद पर पानी फिरत नजर आवत रहे लोग के। सवर्ण समाज एगो चाल चल के बिसात बिछा देलस। मंगरू पासवान के पइसा देके सहदेव के खिलाफ एगो उम्मीदवार उतार देलस। जवना से दलित वोट के बंटवारा हो जाए। सबके मालूम रहे कि दलित के वोट जेने जाई ओकर जीत पक्का बा। प्रवेश यादव के मुखिया बनावे में दलित के वोट निर्णायक भइल रहे। बाकिर प्रवेश यादव के मुखिया बना के दलित समाज के पछतावे परल। दलित पर उत्पीड़न अउरी बढ गइल रहे। प्रवेश यादव सहदेव पर नाम वापस लेवे के दबाव बनावे लगले। लोभ लालच हरेक हथकंडा अपनवले बाकिर सहदेव पर कवनो असर ना। राजपूत समाज से दू गो आ ब्राह्मण जाति से एगो उम्मीदवार खाड रहे।

चुनाव नियत समय पर भइल। समय पर गिनती भइल। सहदेव भारी मत से चुनाव जीत गइले। एगो समान्य सीट से दलित मुखिया बन के भदेहर पंचायत में एगो नया इतिहास रच देले। प्रवेश यादव हार से बौखला गइले। सहदेव के नाम वापस ना लेवे से खार खइले रहन। ओह दिन उनुकर खींस उबाल पर आ गइल। गिनती स्थल पर ही सहदेव पर हाथ छोडे के प्रयास कइले। बाकिर समर्थक आ पुलिस प्रशासन के चलते जादे कुछ ना कर पवले। गारी देत धमकी देवे लगले, सहदेउवा तोरा के खराब कर देब। तू आपन जिनिगी के उल्टी गिनती शुरू कर दे। जीअत बांच जइबे त कवनो काम लायक ना रह जइबे। तोर मुखिअई हम चले ना देब। देखतानी तू कइसे मुखिअई कर लेबे। प्रवेश यादव, सहदेव के नीचा देखावे से बाज ना आवत रहन। पूरा यादव बिरादरी सहदेव पर रंज रहे। हमनी के मुखिअई एगो नीच जात करी? अतना दिन खराब आ गइल ?

सहदेव के मुखिया बनते गांव में विकास के पंख लाग गइल। गांव के नली गली ,पंचायत भवन, सामुदायिक भवन,लइकिन खातिर उच्च विद्यालय पास करवा देले। गांव में धर घर शौचालय पास करवा देले। महिला के विधवा पेंशन,बृद्धा पेंशन के फारम खोज खोज के भरवलें। दउर धूप के सबके दिअवले। बजट के अभाव मे उच्च विद्यालय आ सामुदायिक भवन के काम रुकल रहे। शौचालय पहिले अपने से बनावे के रहे तब ओकर रोपया मिली।

सहदेव के गोतिया के एगो लइकी किशोरी तेज तर्रार होनहार। ऊंची उड़ान के सपना पलले रहे। गांव से पांच किलोमीटर दूर साइकिल से उच्च विद्यालय में पढ़ें जात आवत रहे। कमजोर आ दलित के दुश्मन डेग डेग। उहो दलित के लइकी पर ढेर के गिद्ध नजर रहे ला। प्रवेश यादव के लइका तुफनिया किशोरी के पाछा परल रहे। जब तब राह रोक के खाड हो जाय। उब चाभ त बोलते रहे। बात करें के दबाव बनावत रहे। बाकिर किशोरी ओकरा के भाव ना देत रहे। किशोरी के माई बाबूजी एह खातिर प्रवेश यादव से शिकाइतो कइले। थोरे दिन अहथिर रहे। बाकिर आदत से अलचार आ बिगड़ल रहले रहे।

किशोरी के घर में शौचालय अभी बनल ना रहे। पास हो गइल रहे आजकाल्ह में बनावे के काम लागे वाला रहे। मजबूरन बाहर जाय परत रहे। किशोरी जेने शौच खातिर जात रहे एक दिन तुफनिया देख लेलस। कुछ दिन ओही समय पर तुफनिया ओने जाके लुका के देखत रहे। जब ई निहचिंत हो गइल कि ई रोज एनिए आवे ले। तब एक दिन तुफनिया चार गो संघतिया जोरे दारू पी के ओनिए ढूका लाग गइल। ओह दिन किशोरी संगे ओकर सहेली गइल रहे। चारो मिल के दूनो के दबोच लेले सं। किशोरी के सहेली त कसहूं छोड़ा के भाग आइल। अब चारो किशोरी पर टूट परले सं। तुफनिया किशोरी के गरियावे कि साली के कतना दिन से कहत रही कि प्रेम से हमार बात मान जो। सुनते ना रहे। अब अईठ, आज तोर सब अईठन झार देब जा। किशोरी के सहेली जवन भागल आईल त घर के

www.bhojpurisahityangan.com

दुआरी भीरी ओकरा ठेस लाग गइल। धडम से गिर गइल। दउर के ओकर माई उठवली आ जतली। थोरे देर अहथिर भइल त सब घटना बतवलस। लोग दउर के गइले तबतक देरी हो चुकल रहे। किशोरी जोरे जवन करे के रहे कर के फरार हो गइल रहन सं। किशोरी बेहोश रहे। उठा के ओकरा के शहर के सदर अस्पताल में भर्ती करावल गइल। बिहान भइला थानाध्यक्ष अइले। सहदेव राते में थाना के फोन से सूचना दे देले रहन । किशोरी के होश आ गइल रहे। चारो के नाम बता देलस। जांच में बलात्कार साबित हो गइल रहे। पुलिस के तत्परता के कारण चारो धरा गइले सं। ई चारो के धराय से यादव बिरादरी में दलितन के प्रति अउरी खींस चढ़ गइल। कुछ यादव कहे लगले, लइका गलती क देले सं त केस मोकदमा काहे क देले सं ? बूझ बटोराइत ओही में कवनो राह निकालल जाइत। ओहनि से माफी मंगवावल जाइत। कुछ रोपया के दंड लगा के ममिला इहें रफा दफा कर दिआइत। केस कके तनी मनी चमरा गलती कइले बाडे सं। निशाना पर सहदेव रहन।

(. 7.)

एगो त दलित , दूसरे में मुखिया हो गइले । उहो जेनरल सीट से। भला जातिवादी लोग के कइसे सोहाई। ओहू मे स्वतंत्रत रूप से काम करत रहन। केहू के पिछलग्गू ना बनले। सबके आसरा पर पानी फिर गइल। एह से अउरी आंख में गडत रहन।

केस मोकदमा वाला घटना निकहा छव महीना से जादे बीत गइल रहे। गांव के लोग लगभग भूल चुकल रहे। बाकिर यादव बिरादरी तरे तरे खउलत रहे । मार्च के महीना आ गइल । अगिला महीना में डां आंबेडकर जयंती रहे। हर साल सहदेव जयंती बड़ी धूमधाम से मनावत रहन। एहू साल बैठक में जयंती साधारण किसिम से मनावे के तय भइल । खाली डां आंबेडकर के फोटो पर पुष्पांजलि कइल जाई। ई तय भइल कि हर साल अइसन प्रभात फेरी मौन धारण कके निकालल जाई।

जयंती खतिर सभे लोग थोर ढेर चंदा देले। जयंती के दिन आ गइल। सब तैयारी हो गइल रहे। ओह दिन सबके घर में पुआ पकवान बनल रहे। जयंती के दिन सबेरे में प्रभात फेरी मौन धारण कके निकलल। आगे आगे सहदेव उनुका बगल में एगो आदमी डां आंबेडकर के फोटो छाती से लगा के चलत रहन। गांव के हरेक मोहल्ला से प्रभात फेरी खूब बढ़िया से निकलल। कवनो किसिम के केहू के दिकत ना भइल । आखिरी में जसही यादव टोला में प्रभात फेरी गुजरे लागल। उहां पथराव शुरू हो गइल। यादव बिरादरी के नजरी में चढल रहन सहदेव। साथे यादव लोग के डां आंबेडकर से नफरत रहबे करेला। मेहरारू गोबर, पत्थर फेके लगली सं । भगदड़ मच गइल। प्रवेश यादव के मोका मिल गइल बहती गंगा में हाथ धोवे के। छत पर से सहदेव के ऊपर गोली चला देले। सहदेव के सीना फार के गोली निकल गइल । खून के धार फेके लागल। सहदेव जगहे पर गिर गइले, प्राण पखेरू उड चुकल रहे।

❑❑

❍ पकड़ी , आरा ,भोजपुर , बिहार

शरण आशुतोष

कस्तूरी हियरा

अइसे त उनकर नाम रघुनाथ मिसिर ह, बाकिर गाँव में बड़ से छोट तक सभे उनका के रघ्घू बाबा के नाम से जानेला आ पुकारेला। घर के हाता में, नीम के छाँह तरे रघ्घू बाबा खटिया पर लेटल रहन। उनकर दिन के अधिकाह समय एकरे छांह में बीते ला। घर के भीतर जाये से घबड़ा लन। कभी आँगनैया बाल-बच्चन से गुलजार रहत रहे, आजु सन्नाटा के राज बा।
उनकर मेहरारू,एकलउता बेटा,पतोह आ पाँच बरीस के पोता,नाव से नदी पार करत घड़ी, बढ़िआइल नदी के भेंट चढ़ गइल रहन। खाली तीन बरीस के पोती, मुनिया के मलाह बचा सकल रहन।

ओह हादसा के बाद रघ्घू बाबा के जीवन मुनिया के ईर्द-गिर्द घूमे लागल। उनकर घर संभाले वाली अनुचरी गीता के गोद में मुनिया पले लागल। गीता आ ओकर मरद सोहन खेती-बाड़ी से लेके घर के सारा काम संभालत रहन। धीरे-धीरे जिंदगी फेर पटरी पर आवे लागल। लेकिन बिधना के मन त कुछ आउर रहे।

दू साल बाद, बरसात के शुरूआत रहे। शहर में जेमिनी सरकस आइल रहे। गाँव के कुछ मरद औरत के एगो टोली दिन के तीन बजे वाला खेल देखे जाय वाला रहे। मुनिया सरकस देखे खातिर मचल उठल। औरतन के सिफारिस पर रघ्घू बाबा के मन बदल गइल। टिकट के रुपिया दल के मेठ के देत बेरा कहलन,
“मुनिया के अकेले मत छोड़िहऽ लोग।”

पाँच बरस के मुनिया उछलत-कूदत सरकस देखे चल गइल। आखिरी खेला चलत रहे,तबे आँधी-पानी शुरू हो गइल। तमाशा खतम होते ही निकसे के जल्दीबाजी में ठेला-ठेली शुरू हो गइल। बाहर भी अगला शो के दर्शक जमा रहन। जोर से बिजली कड़कल, आ केने से दो एक गो बिदुकल साँड़ आ गइल। भगदड़ मच गइल। ओही घड़ी बिजली भी गुल हो गइल। घुप्प अँधेरा छा गइल। ओह बिपदा में मुनिया गाँव के लोग से बिछुड़ गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

मुनिया के खोज में गाँव के लोग कोई कोर कसर ना छोड़लन। मुनिया ना मिलल। थक-हारके लोग पुलिस भरोसे खोजल छोड़ देहलन। रग्घू बाबा आस ना छोड़लन। उनका बिसवास बा कि एक दिन ऊ मिली जरूर।

"रग्घू बाबा कहँवा चल गइल रहीं?"

लखन के माई के आवाज से रग्घू बाबा के धियान टूटल। पूछलन, "के हऽ? लखना के माई?"

"हँ।"

" थाना गइल रहीं । खाली हाथ लउट अइनी। जाने किस्मत में का लिखवा बा!"

" बिना जलखई के निकस गइलीं। गीतवा गरग-गरम कचउड़ी आउर घुघनी हमरा के थमा गइल बिया। ले के आवत बानी।"

लखन के घर बगल में ही रहे। ऊ जलखई लेके अइली आ रग्घू बाबा के सामने धरऽत कहली, "गरम-गरम खइतीं तब न सवाद मिलित। ठंढ़ा कचउड़ी चीमड़ भ गइल होई आ घुघनी बेसवाद।"

" जिनगिये बेसवाद भऽ गइल बा लखना के माई । अब का सवाद आ बेसवाद!"

रघुनाथ बाबा के टूअर अइसन उदास बोली सुन के लखन के माई के मन भर आइल।

दिन के खाना बनावे खातिर गीता अइली। ओकर घर, रग्घू बाबा के घर के ठीक पिछे बा ! दूनों घर के अंगनाई के अलग करत ईंट-सिमेंट के दिवाल खड़ा बा। एह से रग्घू बाबा के घरे चहुँपे खातिर, गीता के गली के चक्कर काट के आवेके पड़ेला। रग्घू बाबा खटिया पर खरहरे सुतऽल रहन। सबेरे वाला जलखई असही खटिया के सिरहाने जमीन पर धइल रहे। मख्खी भिनभिनात रही स। खटिया पर खरहरे सुतल देख के ओकर ममत जाग उठल। छिपुली आ कटोरी उठाके जलखई के घूरा पर फेंके चल देली।

"केतना मन से इनकर पसन के बनऽवले रहीं, सब अकारथ गइल।", जूठा फेंक के अइली त रघुनाथ बाबा के जगऽवली, "रग्घू बाबा उठीं। दिन निकहा चढ़ गइल बा।"

"गीता बबुनी?"

"हँ खाना बनाईं कि उपासे रहब?"

"खिचड़ी आउर आलू के चोखा बनाव जल्दी से। भूख लागल बा।"

"लागी ना ! काल्ह रात के भी कुछुओ ना खइनी। खाइब ना त सरीर कमजोर होत चल जाइ। जिनगी अपने दम जीये के होला बाबा!" गीता के बोली में मन के नेह भरल रहे।

"जिनगी कसहूँ कटत ही जाई, गीता बबुनी!"

गीता के आँख भर आइल।

"अइसन मत सोचीं! नजरिया बदलीं,जिनगी में मुसुकान भर जाई। बाबा आस के अँचरा बरीयार होखे ला।"

मुनिया के बिछुड़ला दस बरीस हो गइल रहे। रग्घू बाबा ओकर आस छोड़ चुकल रहन, लेकिन ओकर ईयाद पिछा ना छोड़त रहे। अपना के पूजा-पाठ, आ धरम-करम में लगवले रखत रहन। ओह दिनवा सनीचर रहे। ऊ महाबीर मंदिर से लवटत रहन। उनकरा साथे गाँव के सूरज देव मास्टर भी रहन। रास्ता में सूरज देव कहलन,

" रग्घू बाबा भभिस्य के केहू ना जाने। हमार मानीं त कोई लड़का भा लड़की के गोद ले लीहीं।"

"सुझाव त नेक हऽवऽ।"

रास्ता में रग्घू बाबा के पैर गढ़ढा में पड़ गइल। लड़खड़इलन, त सूरज देव थाम लेलन।

"अकेले मत निकलल करीं। दूनों अँखियन में माड़ा बा, ठीक से देखाई नइखे देत। आपरेसन काहे नइखी करवा लेत?"

" मन बना लेने बानी। जल्दीए कराइब।"

ऐने दू दिन से रग्घू बाबा बुखार में पड़ल रहन। बैसाख के महीना रहे। ऊपर आग बरसावत सूरूज आ नीचे धधकत धरती। गीता रग्घू बाबा खातिर काढ़ा लेले भुनभुनात लंगड़ात अइली, "कब से कहत बानी कि अँगना वाला भितिया में एकगो दरवाजा फोरवा दीं। रात-बिरात कब जरूरत पड़ जाय, के जानत बा।"

रग्घू बाबा के नजर गीता के पट्टी बन्हल गोड़ पर पड़ल।

" पैर में का भऽ गइल?"

"कुछुओ ना। तलवा में हलका फोरा पड़ गइल हा,ठीक हो जाई।"

फोड़ा के कारन समझत देर ना लागल, रग्घू बाबा के। कुछ बोललन ना। गीता आउर सोहन, दूनो बेकत के निसवारथ ,निरमल मन उनका से छिपल ना रहे। कई दिन से उनका मन में कुछ बिचार आकार लेत रहे। आज साकार करे के निरनय मन में बइठ गइल।

दू दिन बाद आँगन के भितिया में दरवाजा फोरवा देल गइल। बरसात खतम होते ही गीता-सोहन के देखरेख में रग्घू बाबा एक आँख के आपरेसन करवा लेलन। आँख में दवाई डालत गीता हँसत कहली, "अब बुझात बा दरवाजा फोरवावे के फायदा?"

" परिवार रहला के ई हे त सुख ह गीता बबुनी।"

कुछ दिन बाद रग्घू बाबा आपन कुल जायदाद के वसीयतनामा सोहन आ गीता के नाम लिख देलन। अगला मंगलवार दुपहरिया बाद रजिस्ट्री होखे वाला रहे। रग्घू बाबा हनुमान मंदिर से सूरज देव के साथे लवटत रहन। रग्घू बाबा के खोजत गीता भेंटा गइली। ऊ बहुत खुश आ उतसाहित रहे। हाथ के सरकारी नोटिस बाबा के देत कहली,

"बाबा मुनिया मिल गइल।"

नोटिस पढ़के सूरज देव मोबाइल पर तुरत थाना इंचार्ज से बात कइलन। बात करके रग्घु बाबा के बतवलन, "हमनी के

www.bhojpurisahityangan.com

महिला पुलिस स्टेशन चलके पहचान करे के पड़ी। रउआ घरे जाके तइयार होखीं। हम मोटरसाइकिल लेके आवत बानी।”

आस-निरास के बीच झूलत रघुनाथ बाबा महिला थाना के अंदर पाँव रखलन। महिला थानाप्रभारी बतवली कि पुलिस के हालिया दबिश में एगो लड़की बरामद भइल बिया। पूछताछ में ऊ आपन नाम मुनिया बतवले बिया। पुरान गुमशुदगी अभिलेख से मिलान के बाद रघ्घू बाबा के बुलावल गइल रहे।

कुछ कागज पर दस्तखत कराके उनका के लड़की के पास ले गइली थानाप्रभारी। लड़की डेराइल-घबड़ाइल सिमटल, टुअर अइसन टुकुर-टुकुर देखत रहे। रघ्घू बाबा दरोगा जी से कहलन,

“ मुनिया घबडाइल बिआ। हमरा के अकेला में बात करे दीं त बड़ किरपा होई।”

“ठीक बा बाबा। देरी जनि करब।” कह के थानाप्रभारी चल गइली।

रघ्घू बाबा लड़की के गौर से देखे लगलन। पंद्रह बरस के लड़की में पाँच बरीस के मुनिया के खोजत रहन। कभी बुझाय कि ओकर चेहरा में उनकर मुनिया झलकत बिआ,त कभी बेगाना अइसन। कब हूँ ओकरा में बेटा के अइसन नाक आ दादी अइसन लिलार देखाई पड़े,त अगले छन एकदमे अलग। ऊहापोह से निजात पावे के प्रयास में पूछलन,

“पहचानत बाड़ हमरा के,हम के हईं?"

“ना। हमार नाम मुनिया हऽ, लेकिन ना रउआ के पहिचान पावत बानी, ना इयाद हमार साथ देता। सब धुआँस रहल बा।”

निरास होके जसही बाहर जाए खातिर मुड़लन, लड़की उनकर पाँव पकड़ के बिलखे लागल ,

“बाबा छोड़के मत जाईं”

रघुनाथ बाबा बुत बनल खड़ा रहन। रघ्घू बाबा के मन डगमगात रहे। भीतर भीसन द्वंद्व चलत रहे ।

“अगर ई हमार मुनिया ना होखे त? आ अगर ई हे होखे तब?”

“बाबा, दरिंदवन के हवाले मत करीं! सड़क पर अकेले रोअत-बिलखत अबोध बच्ची के करेजा से लगाके जवन माई-बाबू हमरा के पलले-पोसले रहन, ऊ अब ई दुनिया में नइखन।” लड़किया के लोर उनकर पाँव पखारत रहे।

“हमरा के बेटी ना त नौकरानी समझ के ही रख लीं। कोई सिकायत के मउका ना देब।”

रघ्घू बाबा धरमसंकट में पड़ल रहन।

दोसरा के मुनिया के आपन मान के रखल कहाँ तक जायज बा? आउर नइखी मानत, त ई अनाथ असहाय लड़की के फेर ओही बेरम दुनिया के हवाले करल पाप ना होखी? एक ओर वात्सल्य से भरल हृदय, असहाय के प्रति कर्तव्य और करुणा, आ खुद के अकेलापन और दूसर ओर मुनिया के चेहरा में माई-बाप, दादा-दादी के चेहरा खोजत गाँव के लोग के खोजी नजर। निरनय हर छन कठिन होत जात रहे। अंत में उधेड़बुन से बाहर निकल अटल निर्णय लेलन। ‘लोग जे समझे, समझत रहे। हम कहतनी कि ई हमार पोती मुनिया हऽ।’ मुसकइलन आ कहलन, “ लोर पोंछ बेटी। तूँही त रघ्घू बाबा के पोती, मुनिया हऊ। रोअल बंद करऽ।”

काफी दौड़-धूप और कानूनी कार्रवाई के बाद ‘बाल कल्याण समिति’ से मुनिया के लेके, रघ्घू बाबा घरे अइलन।

रास्ता में रघ्घु बाबा सूरज देव से कहलन, “आजु बरिसों बाद मन अँजोरिया से भर गइल।”

निसन्तान गीता ओकरा के टीका लगा के आरती उतारत रही, त कहलन “ तोहार बेटी ह ई। एकरे कमी रह गइल रहे तोहार जिनगी में,आज उहो पूरा हो गइल।”

गीता के आँख भर आइल आ मुनिया के करेजा से लगा लिहलीं।

❑❑

❍ पटना , बिहार

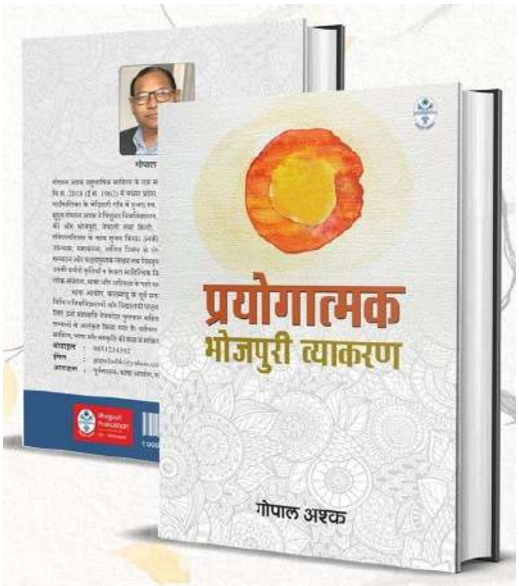

www.bhojpurisahityangan.com

माटी क रोआई

डॉ. सुरेश कुमार मिश्र 'उरतृप्त'

कठपुतरी नियर काठ के घोड़ा पर बइठ के जब लइका हँसत रहे, तब ई माटी कइसन महकत रहे, याद बा? ओह घरी, जब सांझ के अन्हरिया दुआर पर आके गोड़ पसारत रहे, तब एगो लइकी अपने आँचरा में कपड़ा के गुड़िया छिपइले रसोई के कोना में बइठ जात रहे। ऊ गुड़िया ना रहे, ओकर करेजा रहे। माटी के चूल्हा, काठ के चकई, अउर बाँस के कमान से छूटल तीर... ई सब कवनो खेल ना रहे भाई, ई त पूरा क पूरा जिनगी रहे। लइके के हाथ में जब माटी के खिलौना आवत रहे, तब ओकरा के छुअते-छुअते मालूम पड़त रहे कि ई ओही माटी क अंश हवे जेकरा में ओकर पुरखा समा गइल बाड़ें। कुम्हार के चाक पर घूमते भइल ओही खिलौना में गाँव के कवनो बूढ़ कारीगर के काँपत हाथन क सिसकी छिपल रहत रहे। ऊ खिलौना जब टूटत रहे, तब कवनो लइका ना रोअत रहे, बल्कि ओकरा भीतर क एगो कोमल मन भरभरा के ढह जात रहे।

बाकिर समय! समय त अइसन कसाई हवे जे चुपचाप आवेला अउर सगरी नेह-छोह बटोर के कबाड़खाना में फेंक देवेला। फिर धीरे-धीरे हवा बदल गइल। गाँव के ओही अमराई में जहाँ कंचे खनकत रहन, उहाँ एक दिन अजीब सन्नाटा पसर गइल। लइके ओसारे से गायब हो गइले। कहाँ गइले? कवनो अइसन गर्त में, जेकर थाह आजु तक कवनो माई-बाबूजी ना लगा पवलन। प्लास्टिक क चमकदार, बेजान अउर कड़कड़ात भइल डिब्बा सभ घर में घुस गइल। ऊ लेगो सेट्स, ऊ पजल्स, ऊ छुअते चमके वाला मोबाइल क स्क्रीन... ई सब खिलौना ना रहन, ई सब त ओही मासूमियत क कफन रहे जेकरा के हमनी के ओढ़ा देहनी जा।

अब खेल में कवनो संगी-साथी ना रहे। अब कवनो लइकी अपनी गुड़िया के बियाह करे खातिर पड़ोस के सहेली के ना बोलावत रहे। खेल अब कवनो बंद कोठरी में, एक गो अकेले लइका अउर ओकर अन्हार स्क्रीन के बीच क अइसन सौदा बन गइल जहाँ रूह क कवनो जगह ना रहे। वीडियो गेम्स के ओही आभासी दुनिया में लइका अइसन भूलभुलैया में धँसत गइल कि ओकरा मालूम ही ना चलल कि कबे ओकर हँसई, ओकर रोआई अउर ओकर बचपना ओही स्क्रीन के भीतर कवनो पिक्सेल बन के बिखर गइल। रोबोटिक्स अउर वर्चुअल रियलिटी के नाँव पर हमनी के लइकन के हाथ में अइसन ज़हर थमा देहनी जा, जे रोज धीरे-धीरे ओकरा भीतर के इंसान के मारत रहे।

माई-बाबूजी सोचत रहन कि लइका चालाक होत बा, ओकर बौद्धिक विकास होत बा। बाकिर केहू ना देखल कि ओही चालाकी के पाछे ओकर आँखिन क नूर गायब होत रहे, ओकर रीढ़ क हड्डी टेढ़ी होत रहे, अउर ओकर मासूम करेजा कटकटा के पत्थर बनत रहे। स्वदेशी कारीगरी के ऊ सिसकती भइल रूह त कबे क दम तोड़ देले रहे, अब त बस चीन अउर बड़-बड़ देसन से आइल केमिकल अउर प्लास्टिक क ऊ नग्न नाच रहे, जे लइकन के फेफड़ा में ज़हर बन के घुलत रहे। बाज़ार अउर ई-कॉमर्स क अइसन अजगर फन कढ़ले बइठल रहे कि हर दुआर पर कवनो ना कवनो नया प्लास्टिक क डिब्बा आके गिरत रहे, अउर हर डिब्बा के साथे घर क एगो कोना अउर अन्हात जात रहे।

मन भर आवेला जब सोचिला कि ई कइसन कल रहे, कइसन आज बा, अउर कइसन कल होइ! साँस थम जाला ई सोच के। एक दिन अइसन आई, जब हर घर में सिर्फ मशीन होइहें। लइका मशीन नियर पैदा होइहें, मशीन नियर खेलिहें अउर मशीन नियर मर जइहें। प्रकृति रोअत बिया, ई धरती प्लास्टिक के बोझ से कराहतिया, बाकिर हमनी के अन्हार कुआँ में गिरत जा तानी जा।

एगो बात बताईं? परसों रात के जब पूरा सहर सो गइल रहे, हम अपनी घर के कबाड़खाना में गइनी। उहाँ धूल से तोपाइल एगो पुरान संदूक रहे। ओकरा के खोलनी त ओकरा भीतर ओही पुरान माटी के गुड़िया क एगो कलाई मिलल। ऊ कलाई कवनो केमिकल क ना रहे, ओकरा में हमरी माई के नेह क सुगन्ध रहे। हम ओकरा के हाथ में उठवनी अउर जइसे ही ओकरा के अपनी छाती से लगवनी, ओकरा भीतर से कवनो रोए क आवाज़ आईल।

हम डर गइनी। मोबाइल क फ़्लैश जला के देखनी। ऊ माटी क टूटल हाथ रोअत ना रहे, ओकरा में से खून चूअत रहे। अउर बगल में बइठल हमार आपन लइका, अपनी हाथ में चमचमात भइल नया मोबाइल लेले, अइसा बेजान आँखि से हमके देखलस जइसे ऊ कवनो ज़िंदा इंसान ना, बल्कि ओही प्लास्टिक क एगो रोबोट होखे। हमार करेजा मुट्ठी में आ गइल। हम ओकरा के गोदी में उठावे खातिर हाथ बढ़वनी, बाकिर ऊ हमके पहचिनबे ना कइलस। ओकर हाथ एकदम ठंढा रहे... कड़कड़ात प्लास्टिक नियर, बेजान, एकदम बेजान। हम चिल्लाए के चाहनी, बाकिर हलक से कवनो बोली ना निकलल। सिरिफ एक गो आह निकलल, जे कबाड़खाना के ओही अन्हार में दम तोड़ देलस।

❑❑

❍ वाराणसी (उ०प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

युद्ध विराम आ लइकन

कनक किशोर

युद्ध विराम के लइकन सब ओह जस ना
समझले सं जइसे बुजुर्ग,

संधियन के तइयारी
शांति-संधी,
सफ़ेद पताका,
शांति-सम्मेलन में परोसल जायेवाली
स्वादिष्ट कॉफी के सुगंध
ई सब प्रायोजित युद्धन के शाश्वत सत्य ह,
ई बढ़िया से पता बा बुजुर्गन के .

लइकन अलग होखेलन सं
प्रेम अउर विश्वास से लगाव होला
उन्हिन के
बिना दीवार आ फर्श वाला घरो में
उन्हिन के खेल सकले सं
धूर आ राखि में,

माँग सकले सं मधु
सामूहिक बलात्कार पीड़ित माई से,
ओहनी के देखि सकले सं तरइयन भरल आकाश में
परियन के पंखियन के हलचल,
खड़ा-खड़ा जर गइल
सरू अउर ताड़ के पेड़न के फुनगी पर

युद्ध विरामो में देखले सं
कई गो ना बुजुर्ग
कि कइसे उन्हिनके बचत, संपत्ति
भावना आ आशा
फिसलत जात बाड़ी सं
उन्हिन के हाथ से
छुप के रचले सं
षड्यंत्र, अभिशाप, विनाश
आ बदला के योजना,

कबो ना कबो
कहीं ना कहीं
कवनो छोट-बड़ युद्ध में योगदान होला
बुजुर्गन के,
एही से युद्ध विराम में उन्हिन के
दिखाई देला
आपन अपराधिक मन के डर,

लइकन के युद्ध के कारण से
कवनो सरोकार ना होखे
युद्ध के खातिर बड़ लोगिन के
दोषी ठहरा सकले सं,
दे सकले सं खौफनाक घटनन के गवाही
भगवान के नाम लेके माँग सकले सं
कैफियत
शस्त्र आयुध के, होखल नुकसान के
खामोश आ खोखला आदर्श
अउर मुखर निष्ठुरता के,
युद्ध विराम के दौरान देख सकले सं
एगो युद्ध रहित भविष्य के सपना।

❑❑

मूल: चिरश्री इंद्रसिंह (उड़िआ)
अनुवाद : कनक किशोर

❍ **राँची झारखंड**

www.bhojpurisahityangan.com

धीरेन्द्र पांचाल

पवनसुत आवा ना

लंका करा बिरान पवनसुत आवा ना
नापा तू असमान पवनसुत आवा ना

धरम करम क होत बा हानि
पानी तोही बचावा
फंस गइलें कुल दुबरा
अबरा अब्बो ठोंके दावा
मेहना मारी गांव जहान पवनसुत आवा ना
लंका करा बिरान पवनसुत आवा ना

बिरथा हो जाई दान दिहल कुल
मान बची ना तोहरो
सेवक हउआ रामलला क
भला न होई केहरो
एहरो करा धियान पवनसुत आवा ना
लंका करा बिरान पवनसुत आवा ना

मानस क चौपाई बचले
काम चली न मालिक
पुरखन क पगड़ी मुँहवा पर
सबके पोती कालिख
सरयू क अभिमान पवनसुत आवा ना
लंका करा बिरान पवनसुत आवा ना

गज गोनिया से नाप के नाही
बनल केहू ह भगवन
बसूला अउर रुखानी में
फिर काहें होता अनबन
फेंका गदा उतान पवनसुत आवा ना
लंका करा बिरान पवनसुत आवा ना

❑❑

❍ भीषमपुर , चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

डॉ राम बचन यादव

एह लोकतंत्र में सब बा जायज

हिंसा-नफरत के बोली जायज /बम-बारूद अ गोली जायज
बे मौसम के होली जायज / एह लोकतंत्र में सब बा जायज!

आक्सीजन के चोरी जायज / बेईमानी-घुसखोरी जायज
बयपारिन के जमाखोरी जायज/एह लोकतंत्र में सब बा जायज!

बिन अपराध के जेल जायज / मीडिया के घिन खेल जायज
चोर अ पुलिस के मेल जायज /एह लोकतंत्र में सब बा जायज!

राजा एकदम बहरा जायज/चेहरे पे कई चेहरा जायज
बिन दुलहा के सेहरा जायज /एह लोकतंत्र में सब बा जायज!

महंग छिच्छा-पढ़ाई जायज /महंगी भइल दवाई जायज
साहेब के सहबाई जायज / एह लोकतंत्र में सब बा जायज!

झुठहा के सम्मान जायज /सच्चा के अपमान जायज
पदासीन बेइमान जायज /एह लोकतंत्र में सब बा जायज!

किसानन के हकमारी जायज/ कविअन के दरबारी जायज
निजीकरण सरकारी जायज / एह लोकतंत्र में सब बा जायज!

न्याय के नाम पे खेला जायज / देह बयपार के मेला जायज
झगड़ा झंझट झमेला जायज / एह लोकतंत्र में सब बा जायज!

वंचित के अपमान जायज/ हिन्दू अ मुसलमान जायज
अंड-बंड फरमान जायज/ एह लोकतंत्र में सब बा जायज!

धरम के गरम बजार जायज/ हत्या अ बलतकार जायज
लास पे सत्ता प्यार जायज / एह लोकतंत्र में सब बा जायज!

❑❑

❍ आदित्य नारायण राजकीय
इंटर कॉलेज, चकिया–चंदौली

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ हरेश्वर राय

आफातारा में

आफातारा में जी आफातारा में जी आफातारा में
हामार जिउआ परल बा आफातारा में।

आँगन ओसारावा दुआरावा चिराइल
बीचहीं से तुलसी के चउरा फाराइल
मिलल दरकल देवालि हमरा बाखारा में
हामार जिउआ परल बा आफातारा में।

बगली में पइसल बा जेठवा महीना
कापारा प बइठल बा सहुआ कमीना
कुछु रोजहीं टूटत बा हमरा भितरा में।
हामार जिउआ परल बा आफातारा में।

आरे आईं आईं पंडिजी गोड़ लागतानी
बुचिया ले आउ माँजी लोटवा में पानी
जाँची भगिया हमार आपना पातरा में
हामार जिउआ परल बा आफातारा में।

हामार सपना रहे कि राह नया बनाइब
डगर- डगर नगर गाँव सुन्दर बनाइब
राहि कटलसि बिलाइ बीचहीं जतरा में
हामार जिउआ परल बा आफातारा में।

❑❑

❍ सतना, मध्य प्रदेश

अवेद्य आलोक

कहीं खो गइल बा हमार गाँव

बँसवाड़न के झुरमुटन में
दिसत नइखन आशियाना।
कहाँ चल गइलें
हुदहुद, बगुला, कौआ
का निरामिष ना रहल हमार गाँव?
ना ना ई ना ह हमार गाँव।
कहीं खो गइल बा हमार गाँव।

रामलीला के राम साकिर मियाँ,
कहाँ गइल उनकर राम-अभिनय कऽ जिद?
काहे अब उनुका खाली ईदे भावे लागल?
कहीं केवटे त ना ले भागल नाव?
के जाई मियाँ जी के धोवे पाँव
आ सीमा पार के बातन में फँस चुकल बा हमार गाँव?
ना ना ई ना ह हमार गाँव।
कहीं खो गइल बा हमार गाँव।

आम, इमिली, गन्ना
ना चोरावेलन नन्हा - मुन्ना
कहाँ गइल बचपन?
कंचा खेलत ऊ लड़कपन?
बचपने में साफ-सुथरा रहे लागल पाँव।
ना ना ई ना ह हमार गाँव।
कहीं खो गइल बा हमार गाँव।

कहाँ ऊ पीपर के छाँव,
जहवाँ खेत से लवटत थाकल पाँव
करत रहलें कुछ पल विश्राम।
एक तीली से सुलगावत तीन-चार बीड़ी,
एक-दूसरा में बाँट,
चल पड़त कहत—"अच्छा, भइया, राम-राम।"
एहिजा त हर जगह लहूलुहान छाँव।
ना ना ई ना ह हमार गाँव।
कहीं खो गइल बा हमार गाँव।

ऊ पकड़म-पकड़ाई, ऊ लुकाछिपाई
बच्चन के खेल में माई लोगन के लड़ाई।

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ निर्दोष आग के बुझवलस के?
अरे, बेकारे बहत बा बरखा के पानी।
चींटी चढ़ा के अब केहू ना तिरावेला कागज के नाव।
ना ना ई ना ह हमार गाँव।
कहीं खो गइल बा हमार गाँव।

ना चौपाल, ना कीर्तन के ताल,
ना मानस के चौपाई, /ना गीता के दुहाई,
ना महाभारत के कहानी,
ना आल्हा-ऊदल के रवानी। / घर-घर टीवी के निशानी।
उफ़! एहिजा भी बिग बॉस के रवानी।
धरम से निरपेक्ष लागता ई ठाँव।
ना ना ई ना ह हमार गाँव। /कहीं खो गइल बा हमार गाँव।

घर अंगना सब बँटाइल मिलल
दुआर पऽ कऽ नीम सुखाइल मिलल
जे झुक झुक चलत रहे /उ त गज़बे तनल हऽ
लइका ओकर एसडीएम बनल हऽ
मेला कऽ जमीन पऽ शहर बिकात मिलल
स्मार्ट फोन खातिर पतोहिया उदास मिलल
देले बा मोबाइल इहों नीमने घाव
ना ना ई ना ह हमार गाँव /कहीं खो गइल बा हमार गाँव।

निंदिया के रानी, चनमा के मामा बतावे वाली माई।
बाइस्कोप त कबो काँधा पर बइठा
मेला देखावे वाला बाबूजी।
राह निहारत बाड़ें दुआर पर /अगोरत राह कुहूकत अकेले।
रामायण के अँगना में महाभारत कऽ दाँव।
ना ना ई ना ह हमार गाँव। /कहीं खो गइल बा हमार गाँव।

आ मन, अब लवटऽ चलीं।
दशहरा के छुट्टी में फेर आइब।
मिल जाव तब शायद हमार गाँव।
अभी त शहर से चल के शहरे आ गइल बानी।
रामे जाने केने आ गइल बानी।

❑❑

❍ सी-6/354, यमुना विहार, दिल्ली - 110054
मोबाइल 9871595723

अंकुश्री
❍ 8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)–834 010

बिरधाश्रम में माई

कहके गइल जल्दी आयब, काहे आज तकले ना अइल ?
बोल बबुआ कब ले अइब, माई के एकदम बिसरइल ?
करिआ केश रहे भर माथ, ऊ सब भकभक गइल उजराइल,
देखब त पहचान ना पइब, हमार सूरत बा झुरिआइल।
हर छन राह निहोरेनी, दिन हर कागज पर लिख लेनी
अपना टकटकी के लेखा, हम केहु के कबो ना देनी।
जवन साड़ी पहिन के अइनी, ऊ जोगा के रखले बानी
अइब जब तू पहिरेब हम, तहार नज़र जल्दी पहचानी।
तहरा बा रुपया-पइसा, आ कोठा-बारी बा बबुआ,
हम त पड़ल बानी इहवाँ, अँचरा में नइखे ढेबुआ।
भोरे चल जानी छत पर, तहार देखेनी हम रहिआ
दू दिन खातिर छोड़ गइल, होई दू दिन तहार कहिआ।
भर दिन कट जाला हमार, देखत-देखत तोहरे रस्ता
इस्कूल से तू आवत रहल, आपन टंगले भारी बस्ता।
जवन बेटा के जनम पर, दुल्हिन घर हमर छोड़वइली
हमरा बारे पूछला पर, ऊ ओकरा के का बतइली ?
देखेनी बाल-गोपाल, पोता के सूरत लउकेला
दुआर पर खेलत होई, सोच-सोच मनवा चहुकेला।
तहरा से पूछला पर तू, हमार कवन पता बतावेल ?
घर में चर्चा होत होई, तबो काहे ना तू आवेल ?
एक बेरा देख लेती, हम अपना बाबु के सुरतिया
जिनिगी हमर बीत जाइत, इयाद क के ओकर मुरतिया।
अइत पोता के लेके तू, भले ना देत हमरा कोरा,
दूर से देख लेती हम, कइसन बाटे तहार छोरा।
इहाँ बेवस्था बा नीमन, जिन्दगी हमार बीत जाई
बीच-बीच में मिल लेत त, सूखल रोटी होत मलाई।
कुछ लोग इहाँ आवेला, घरे जेकरा नइखी माई
अबहीं त हम जिंदा बानी, तहार मन काहे छछनाई ?
अवनिहार सबके इहवाँ, पूरा खुलल रहेला चेटा
मन ना अघाय ला सबके, ओह लोगन के कहते बेटा।
तू हमर पेट के जामल, तहरा कइसे भला भुलाईं,
देखे खातिर मन बेकल, आखिर हईं तहार हम माई।
एक बेरा तू आ जइत, तब चैन हमरा मिल जाइत
तन के का ठेकाना बा, ना ही बाटे कवनो साइत
तहार रस्ता ताक-ताकके, हमार आँख बिआ पथराइल,
कइसन तहार मन बाटे, हमर इयाद कबो ना आइल ?
सूरत तहार मन में बा, करेजा पर चलेला छूरा,
एको दिन तू चल अइत त, हमर इच्छा हो जाइत पूरा।
खेत-बधार व घर-दुआर, सब कुछ छोड़ इहाँ चल अइनी,
पूत कोख से जन्मल हव, बिसार तहरा के ना पइनी।

❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी गजल

मनोज भावुक

1.

जेकरा में जड़ रहे उहे भीतर ले गड़ गइल
बाकी हवा के झोंक से अपने उखड़ गइल

शिकवा-गिला से फायदा कुछुओ त ना भइल
बाकी रहे जे ऊहो त रिस्ता बिगड़ गइल

लड़की के भाग आज से ऊ अजनबी बनी
सिन्दूर जेकरा नाम के माथा में पड़ गइल

अपना घरे में हार के बइठल उदास बा
ऊ जे कि बात-बात पर दुनिया से लड़ गइल

कइसन रहे फसाद ई ऊहे बता सकी
जेकर ए मार-काट में दुनिया उजड़ गइल

दिल हो गइल उघार त 'भावुक' के का कसूर
जब आज बाते बात में दरिया उमड़ गइल

2.

गाँजल बा घरे भक्त के तोसक आ रजाई
फुटपाथ प भगवान बा कठुआत ए भाई

कलुअन के घरे भूख से मर जात बा लइका
ललुअन के घरे रोज बा अरुआत मिठाई

नफरत के जे तूफान सहत बाटे हर एक रोज
एक रोज उहे दीप मुहब्बत के जराई

चहलीं त बहुत काठ से कुछ ना कहीं, बाकिर
झरिये नू गइल आँख से जज्बात ए भाई

मझधार से हम बांच के अइनी जे किनारे
देवास प भगवान से भखले होई माई

शुरुआत भइल बाटे अभी जंग के 'भावुक'
हक ना मिली जब मांग के त छीन के खाई

3.

बन के पागल घुमत बानी हम रोड पर
काटे लागल बा हमरा के अब अपने घर

गाँव छोड़ले रहीं आस लेके बहुत
ठाँव कतहीं मिलत नइखे सउँसे शहर

आज ले ना ठहरनी, ना टिकनी कहीं
आज ले हम कहत बानी रस्ते के घर

बात बोलऽ कि मुर्दा समय जी उठे
गीत गावऽ कि काठो प होखे असर

हमरा अँखियन के भाषा समझ लेते ऊ
जो मुहब्बत के उनका में होइत नज़र

काश! 'भावुक' कबो हमके ऊहो सुने
जेकरा खातिर गज़ल कहनीं हम उम्र भर

❑❑

(***लेखक मनोज भावुक भोजपुरी साहित्य आ सिनेमा के जानकार हईं.***)

❍ नोएडा (उ०प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

कजरी

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

1

अइलें नाही तोहरो बिरनवाँ हो,
सवनवाँ आई गइलें ननदी।
आई गइलें ननदी हो, आई गइलें ननदी
सवनवाँ आई गइलें ननदी।

गोतिनी मोरी चलेले अतिराइल
अपने पियवा के रंग में रंगाइल
कि सून लागे हमरा भवनवाँ हो,
सवनवाँ आई गइलें ननदी।

भोरहीं सिवाने सुनाले कजरिया
रहिया निहारत तोहरी गुजरिया
कि मानि लेता हमरा कहनवाँ हो,
सवनवाँ आई गइलें ननदी।

बिरहा के मारल तोहरी सजनियाँ
रतिया सेजिया आवे नाही निनियाँ
कि लोरे सउनाइल नयनवाँ हो,
सवनवाँ आई गइलें ननदी।

आई गइलें ननदी हो, आई गइलें ननदी
सवनवाँ आई गइलें ननदी।

2

बहऽ लागल बरखा बयार हो,
नाही अइलें सजनवाँ।।

बरसेला सगरों झमाझम पनियाँ
चुवेले मड़इया, चुवऽ लागल छन्हियाँ
डूबल जाला बहरी ओसार हो,
नाही अइलें सजनवाँ।।

भर गइल सभका खेतवा में पनियाँ
भोरहीं से लाग जाई सभके रोपनियाँ
हुलसिहें रोपना निहार हो,
नाही अइलें सजनवाँ।।

भर-भर दिन हम ताकीले रहिया
हमरा बलम जी अइहें कहिया
सून लागे बखरी-बघार हो,
नाही अइलें सजनवाँ।।

3

रहि रहि उमड़े कारी बदरिया
रिमझिम परे फुहरिया ना।
परे फुहरिया ना हो,
रिमझिम परे फुहरिया ना।

पियवा भइल बा परदेसिया
नाही भावे सेजरिया ना।

झुलुआ परल कदम के डारि
सखियाँ गावें कजरिया ना।

झूलत राधा, झूलें मोहन
बन बन बजे बसुरिया ना।

हमरो सावन हो मनभावन
घरवाँ अवतें संवरिया ना।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

www.bhojpurisahityangan.com

योगेन्द्र पाण्डेय

गीत

1.

जहवाँ डाल पे चिरई चहके, पपिहा गीत सुनावेला।
चलऽ बबुआ गउँवा के ओर, आपन माटी बुलावेला।।

बाग-बगइचा, खेत-खरिहानी, आपन हउवे इहे निशानी।
भाई, शहर के मोह तू छोड़ऽ, आव मिल के करऽ किसानी।
जहवाँ ऊँख के महिया महके, सरसों मन हरसावेला।
चलऽ बबुआ गउँवा के ओर, आपन माटी बुलावेला।।

घर-परिवार के संगे रहिअ, माई-बाप के सेवा करिह।
भाई-बहिन के आँखि में रहिके, नेह-प्रेम, दुलार कमइह।
एही माटी में खेल-कूद, बचपन के याद दिलावेला।
चलऽ बबुआ गउँवा के ओर, आपन माटी बुलावेला।।

2.

चान के किरिनिया में , रतिया धोआयिल बा
जाने कउन सुगना पे , मनवा हेराइल बा।।

रुनझुन रुनझुन बहे पुरवईया
छोड़ी परदेस घरे चली आव संइया।
कारी कारी बदरा से पतिया भेजाईइल बा
जाने कउन सुगना पे, मनवा हेराइल बा।।

अमवा के डरिया पे कुहूके कोयलिया
रतिया के रातरानी महके दुअरिया।
नेहिया के रंगवा से हियरा रंगाइल बा
जाने कउन सुगना पे मनवा हेराइल बा।।

❑❑

❍ ग्राम- बभनौली पाण्डेय, पोस्ट- सलेमपुर,
जिला- देवरिया, उत्तर प्रदेश

डॉ सुनील कुमार उपाध्याय

लउके नाहीं इनार

का गइनी परदेश भुलाइल
आपन गांव जवार।

१.माई के सब प्यार भुलाइल
भाई के सत्कार भुलाइल
कतनो बाबा डंटले बोलले
खून ना भईल सवार
भुलाइल आपन ------

२.भूसा वाला खोंप भुलाइल
रांहट ढेंकुल दोन भुलाइल
गांज पेठाढ़ी वाला बिसरल
डोली अऊर कंहार
भुलाइल आपन------

३.हर जुआठ दोआली पैना
कोल्हु अब त इयाद परे ना
हेंगी बरही खुरपी हंसुआ
हरीश ना हर के फार
भुलाइल आपन------

४.खोंसी पाठी पाड़ा पाड़ी
भंईस गाय ना नाद पे दाढ़ी
बाछा बाछी सपना भईले
लऊके नाहीं इनार
भुलाइल आपन------

५. फेंसा लयनु जरल खखोरी
दूध घीव ना बिसरे मोरी
ढेलगर दही बकेन भंईस के
ना अब लिखल लिलार
भुलाइल आपन------

६.चोंथा बेरहिन मकई रोटी
साग वाग के साथ सहोटी

www.bhojpurisahityangan.com

धूकल सिरफल कोन बा सपना
गुदिला पर बा मार
भुलाइल आपन------

७. ओखर मूसर जांत कुदारी
सिपुली मऊनी कहां निहारीं
भोर परल महुआ के लाटा
बड़हर आम अंचार
भुलाइल आपन------

८.सरसो बथुआ बूंट खेसारी
साग बनावस राम दुलारी
भात बने नयका चाऊर के
खाईं सोच बिचार
भुलाइल आपन------

९.गुल्ली डंडा दोल्हापाती
सतगोटिया में सभे संघाती
गोली चिक्का बांड़ी छूटल
क्रिकेट के भईल बहार
भुलाइल आपन------

१०.कवने जतरा अइनी बहरा
छूट गईल सब अंगना दुअरा
अंग्रेजी भोजन सब इहवां
बेधे हिया हमार
भुलाइल आपन------

❑❑

❍ प्रोफेसर कालोनी मनोहरपुर
कछुआरा, पटना -८०००२७

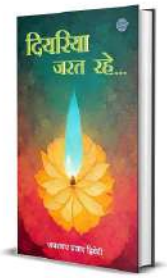

सुरेश मिश्र

ज्योतिर्लिंग सोमनाथ पर कजरी

चला घूमि आई सोमनाथ धाम सखी
लइ भोले क नाम सखी ना।

नीलकंठ, डमरू वाले,
सारी दुनिया में निराले,
जे भी जल चढ़ावइ,पूरा होला काम सखी
लइ भोले क नाम सखी ना।

हौं सौराष्ट्र के अभिमान,
करइं देव भी गुणगान,
भक्त पुण्य घट भरइं जहां अविराम सखी
लइ भोले क नाम सखी ना।

अइलें लूटइ आतताई
झोली भरि गइल हो भाई
सोना-चांदी पइलें म्लेच्छगण तमाम सखी
लइ भोले क नाम सखी ना।

मिलल देश कइ आजादी
भइ पटेल कइ मुनादी
जीर्णोद्धार भइल दर क सुबहोशाम सखी
लइ भोले क नाम सखी ना।

जे करइ जलाभिषेक
पावइ शुभ खबर अनेक
लइ कांवड़िया चला, कइ आई प्रणाम सखी
लइ भोले क नाम सखी ना।

जबसे लाग बा सवनवाँ
वश मा बाटइ नाहीं मनवाँ
एनकेन करा कवनउ इंतजाम सखी
लइ भोले क नाम सखी ना।

चला घूमि आई सोमनाथ धाम सखी
लइ भोले क नाम सखी ना।

❑❑

❍ 9869141831

www.bhojpurisahityangan.com

लालबहादुर चौरसिया लाल

कजरी

नून रोटी कऽ भोग अब लगावा पिया।
मोदी-मोदी गावा पिया ना।।

धइले दाल के बौखार, चीनी पैंसठ के पार,
तेल खाए वाला बाल में लगावा पिया।
मोदी-मोदी गावा पिया ना।।

चाय-पत्ती अउर मसाला, कइले सबकर मुहँवा काला,
साबुन-सोड्डा मत देहियाँ पे लगावा पिया।
मोदी-मोदी गावा पिया ना।।

पेट्रोल-डीजल के हाल, सिलेंडर कइले बा बेहाल,
भाड़ा तीन गुना धीरे से चुकावा पिया।
मोदी-मोदी गावा पिया ना।।

छोड़ऽ खाए के तरकारी, नईखे बाड़ा तूँ सरकारी,
'लाल' अइठन के काबू में लावा पिया।
मोदी-मोदी गावा पिया ना।।

बिजुली बिल अ दवाई, महंगा भइल बा पढ़ाई,
खून पेरि-पेरि लइकन के पढ़ावा पिया।
मोदी-मोदी गावा पिया ना।।

❑❑

❍ आजमगढ़,(उ0 प्र0)

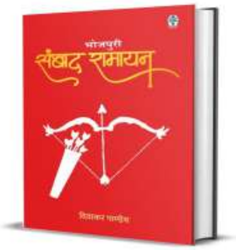

योगेन्द्र शर्मा "योगी"

मुखिया जी

छाया हव चमचन क,राउर कपार पर
बस देत रहा पईसा नरेगा दबाय के,
लूटा पंचईती,न चूका,सुराज हव
फिर मुखिया जी,साधा निशाना लहाय के।

खद्दर पर दाग,कउनो चिंता क बात नाही
पोखरी नीलाम करा,चुपके चुपाय के,
गंवई खड़ंजा हो,भलहीं से उंच खाल
अपने दुआरी क,रखिहा बनाय के।

लूटा पंचईती,न चुका,सूरज हव
फिर मुखिया जी,साधा निशाना लहाय के।

चिन्ह चिन्ह दिहा,अवास खास खास के
मिली कमीशन,हो भीतरैं नदाय के,
चाटुकार ओहु में,खोज लिहा मन जोग
भोग जे दुआरे,लगावत होइ आय के।

लूटा पंचईती,न चूका,सुराज हव
फिर मुखिया जी,साधा निशाना लहाय के।

दल्ला दलालन क,पालन देखात हव
बन गईलन एही में,केतना कमाय के,
कहीं चुवत करानी पर,छानी उजाड़ देख
"योगी" समाज बाय,रोवत लूकाय के।

लूटा पंचईती,न चूका,सुराज हव
फिर मुखिया जी,साधा निशाना लहाय के।।

❑❑

❍ भीषमपुर , चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

www.bhojpurisahityangan.com

ज्योति पांडेय

कविता समीक्षा

कविता : "केहू का थाही"
कवि : जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

"**केहू का थाही**" समकालीन भोजपुरी कविता के एगो सशक्त सामाजिक-व्यंग्यात्मक रचना ह। एह कविता में कवि आज के समाज के बदलत चरित्र, नैतिक पतन, धार्मिक आडंबर, सामाजिक भ्रम आ मानवीय संवेदना के क्षरण पर तीखा प्रहार कइले बाड़ें। कविता के हर अंतरा के आखिरी पंक्ति—**"केहू का थाही"**—एह बात के रेखांकित करेला कि सच आ झूठ, नीति आ अनीति के बीच के रेखा धीरे-धीरे धुँधली पड़ गइल बा, आ आम आदमी असमंजस में जी रहल बा।

कविता के शुरुआते में कवि कह रहल बानी —

"दुध फारऽ के मसक्कत,
ढील हेरत के बतकही,
केहू का थाही।"

एह पंक्तियन में समाज के ओह प्रवृत्ति पर व्यंग्य बा, जहाँ लोग समस्या के समाधान से जादे ओकरा पर बहस करे में लागल बा। मेहनत के मोल कम हो गइल बा आ बात के बतंगड़ बनावल आम बात हो गइल बा।

कवि के सामाजिक दृष्टि बहुते पैनी बा। ऊ लिखेलन—

"बात-बात में साँच छिपावल,
फेर लास के पानी चढ़ावल..."

एह पंक्तियन में साँच के दबावे आ झूठ के सजावे-सँवारवे के प्रवृत्ति पर करारा चोट कइल गइल बा। आज के समय में सच के दबा के झूठ के प्रतिष्ठित कइल जा रहल बा, एह यथार्थ के कवि बहुत कम शब्दन में अभिव्यक्त कर देले बाड़ें।

धार्मिक पाखंड पर कवि के व्यंग्य अउरी तेज हो जाला—

"नावें से डेरवावल करी,
चढ़ावा ह, जमके जेब भरी..."

एह पंक्तियन में धर्म के नाम पर भय पैदा करके आर्थिक शोषण करे वाला प्रवृत्ति के उजागर कइल गइल बा। कवि धर्म के विरोध ना करेलें, बल्कि धर्म के व्यवसाय बना देवे वाला मानसिकता के विरोध करेलें।

कविता के सबसे सकारात्मक पक्ष ओह अंतरा में दिखाई देला जहाँ कवि कहेलन—

"हिन्दू मुस्लिम भाईचारा,
सोझा बा जी इहवें सारा,
भरम क पलानी ढही..."

एह पंक्तियन में कवि सांप्रदायिक सद्भाव के समर्थन करेलें आ एह बात के रेखांकित करेलें कि आपसी प्रेम आ भाईचारा ही समाज के असली आधार बा। धर्म के नाम पर फैलावल भ्रम आखिरकार टूटे वाला बा।

कवि के पीड़ा सबसे अधिक ओह समय झलकेला जब ऊ लिखेलन—

"सुरूज के देखल भुला गइल,
अन्हरिया क आदत हो गइल..."

एह पंक्तियन में "सुरूज" आशा, सत्य आ प्रकाश के प्रतीक बा, जबकि "अन्हरिया" निराशा, अन्याय आ अज्ञान के। कवि के चिंता बा कि समाज अन्हियार के एतना अभ्यस्त हो गइल बा कि उजाला के ओर देखे के चाहतो कम हो गइल बा।

भाषा के दृष्टि से कविता अत्यंत सहज, लोकधर्मी आ प्रभावशाली बा। भोजपुरी के ठेठ शब्द, मुहावरा आ लोक-लय कविता के जीवंत बना देले बा। "थाही", "पलानी", "मंठा मही" जइसन शब्द कविता के सांस्कृतिक गहराई प्रदान कर रहल बाड़न। कवि कतों अनावश्यक अलंकार के सहारा नइखे लेले, बलुक सीधा, सटीक आ मारक अभिव्यक्ति का माध्यम से अपना बात पाठक तक पहुँचावे के परयास करि रहल बानी।

"केहू का थाही" एगो विचारोत्तेजक भोजपुरी कविता ह, जवन समकालीन समाज के विसंगतियन पर गंभीर सवाल उठा रहल बा। एह कविता में सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना, सांप्रदायिक सद्भाव आ नैतिक मूल्यन के पक्ष में स्वर स्पष्ट सुनाई दे रहल बा। जयशंकर प्रसाद द्विवेदी एह कविता के माध्यम से पाठक के खाली सोचे पर मजबूर ना करत बाड़ें, बलुक समाज में सत्य, विवेक आ मानवीयता के पुनर्स्थापना के सनेसो दे रहल बाड़ें । भोजपुरी के समकालीन सामाजिक कविता में एह रचना के दमगर स्थान निश्चित रूप से मानल जा सकेला।

❑❑

❍ गाजियाबाद, उ0 प्रदेश

www.bhojpurisahityangan.com

कनक किशोर

गंगा के नवगीत भीतर भाव के उत्पात

भोजपुरी साहित्यांगन के एगो चमकत सितारा गंगा बाबू, हँ गंगा प्रसाद अरुण के भोजपुरी काव्य संसार में आपन विशेष पहचान बा। गंगा बाबू के कलम भोजपुरी के हर विधा के समृद्ध कइले बा बाकिर उहां के प्रिय विधा काव्य रहे। कविता में उहाँ के गीत, नवगीत, हाइकु, गजल आ दूसरों विधा में खूब कलम चलवनीं बाकिर उनुका भीतर गीत - नवगीत के अजस्त्र धारा बहत रहत रहे। उहाँ के भोजपुरी गीत - नवगीत संसार के एगो विशेष पहचान देनीं। मंच से लेके पुस्तक आ पत्रिकन तक में। उहाँ के ' लकीर ' पत्रिका के सम्पादने ना कइनीं, भोजपुरी गीत - मनगीत के दुनिया में एगो बड़हन लकीर खींच देले बानीं जे उहाँ के गीत - संगीत के दुनिया के सिरमौर बना देले बा। आजु उहाँ का हमनी बीच नइखी ई कहल ठीक ना होखी काहे कि अपना गीत - नवगीत के रूप में हमनी बीच बानीं आ आगहूं रहब। उहाँ के एगो गीत - नवगीत संग्रह बा ' अंगना महुआ झरल ', जवन वर्ष 2010 में प्रकाशित भइल रहे। ओह संग्रह के कुछ रचनन पर एहिजा बात करि संग्रह के बूझे - समझे के प्रयास करब। कहल ह धान के गाँव पुआर से आ अदहन में फदकत भात चार गो चाउर देखि पता चलि जाला। परख खातिर ऐहिजो संग्रह के चार गो रचना।

कविता के जन्म कवि के लोकवादी जीवन अनुभव, संवेदना आ रचनात्मक चेतना के कोंख से होला। जीवन अनुभव जोरे कल्पना के पुट दे ओकरा के सटीक भाषा में पिरो देल कविता के बहुवर्णि आ जीवंत बना देला। गंगा बाबू माटी से जुड़ल अनुभवी कवि के नाम ह जेकर कविता के शब्दन में गहिर अनुभव आ अर्थ छुपल रहेला। लोक के आंतरिक अनुभव से निकलल निचोड़ के ' अंगना महुआ झरल ' में गंगा बाबू कविता के रूप में रखे के सफल प्रयास कइले बाड़न। जवन चीज हमनी के जीवन से गुम हो रहल बा उहो गंगा बाबू के एह संग्रह में देखे के मिल जात बा, जे कवि के विराट दृष्टि के गवाह बा।

कविता के एगो महत्वपूर्ण गुन ओकरा में छिपल मौन होला। कव गो ना भाव आ स्थिति सीधे ना रखल जा सकेला। संकते में रखल जा सकेला। ऊ मौन कविता के गहिर संवेदना के बता जाला। कबो कवनो घटना भीतर घुलत रहेला कवि के भीतर आ जिंदा रहत भीतरे पाकत रहेला ऊ कबो उचित समय कविता के रूप में सामने आ जाला शब्द रूप में। ओह रचना में घटित घटना के आगि के स्पष्ट रूप से देखल - समझल जा सकेला। ऊ घटना रूप में इतिहास से अलग होला बाकिर सच्चाई के नजदीक। गंगा बाबू के ' आंगन महुआ झरल ' से गुजरला के बाद ई अनुभव कइल जा सकेला। ओह संकलन के चार गो कवितन में कवि के दृष्टि देखे के एगो छोट प्रयास भर ह ई बतकही। गंगा बाबू के शब्द में कहल चाहब एह संकलन के बारे में कुछ त कहब -

' खूँट में बान्हल गइल बा
नेह के अनुबंध काहे ?
झाँकि के उफनत नयन में
के हिया के थाह चाहे ?

हो गइल बा तेज
अन्दर भाव के उत्पात,
अइसे मत बह पुरवा ! ' (कविता संख्या 19)

पुरवा उत्पाती होला। आजु के समय पुरवा के कई गो ना रूप बा। ओहि सब पुरवा से तरस्त कवि के अंदर उठत भावन, हिया में उठत हिलोर के संकलन ह ' आंगन झरल महुआ '।

संकलन के नाम "आंगन झरल महुआ" एगो गहिर संवेदनात्मक अउर सांस्कृतिक प्रतीक समेटले बा अपना में, शाब्दिक अर्थ से हटके। कवि ऐहिजा खाली महुआ के फूल झरे के बात नइखे करत, बल्कि ओकरा पीछे छिपल जिनिगी के दर्शन के बात रखले बा। कवि ऐहिजा संकलित कवितन के अपना भीतर के भावन के सहज रूप में फूटल देख रहल बा। प्राकृतिक रूप से प्रस्फूटित देख रहल बा। कविता के सौंदर्य ओकर प्राकृतिक रूप से प्रस्फूटने में निहित रहेला। संकलित कवितन में मिट्टी की खुशबू अउर ज़मीन से जुड़ल आम लोगिन के सुख-दुख, संघर्ष के नजदीक से महसूस कइल जा सकेला।थाकल - हारल जीवन के पतझड़ के बीच सुंदर आ मूल्यवान विचार जवन हृदय आंगन में जनमल ओकरे के सहेजे के एगो प्रयास ह ' आंगन महुआ झरल'। संकलन के एगो कविता के अंश जवन गूढ़ आ संशलिष्ट बा बाकिर रूमानियत पैदा करत एहसास बनि रूह के छू देत बा -

अंगना महुआ झरल
कि तोहरे रूप से।

www.bhojpurisahityangan.com

सँझवत-बाती भइल
कि अँजुरी जोर के,
तुलसी-चउरा
नेहा-बंशी डोर के।
सितुही रतन अगोरे
निरइठ धूप से । (कविता संख्या 3)

एह पंक्तियन में गीतकार के भाव के सौंदर्य निरखे जोग बा। कवि के अपने घर आंगन में जवन खुशी बिखरल दिखत बा ओकर श्रेय कवि प्रियतमा के देत बा। साँझ होखते अंजुरी में दीया ले तुलसी चबूतरा पर जरावल संस्कृति आ जड़ से जुड़ाव दिखावत बा। 'नेहा -बंशी डोर' में बहुत गहिर बात छिपल बा। कवि कहल चाहत बाड़े कि कृष्ण के बांसुरी से बंधल प्रेम जस गृहणी के प्रेमो तुलसी माई से जुड़ल रहे। सूरज के तपत धूपो में प्रिय रत्न (पिया) के राह देख रहल बिया प्रेयसी। एही आशय के अभिव्यक्ति ऊपर के पंक्तियन में कवि के भाव संवेदना, प्रकृति के जुड़ाव के बता रहल बा।
संकलन के कवितन में प्रतीक के उपयोग अइसन कइल गइल बा जे बहुअर्थी चित्र के साथ प्रकृति आ प्रेम के गीत गावत नजर आवत बा। एगो कविता के अंश -

रुप के बसेरा पर रुपा के छाँव।
अउँघाइल गली-गली, निनिआइल गाँव ।
महुआ के गंध झरे
अंग पोर-पोर,
आम के टिकोरा पर
आन्ही के जोर। (कविता संख्या 41)

'धनिया' के बाँहन पर 'होरी' के नाँव।
गाँव जे भोजपुरिया संस्कृति के जड़ ह ओकर अप्रतिम सौंदर्य पर आजु शहरीकरण आ पाश्चात्य रंग के छाया गाँव के रूप बिगाड़ के रख देले बा।कविता में प्रकृति, प्रेम अउर रूप सब एक साथ घुलल देखे के मिलत बा। महुआ आ आम बसंत के देन ह। बसंत में महुआ के मीठ मादक गंध प्रिय के शरीर के रोम- रोम से झरेला। कच्चे आम के टिकोरा पर तेज आँधी का जोर चलेला। ई एगो यथार्थ ह। कमजोरे पर नूं बरियार के बल दिखेला। "धनिया" अउर "होरी" प्रेमी-प्रेमिका के प्रतीक बा जे पति - पत्नी के एक दूसरा के दिल में बसे के बात करत बा। भोजपुरी लोक - लहजा के अप्रतिम रूप एहिजा बड़ी सुंदर ढ़ंग से परोसल गइल बा। कविता के मेहिनी कवि के दृस्टि संपन्न होखे के गवाही दे रहल बा।
साहित्य - कला, सूखा पड़ला में बदरी के आँख मिचौनी, धधकत सुरुज आ पियासल धरती, किसान माथे कर्ज के चिंता, सत्ता के फर्ज से मुँह मोड़ल, घोटाला करि सरकारी खजाना के लूट, आम जन के दुर्दशा, नेता के करम कुकर्म करि मौज में बीत रहल जीवन के एगो कविता मे गंगा बाबू के परोसल देखीं। ई गंगा बाबू के कविताई गुन से पाठक के अवगत करावे खातिर काफी बा। देखी कविता के प्रवाह आ शब्दानुसासन -

गीत-गवनई पहिले अइसन
नयका-नयका तर्ज
कि मौसम कतना बा खुदगर्ज !
सहमल-सिहिकल खेत-मोरनी
थथम-थकल मृग-छौनी,
पावस बरसे आग बदरिया
के ई आँख मिचौनी ।
इन्दर-राजा-नेता-सेवक
बिसरल सब के फर्ज !
रुसल गोसइयाँ देवा-देवी,
उदसल बरखा रानी
का जाने कब ई खेतन में
बरसी सोना-चानी !
सूना नयना गगन निहारे
कइसे उतरी कर्ज !
मिलीभगत हितसाधन, साजिश
हर दर-घाट घोटाला,
जनता-चंदन, रगरे
नेता पइसा-पुन्न कमाला!
खुलल खजाना, तिकड़म
अपने हथिआवे के मर्जा! (कविता संख्या 23)

गंगा बाबू के गीत - नवगीत के ई संकलन उहाँ के छोट - बड़ गहिर अनुभूतियन के तिलस्मी आईना ह। गीत के कारीगर अरुण जी के कारीगरी ना जादूगरी ह ' आंगन महुआ झरल '। गीत - नवगीत के ताकत महसूसल चाहत बानीं त संकलन से गुजरीं, गंगा बाबू के कलम लोहा मनवा के छोड़ी ई हम बिसवास के साथ कह सकत बानीं। नया नया प्रतिक आ बिम्ब कवितन के शिल्प के गझिन बनावत बाड़ी सं, साथे बहुवर्णी। एहसास बनके रूह में उतरे के ताकत बा संकलित गीत - नवगीतनन में। गंगा बाबू के जिनिगी ग्रामीण परिवेश अउर चमकत टाटानगर के संगम में पलल - बढ़ल बा, अनुभव के आंच में तपल बा, एह से गीतन के लबो - लहजा में अनुभूतियन के सार आ समाज के बदलत रुझान खूब समेटाइल बा। भोजपुरी गीत - नवगीत के पुरोधा हमनी बीच अपना कवितन के रूप में हरदम उपस्थित रहीहें।उहाँ के स्मृति के नमन।

❑❑

❍ राँची, (झारखंड)

www.bhojpurisahityangan.com

श्याम कुंवर भारती

अभियंता सौरभ कुमार

प्रेमवा के रोग

दिलवा के दर्द बढी आँख अँसुवा बहल रहे।
कहले ई सगरो लोगवा उ खुल के हंसल रहे।

नजर लड़ाके बसल बा केहु जे हमरे हिया में।
जवानी के उमर में हमरे प्रेम रोगवा लगल रहे।

केतनो केहु समझावे प्यार कइल गुनाह बा।
माने ना ई मनवा प्रेमवा में मरल ज़ियल रहें।

जबसे भइल प्यार लोगवा हमके पागल कहे।
दिनवा के हमरे चयन नींद रतिया उड़ल रहे।

बिना बात के हंसी आवे कबो रोवत रही हम।
कहले की केवनो आशिक पागल भईल रहे।

उनके हंसी खातिर गुजर गइली हर हद से हम।
दिल तोर के उ भारती बेदर्द पत्थर बनल रहे।

❑❑

❍ **बोकारो, झारखंड**

रूहानी ग़ज़ल

कबले पुकारीं, ए भोले, कबले इम्तिहान होई,
कहियो त हमरो अँखियन के सपना साकार होई।

दुनिया के भीड़ में अपना कहीं ना मिलल,
तोहरे चरण छुअनी त लागल घर-दुआर होई।

जे दिन से तोहरे नाम के माला जपनी,
ओह दिन से हर सुख हमके स्वीकार होई।

तोहरे मर्जी बिना पतो ना हिले जग में,
फेर काहे मनवा अतना लाचार होई?

जहर पियला तू दुनिया के बचावे खातिर,
हमरा दुख के घूँट पियब त का भार होई ?

भक्त के झोरी कबो खाली लौटव ल ना,
एतने भरोसा बा, अब का इनकार होई?

'सौरव' माँगीं त बस एतने दया, ए शंभू,
आखिरी साँस पर "हर हर महादेव" उच्चार होई।

❑❑

❍ **सिवान, बिहार**

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्य के काल विभाजन - एगो अध्ययन

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

कवनो भाषा के परिचय के मतलब होला ओकरा उत्पत्ति से लेके वर्तमान तक के क्रम बद्ध गतिविधि के विस्तार पूर्वक जानल भा जानकारी प्राप्त कइल। भोजपुरी हिन्द आर्यन भाषा परिवार के एगो सशक्त भाषा ह,जवना के उत्पत्ति मागधी,प्राकृत आ ओकरा अपभ्रंश से भइल मानल जाला। आजु भोजपुरी के सर्वमान्य लिपि देवनागरी लिपि बा।

पहिले से शुरू कके आज ले गौरवशाली भोजपुरियन के चित्त, चिंतन ,चेतना में हो रहल परिवर्तन , परिमार्जन के साथे-साथे भोजपुरी साहित्य में समसामयिक बदलाव के दस्तावेजीकरण के भोजपुरी साहित्य के इतिहास कहल जा सकेला।

साहित्य के काल विभाजन कर्ता, कृति ,विषय, रस, स्थान, शासक, प्रवृत्ति के आधार पर होला।भोजपुरी साहित्य के सांगोपांग अध्ययन आ विवेचन खातिर काल विभाजन के आवश्यकता महसूस कइल गइल। एह पर कई विद्वान लोग काम कइलें। एह दिशाई एगो महत्वपूर्ण प्रयास डॉ उदय नारायण तिवारी जी के शोध ग्रंथ 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' के रूप में सोझा आइल। भोजपुरी साहित्य के इतिहास कई विद्वान लोग लिखले बा आ सभे अपना-अपना हिसाब से काल विभाजन पर आपन विचार रखले बा। हाल के बरिसन में भोजपुरी साहित्य के इतिहास पर केन्द्रित जवन कुछ पुस्तक आइल बाड़ी सन, ओहनी के आधार पर काल विभाजन के समुझे के एगो परायास का रूप में एह आलेख के देखल जा सकेला।

डॉ अर्जुन तिवारी के पुस्तक 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' प्रकाशन वर्ष -2014, डॉ ब्रज भूषण मिश्र के पुस्तक 'भोजपुरी कविता के इतिहास' प्रकाशन वर्ष -2024 आ आचार्य शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी के पुस्तक 'आधुनिक भोजपुरी साहित्य के इतिहास' प्रकाशन वर्ष -2026 के ध्यान में राखत कुछ तथ्य स्पष्ट करे के एगो प्रयास भर बा।

काल विभाजन :

डॉ अर्जुन तिवारी, डॉ ब्रज भूषण मिश्र आ आचार्य शुभनारायन सिंह 'शुभ' , ई तीनों इतिहासकार लो अपने पुस्तक में काल विभाजन के शुरुवात करे खातिर **डॉ कृष्ण देव उपाध्याय** जी के अध्ययन आ विभाजन के आधार मानत आगु बढ़त देखात बाड़े। डॉ कृष्ण देव उपाध्याय जी वर्णन के सुविधा खातिर एह साहित्य के इतिहास के पाँच भाग में विभाजित कइले बानी-

1 सिद्ध साहित्य
2 नाथ साहित्य
3 संत साहित्य
4 लोक साहित्य
5 आधुनिक साहित्य

श्री दुर्गा शंकर सिंह लिखित 'भोजपुरी के कवि और काव्य' ग्रंथ प्रकाशन वर्ष-1950 में नामकरण आ काल विभाजन एह अनुसार बा-

1 प्रारम्भिक अविकसित काल (सिद्ध काल) : सन् 700-1100 ई0 तक
2 आदि काल(ज्ञान प्रचार काल –वीरकाल) : सन् 1100- 1325 ई0 तक
3 पूर्व मध्य काल (भक्ति काल) : सन् 1325 - 1650 ई0 तक
4 उत्तर मध्य काल(रीति काल) : सन् 1650- 1900 ई0 तक
5 आधुनिक काल (राष्ट्रीय काल और विकास काल) : सन् 1900-1950 ई0 तक

डॉ रिपुसूदन श्रीवास्तव जी का अनुसार –

1 आदिकाल (सिद्ध काल) : सन् 700- 1200 ई0 तक
2 गाथा काल : सन् 1200- 1325 ई0 तक
3 आध्यात्मिक काल : सन् 1325 - 1900 ई0 तक
4 देशभक्ति काल : सन् 1900- 1950 ई0 तक
5 आधुनिक काल : सन् 1950 - 1975 ई0 तक

डॉ अर्जुन तिवारी जी के एह काल विभाजन में वैज्ञानिकता के अभाव मानत आपत्ति दर्ज करत बानी।

रास बिहारी पाण्डेय सन् 1986 ई0 में अपने ग्रंथ 'भोजपुरी भाषा का इतिहास में जवन काल विभाजन आ नामकरण कइले बानी,ऊ एह प्रकार से बा-

1 आरंभिक काल : सन् 700- 1100 ई0 तक
2 चारण काल : सन् 1100- 1400 ई0 तक
3 संत काल : सन् 1400 - 1800 ई0 तक
4 अध्ययन काल : सन् 1800- 1900 ई0 तक
5 वर्तमान काल : सन् 1900 ई0 से अब तक(1986 ई0)

www.bhojpurisahityangan.com

एहु काल विभाजन पर डॉ अर्जुन तिवारी जी असहमत बानी। एह दिसाई उहाँ के आपन तर्क रखले बानी।

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका (मई 1994) में **डॉ रामशीष प्रसाद** भोजपुरी साहित्य के काल विभाजन पर आपन विचार रखले बानी। उहाँ के अनुसार –

1 आरंभ काल(सिद्ध नाथ काल): सन् 800- 1100 ई0 तक

2 आदि काल (गाथा काल) : सन् 1100- 1400 ई0 तक

3 मध्य काल (संत काल): सन् 1400 - 1900 ई0 तक

4 आधुनिक काल :

राष्ट्रीय सामाजिक जागरण काल :

सन् 1900- 1947 ई0 तक

विकास काल : सन् 1947 ई0 से अब तक

हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' 2002 ई0 में प्रकाशित अपने पुस्तक 'भोजपुरी भाषा का इतिहास' में काल विभाजन आ नामकरण अइसे कइले बानी-

1 शुरुवात काल (नाथ साहित्य) :

सन् 750- 1050 ई0 तक

2 पवारा काल : सन् 1051- 1350 ई0 तक

3 कबीर काल : सन् 1351 - 1650 ई0 तक

4 भक्ति काल : सन् 1651- 1850 ई0 तक

5 आजादी के पहिले तक के काल :

सन् 1851 - 1946 ई0 तक

6 आधुनिक काल : सन् 1947 ई0 से आजु तक (2002)

डॉ अर्जुन तिवारी जी भोजपुरी क्षेत्र के प्रकृति का अनुसार नामकरण आ विभाजन कइले बानी । इहाँ के इतिहास के वृहत इतिहास मानल जाला।

शुरुवात :

पहिला डेग (बोआइल (700-1100ई0 तक)

दूसरा डेग (रोपाइल (1100 – 1400ई0 तक)

बिचिला :

पहिला डेग : (निरावल (1400 -1757 ई0 तक)

दूसरा डेग (गदराइल (1758 – 1974ई 0 तक)

आजु काल्ह : (1975 ई0 से --------)

एकरे के परिमार्जित करत उहाँ के कहले बानी –

प्रवर्तन काल (सिद्ध तथा नाथ काल) (700-1100ई0 तक)

लोक गाथा काल : (1100 – 1400ई0 तक)

प्रबोधन काल (संत समागम काल) : (1400 -1757 ई 0 तक)

नवजागरण काल : (1758 – 1974ई 0 तक)

प्रसार काल : (1975 ई0 से --------)

डॉ ब्रज भूषण मिश्र जी अपने पुस्तक 'भोजपुरी कविता के इतिहास' प्रकाशन वर्ष -2024 में काल विभाजन आ नामकरण एह रूप में देले बानी-

1 सिद्ध आ नाथ काल : 700 ई0 से 1100 ई0 तक

2 लोक गाथा-लोक गीत काल : 1100 ई0 से 1400 ई0 तक

3 आध्यात्मिक काल : 1401 ई0 से 1900 ई0 तक

4 देशभक्ति काल : 1901 ई0 से 1947 ई0 तक

5 रचनात्मक आंदोलन काल भा भाषायी जागरण काल -

1948ई0 से 1977 ई0 तक

6 विकास काल – 1978 ई0 से 2000 ई0 तक

7 समकालीन काल भा विस्तार काल : 2001 ई0 से अब तक

आचार्य शुभनारायन सिंह 'शुभ' जी के पुस्तक 'आधुनिक भोजपुरी साहित्य के इतिहास' प्रकाशन वर्ष -2026 में काल विभाजन आ नामकरण डॉ जौहर शाफियाबादी आ राजेश्वरी शांडिल्य जी के नामकरण आ विभाजन के आधार मानत काल विभाजन आ नामकरण कइले बानी।

आदिकाल : (600 ई0 से 1800 ई0 तक)

मध्यकाल : (1800 ई0 से 1946 ई0 तक)

आधुनिक काल : (1947 ई0 से आद्यावधि)

❑❑

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

www.bhojpurisahityangan.com

भालचंद्र त्रिपाठी

गीत

असरा के फूलवा झरि जाला,
हियरा राति-दिना अकुलाला
जाने कावऽ होई कइसन यह जहनवाँ में
विधना जोतियो ना दिहले बाने नयनवाँ में

सूरज से उजियार चाँन के, सुघर कहे सब कोई
हरीयर पियर लाल-रंग ना जाने कइसन होई
कइसन होई ऊ मिरिग छाला
जेहपर सिया हिया ललचाला
कबहुँ कुछ ना दिखाइल बा सपनवाँ में
विधना जोतियो...

कइसे बदरा घेरि-घेरि के चंदा के मुँह ढाँके
जानें कइसे केहु घुँघटा उठाइ के झाँके
जाने कइसे केहु सरमाला
कइसे भँवरा रस ले जाला
कइसन लागत होई दुल्हिन गवनवाँ में
विधना जोतियो...

अहिबाती बिजुरी के नखरा तनिको समझ न आवे
बाकिर मद में चूर बदरवा गरजि-गरजि डेरवावे
बगियां जब झलुवा परि जाला
कइसे के अंचरा लहराला
नाचे मोर, झूमे धनवां सिवनवां में
बिधना जोतियो...

कइसन कोइल होले अइसन मीठी बोल सुनावे
कइसे सरसो झूमि झूमि के सबकर मन अरुझावे
कइसन बन के ढाक फुलाला
अमवां में जब रस भरि जाला
नाचे मोर, झूमे धनवा सिवनवा में
बिधना जोतियो...’

❑❑

❍ गोरखपुर, उ0 प्र0

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

केकर भइलें

राम वेंट, गया गइलें
केकर भइलें।

उनुके कारज
सहर सहर के सरकारी
जगह-जमीन, रुपिया-पइसा
बर-बिकास,पसरल परकास
हजम कइलें। केकर भइलें।

उनुके तिगड़म
बाजत बाजा, ढम ढमा ढम
मनई भा मनई के जान
उनुका खातिर बनि बेसरम
दफन कइलें। केकर भइलें।

उनुके बाति
ना मनई ना ओकर जाति
के देखि केकर जज़बाति
का मंदिर मसजिद गुरुद्वारा
सभे खइलें। केकर भइलें।

उनुके परतोख
तेल-तासन, पानी तक सोख
चूसत खून बा, जइसे जोंख
अदिमी-औरत, लइका-लइकी
सभके धइलें। केकर भइलें।

उनुके धरम
अझुरावल एक दोसरा के
लोक में लगावत झगरा के
अपना पेट आ कुरसी खातिर
कुकरम कइलें। केकर भइलें।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

www.bhojpurisahityangan.com

शम्स जमील

आस जरत बा

के कहे कि लाश जरत बा,
देही के हाड़-माँस जरत बा।
साँच इहे कि माइ-बाबू के
बुढ़वती के एगो आस जरत बा।

शायद कहुके सुन लेहलस,
दोसर दुनिया चुन लेहलस,
छोड़ी के मोह-माया सगरी,
बाबूआ आँख मुन लेहलस।

के बा अपन, के पराया,
भीतर के एहसास जरत बा,
साँच इहे कि माइ-बाबू के
जीये के एगो आस जरत बा।

बाबू के साथे माइ रोवे,
घरवा में भौजाई रोवे,
एक तरफ दुवरा बैठल
अपन छोटका भाई रोवे।

आ माय गाँव के सोझा आज,
धिया-पूत के भास जरत बा,
साँच इहे कि माइ-बाबू के
मनवा के मिठास जरत बा।

राम के देखहीं राग लागल,
जब मुंहवा में आग लागल,
कहू के आज सेनुर धोवाइल,
किनारे एगो सुहाग लागल।

तीज आ करवाह चौथ के,
बस एगो उपवास जरत बा,
साँच इहे कि मेहर के एगो
रिश्ता सबसे खाश जरत बा।

❑❑

❍ दुबई

बलजीत सिंह 'बेनाम'

ग़ज़ल

1.

लागत बा कि घर में तन्हा बानी!
हम त लेकिन नगर में तन्हा बानी!

संग में बा काफिला हमरे फिर भी!
बड़ा अचरज सफ़र में तन्हा बानी!

चाहे वाला हजार बाड़ें मगर!
हर नजरिया में हम तन्हा बानी!

बुझल इक चिराग जइसन बानी!
कवनो असर में तन्हा बानी!

मिल जाई मुकाम हमरो एक दिन!
अगर सच्चे हुनर में तन्हा बानी!

2.

शराफ़त के जो गीत गइहें!
ओकरे के काट खइहें जमाना!

जो खुद डूबल बाड़ें ओकरा खातिर!
बताईं काहे जरूरी बा डूब जाना!

फकत मांगनी प्यार, कब कहनी!
तारा आसमान से तोड़ के लाना!

जब केहू हाथ ना बढ़वलस!
त हमहूँ छोड़ दिहनी लड़खड़ाना!

जरूरत सी देले बा होंठवा के!
बड़ा मुश्किल बा खुल के मुस्कुराना!

❑❑

❍ हांसी, हिसार

www.bhojpurisahityangan.com

जितेन्द्र कुमार 'नूर'

गीत

हम हईं इहाँ के परधान
हमार केहू का करिहें
क के चलब हम सीना उतान
हमार केहू का करिहें

सेठ-सहुकारन के पट्टा दियाइब
बाग-बगइचा क पेड़ कटवाइब
जहाँ मन करी खोदब खदान
हमार केहू का करिहें

सबके बिकास वाला नारा उचारब
पुरखन क रात-दिन दोस हम निकारब
सोसल मीडिया प बँटी नया ग्यान
हमार केहू का करिहें

जाति-धरम वाला पाठ सबके पढ़ाइब
टोला-मुहल्ला में झगड़ा कराइब
तबे चली न हमरो दुकान
हमार केहू का करिहें

कुर्सी के जोर से सबके नचाइब
जवन मन करी तवन काम करवाइब
बात मनिहें दरोगा-दीवान
हमार केहू का करिहें

चेला चपाटी हमार महिमा सुनइहें
जवन कहब खाली उहे बतियइहें
कुछ बुझिहें ना 'नूर' ई नदान
हमार केहू का करिहें

❑❑

❍ आजमगढ, उत्तर प्रदेश

अंकुश्री

दोसरा के बेटी

शिवजी के मुँह पर हमेशा बारह बाजल रहत रहे। बाकिर ओह दिन ऊ बड़ा खुश रहस। उनका के खुश देखके पड़ोसी राम प्रसाद जी पूछलन, ‘‘का बात ह ? तू त केहू के खुशियो देख के खुश ना होखेल। आज अतना खुश कइसे देखाई देत बाड़ ? कवनो खास बात बा का ?’’

‘‘मालूम बा कि ना ? लखन भइआ बड़ा आदर्शवादी बनत रहस। उनकर बड़की बेटी सुष्मिता दोसरा जात में बिआह कर रहल बिआ !’’ गोतिया के बात ! भइया के जगहँसाई के बारे में सोच-सोच के ऊ बड़ा खुश रहस।

‘‘बाकिर एहमें नया बात का बा ? अइसन बात अब कवनो नया नइखे रह गइल।’’

‘‘खाक नया नइखे रह गइल ? हम अइसन बिआह के एकदम बिरोधी हईं। खानदान के नाक कट गइल आ नये बात नइखे ?’’ शिवजी के बेटिओ जवान हो गइल रहे। ऊ कहलन, ‘‘एह मामले में हम कवनो ढिलाई ना बरतेनी। अपना बाल-बच्चा के एकदम आवंक में रखेनी। का मजाल कि ओकनी के ऐने-ओने चाहे कवनो ऊँच-नीच कर सको। हमरा इहे चिंता बा कि हम बेटी के रिश्ता खातिर कहईं जाएब त लोग का कही ?’’

लखन के बेटी के बिआह भइल अबहीं सालो ना लागल रहे कि कि महल्ला में हल्ला होखे लागल कि शिवजी के बेटी रूपा दू दिन से घर में नइखे। लोग के पता चल गइल रहे कि ऊ मोहना के बेटा हरिया के साथ भाग गइल बिआ। ई बात लोग खातिर बड़ा चटकदार रहे। जल्दिये महल्ला से बाहरो फइल गइल। सबके पता रहे कि शिवजी के परिवार-खानदान में हरिया के परिवार-खानदान के छुअल पानिओ तक ना चलेला।

शिवजी मुँह लटकवले अपना दुआरी पर घूमत रहस। तबे राम प्रसाद जी के उनकरा पर नज़र पड़ गइल। ऊ मुँहफट आदमी रहस। झट से टोक देलन, ‘‘तहार बेटी रूपा त लखन भइया के बेटी सुष्मितो के पार कर गइली।’’ कुछ रुक के ऊ कहलन, ‘‘लखन भइया के बेटी के बिआह दोसरा जात में होत रहे त तहार खानदान के इज्जत जात रहे। ऊ त आपन बेटी के बिआह धूमधाम से कर देलन, बाकिर तहार बेटी त नाक कटवा के भाग गइल। अब तहार खानदान के इज्जत के का होखी ?’’

शिवजी लगे कवनो जबाब ना रहे। ऊ चुपचाप घर के भीतर चल गइलन।

❑❑

❍ 8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)–834 010

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी नाटक के विविध रूप

डॉ सुधांशु कुमार सिंह

नाटक एगो अइसन विधा ह, जवना के ब्रह्म आँख से देख के कान से सुन के होला। ई विधा बहुत पुरान ह। एकरा सम्बन्ध में कई प्रकार के मत पावल जाला। नाटक के उत्पत्ति का विषय में एगो कथा बा कि सब देवता लोग ब्रह्मा जी के पास में गइल लोग आ काहल लोग कि एह शृष्टि में मनोरंजन के कवनों व्यवस्था कइल जाव। ब्रह्मा जी शृग वेद से कथानक,सामवेद से संगीत अथर्व वेद से रस आ अजुर्वेद से अभिनय लेके पांचवा वेद नाट्य वेद के अवतारना कइनी। ओकरा बाद एगो रंग मंच तइयार भइल। ओकरा बाद उहाँ का भारत मुनि के निर्देश दिहनी कि अब नाटक के प्रदर्शन कइल जाव। ब्रह्मा से प्राप्त ज्ञान का अनुसार नाट्याचार्य जवन नाटक प्रस्तुत करवनीं ऊ नाटक के नाँव देवासुर संग्राम रहे जवना में देवता लोग के हार हो जात बा। देवता लोग का क्षोभ भइल। भारत मुनी बतवलें कि नाटक में कवनों प्रकार के पक्षपात के गुंजाइस ना होला। ई एगो मनोरंजन ला कइल जाला आ सामाज के एगो आइना देखावेला । भोजपुरी का पहिले संस्कृत में नाटक राजदरबार में होत रहे।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र जी नाटक के व्यवस्था करत लिखत बानी कि काव्य के सर्वगुण सम्पन्न खेल के नाटक कहल जाला । एकर नायक कवनोंमहाराज भा ईश्वर भा परमेश्वर होखे के चाही। एह में रस, शृंगार ,मनोरंजन, हास्य सब होखे के चाही।

नाटक पहिले काव्य के अंतर्गत लिखल जात रहे, बाक़िर बाद में एकर विकास स्वतंत्र रूप से भइल,जवना में रंगमंच के नाटक के एगो तत्व का रूप में स्वीकार कइल गइल आ संवाद के महत्व बहुत बढ़ गइल। नाटक के रचे वाला लोग परदा के पीछा चल गइल आ एपर आउर मेंही से काम भइल।

नाटक के प्रमुख तत्व के रूप में निम्न लिखित के चर्चा कइल आवश्यक बा।

1.नाटक के वस्तु (कथानक),2. नाटक के पात्र (अभिनेता),3. नाटक के समय आ स्थान , 4. नाटक के संवाद, 5. नाटक के उदेश्य , 6. नाटक के संरचना शिल्प शैली, 7.नाटक के रंगमंच , 8. गीत-संगीत, नृत्य आ 9. नाटक के रस , जब ई सब कुछ नाटक में होई तब जाके नाटक पूरा होई। जहाँ तक भोजपुरी नाटक भा लोक नाटक के बात आवेला त अनायास भिखारी ठाकुर के ही नाम आवेला। भिखारी ठाकुर के बहुत नाटक बा, विदेसिया , भाई विरोध, बेटी-बेंचवा, विधवा-विलाप, पुत्र-बध, गंगा-स्नान , राधे श्याम बहार, ननद-भउजाई आदि बाक़िर भोजपुरी नाट्य साहित्य के बात आई त 1984 ई0 में नाटक के श्री गणेश रविदत्त शुक्ल , देवासुर चरित भोजपुरी में लिखनी। ई नाटक पूर्ण रूप से भोजपुरी ना रहे। ई नाटक हिन्दी नाटक का साथे भोजपुरी संवाद के व्यवहार भइल रहे। ओह काल क्रम में एह शुरुवात का बाद और कुछ भी नाटक का रूप में सामाग्री आइल होई, बाक़िर पाठक के अभाव , ब्रिटिश हुकूमत आ नियम कानून का चलते दब गइल होई, दबा दिहल होई, ई सब शोध के विषय बा, बाक़िर लोक नाटकके पूर्व परंपरा गाँव-गवई संस्कार आ खून में रसत बढ़त पीढ़ीआगे बढ़त गइल,जवन भिन्न-भिन्न विषय वस्तु का साथे अलग-अलग रीति-रिवाज परंपरा स्थान का दृष्टिकोण से अलग अलग रूप आ प्रकार में व्यक्ति समाज का सोझा आवत रहल, जवन आगे अपना विविध रूप डोमकच, नौटंकी, रामलीला, बहुरूपिया, जट-जटनी, भाँड़, चैता, नेटुआ, पंवरिया, बख्तों-बख्ताइन, नट, कठपुतरी , खेल-तमासा आदि का रूप में जानल सुनल जात रहे।

डोमकच:- ग्रामीण क्षेत्र में महिला लोग द्वारा ई नाटक खेलल जाला । एकर एगो विशेष प्रयोजन होला। ई मुख्य रूप से लड़का का विवाह के दिन होला। जब घर से बारात निकल जाला। घर दुआर, टोला-मुहल्ला सब शांत हो जाला, ओह समय रात्रि में चोर उचक्का द्वारा घर में चोरी हो जाये का डर से डोमकच के आयोजन होला। सब लोग रात भर जागल रही। एह में कवनों मंच के आवश्यकता ना होला ना लाइट साउंड के। औरत लोग लालटेन , दिया बाती का माध्यम से ई डोमकच खेलेला। ई मूल रूप से बिहार आ उत्तर प्रदेश में खेलल जाला।

नौटंकी:- लोकनाटकन में ई एगो अइसन विधा ह,जवना में आकृति प्रकृति आ मंच सब एके साथे मिलेला। जयशंकर प्रसाद रंगमंच निबंध में नौटंकी के चरचा करत ई मानत बारें कि नौटंकी शब्द नाटकी से बनल बा।

अइसन मानल जात बा कि तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो के परयास से नौटंकी के बढ़ावा मिलल आ उ नौटंकी के भाषा पर आपन प्रभाव डललें। कुछ जगहा नौटंकी के ‘स्वांग’ आ ‘भगत’ भी कहल जाला। डॉ श्याम परमार के नौटंकी में आल्हा छंद के वीर रस के उत्कर्ष प्रदान होला। श्री रविन्द्र भ्रमर लोकनाटकन के दू गो भाग में बाँटत बारें-

धार्मिक 2. लौकिक। लौकिक नाटकन के तीन गो प्रकार होला- भाँड़-भँड़ैती ,विदेसिया आ नौटंकी।

www.bhojpurisahityangan.com

अइसनो कहावत बा कि नौटंकी के जन्मदाता मल्ल, रावत आ रंगा नाव के आदमी लोग रहे , जवन ढोलक पर आपन अभिनय देखावत रहे।

मल्ल जाट जाति के , रावत राजपूत आ रंगा जुलाहा। ई कवनो जाति विशेष के नाटक ना ह,नौटंकी में कवनो ना कवनो रूमानी कथा जरूर होला। ओकरा साथे ओकर प्रिय यंत्र नगाड़ा ह।

डॉ पद्म सिंह शर्मा कमलेश नौटंकी के प्रेम कथा का रूप में मानत बारें। "शीरी-फरहाद", "सुल्ताना डाकू", "लैला-मजनू" त्रिया चरित्र, ई सब नौटंकी ख्याति प्राप्त कर चुकल बाड़ी सन। नौटंकी के मंच खुला स्थान पर प्रायः बनावल जाला , मंच बनवला का बाद ऊपर से सामियाना लगा के नगाड़ा वाला एगो कोना में बइठ के आपन-आपन नगाड़ा बजावेलें। दर्शक लोग के साफ दिखाई डेला। हाथरस के नाथा राम नौटंकी के जानल-मानल लेखक बाड़ें। नौटंकी शाहाबाद जिला, चंपारण,सारण कमिश्नरी के हरेक अंचल में आजों खूब होला।

रामलीला:- भोजपुरी इलाका का साथे मैथिली,नेपाल,वृन्दावन में रामलीला के मंचन होत रहेला। रामलीला पौराणिक रामकथा पर आधारित होला। एकर संवाद पद्यात्मक दोहा, चौपाई बा। एकर रंगमंचसब खुला मैदान में होला, जहाँ हजारों लाखों लोग रात-रात भर बइठ के एकर आनंद उठावेला। रामलीला में मुख्य रूप से धनुष यज्ञ के दृश्य , सीता स्वयंबर , परसुराम – लक्ष्मण संवाद ,राम वन गमन,सीता हरण, लंका दहन,अंगद-रावण संवाद,लक्षमन –मेघनाथ युद्ध, राम- कुंभकरण युद्ध , राम-रावण युद्ध, भरत मिलाप, आ राम राज्याभिषेक ई सब रामलीला में देखावल जाला, जवना के श्रोता देख के आग़ा जालें।

बहुरूपिया:- बहुत साल पहिले विद्वान लोग के मत रहे कि बहुरूपिया एगो मुगल दरबार के आकर्षण रहे सन। एके गो आदमी कई एक गो रूप बना के समाज के मनोरंजन करऽ सन। आजों ई परंपरा बा। आज त ई गोरखधंधा हो गइल बा। जिये खाये ला ई नाटक प्रसिद्ध बा। ई भोजपुरी, मैथिली आ आदिवासी क्षेत्रन में आपन कारनामा देखावत रहे लें सन। हर दिन अलग-अलग मेकअप, कबही दरोगा, वकील, कालीचंडी, शंकर जी के भेष बना के आपन जीवन यापन कर रहल बारें सन।

जट जटनी:- ई नृत्य संगीत मुख्य रूप से भागलपुर , मुंगेर अउर मिथिला के इलाका में प्रचलित बा। उत्तर बिहार आ भोजपुर क्षेत्र के गाँव कुछ गीत गा के हँसा के मनोरंजन करेली सन। एह में दू गो दल होला। औरतन के एगो दल जाट बनेला , उ अपना माथा पर साफा (पगरी) धोती बंडी,कुर्ता , गमछा आ दूसरा दल आपन पारंपरिक परिधान साड़ी, लंहगा पहिरेला। एह में लोकगीत आ संगीत का माध्यम से संवाद होला।

भाँड़:- भाँड़ एक प्रकार के एगो नाटक ह, केहु के नकल उतारल आ स्वांग धारण कइल, ई एगो व्यवसाय बन गइल। अइसन लोग मुख्य रुप से दिल्ली,बनारस , कन्नौज माणिकपुर में रहे वाला बा । एह लोग के स्संगीत के जवन शृंखला बा , बहुत लंबा चलेला। ई लोग पौराणिक नाटक का आधार पर आपन प्रदर्शन करेला। हाल तक बनारस में रांनआठ भाँड़ आपन उत्कृष्ट कला देखावत रहस। भाँड़ शादी बियाह जइसन अवसर पर पहुँच के अपना में बात करके ढोलक पर ताल दे के , संवाद कर के हँसावे के काम करेला। एह लोग के मेकअप बेढंगा रही, जवना से मंच आवते लोग का हँसी छूट जाई। इ लोग बात-बात में लटका तुकड़ आ पढ़ गढ़ लेवेला। एह लोग के संवाद के स्तर स्वभाव लोकमानस के बहुत नजदीक बा । एही से एकरा के लोग लोकनाटक में रखले बा। एकरा पर जादा बहस कइल ठीक नइखे।

चैता:- चैता बिहार के एगो अइसन लोक नाटक ह, जवना में सैकड़ों लोग गोलाकार बइठे ला । झाल मजीरा के साथ बीच में ढोलक मंजीरा छिटकाबीच में गावे वाला गाई साथे ओकरा सब लोग मिल के गावेला । बीच वाला आधा गावेलें, आधा सैकड़ो लोग गाई । एकरा चारों ओर लोग के तांता लागल रहेला। आज चइता के स्वरूप बदल गइल बा । आज नर्तकी के राख़ के चइता करावल जात बा। मधुमास फागुन आ ठीक बाद चैत में ई मुख्य रूप से गावल जाला । एही से एकरा के चइता कहल जाला।

नेटुआ:- ई उत्तरी भारत में एक जगहा से दोसरा जगहा आपन ठेकाना बदलत रहे वाला जाति ह। एकरा के लोग बनजारा भी कहेला । ई सुंदर गठीला बदन वाला होलें सन। एकनी के पेशा गांवा गाई घूम के मदारी, बाजीगरी , पहलवानी देखावेला। एह लोग के मंडली में दू से तीन आदमी होलें, जवन बजार गाँव में जाके नाटकीय भाव में मनोरंजन करेला।

ई एगो पेशेवर जाति होले , इनकार काम घुमत-फिरत सारंगी , तबला अउर कंसी पर नटुआ लड़का साड़ी ब्लाउज पहिन के नारी का पूरा आभूषण का साथे हाव-भाव लड़की के भूमिका निभावेला । एह लोग के देखे वाला दर्शक अक्सर ग्रामीण होलें । ओकरे के आज का समय में लौंडा नाच कहल जाला। अब ई एगो जाति विशेष के नाच नइखे रह गइल। गंगा स्नान आ छठ पूजा में लोग अपना बच्चा के मनौती का भाड़ा में माई अपना अँचरा पर लौंडा नाच करावेलीं। नटुआ के नाच में राजा विक्रम के सात गो रानी लोग सौतिया दाह कहानी के वर्णन बा। नेटुआ लोग के रंगमंच कहीं तइयार हो जाला।

पँवरिया:- ई एगो विशेष तरह के ढोलक का सहारे गावय जाये वाला सोहर गीत आ नृत्य करे वाला लोग ह। केहु का घरे जब बच्चा होलें, त ई लोग पगड़ी, अचकन , पायजामा आ ओहू में कुछ लोग नारी का भेष-भूसा में आल्हा,रुदल आ कुँवर सिंह बीरगाथा गावेला लोग। पँवरिया:- एगो अइसन गीत आ नृत्य का

www.bhojpurisahityangan.com

रूप में मानल जाला जवना में मान गुजरिया , राजा परिसोतिम, मामा-भगिना ,कुँवर सिंह , चैन सिंह लोग के कथा आ गीत लंबा समय से गावत आवत बारें सन। ई जवना क्षेत्र में जालें सन, उहाँ के राजा महाराजा पर गीत बनाके गावे लगेलें सन। शाहाबाद में कुँवर सिंह , चंपारण में राजा चैन सिंह के कहानी गाथा के रूप में बा। ई जवना घर में सज-धज के जालें स, उहाँ बीर गाथा गावत समय तलवार , भाला आ शस्त्र चलावत पैंतरा बाँध-बाँध के एक दोसरा पर वार करे के चाहे लें स , त सहजे ई लोक नाटक बन जाला।

बक्खो-बखाइन:- एहो एगो पँवरिये के मिलल-जुलल रूप हा। एमे एगो पति –पत्नी रहे ले सा। केहु का घरे जब लड़का पैदा होला, त लोग आमंत्रित करेला भा ई लोग पता लगा के चल आवेला। ई आपन संगीत मचिया पर बइठके खंझरी बजावत गावेलें स आ परिवार के लोग दर्शक बन के एहनिन के घेर के देखेला। माई,दादी , फुआ आ चाची लोग पईसा , कपड़ा लत्ता लुटावेला । ई लोग पूरा प्रसव पीड़ा से बच्चा भइला तक नाटकीय ढंग से परोसेला । नाचत खेलत बच्चा के पालना में से उठा के पइसा कौड़ी, सोना-चाँदी के माँग करेला। जब माँग पूरा हो जाला त उ लोग बच्चा के आशीष देके ओकरा माई के दे देवेला।

नट:- दू गो दिसा में रस्सी बाँध के एगो लड़की आ ताकी सावधानी से चलेला लोग । एगो लग्गी के सहारे कबही-कबही ई लोग नट –मदारी आ जमूरा बन के अजीबो गरीब कारनामा करेला। मदारी जमूरा से सवाल पूछेला आ जमूरा ओकर उत्तर देवेला।

कठपुतली:- काठ के बनावल एगो गुड्डी भा कठपुतली । ई गाँव देहात में राजस्थानी भेष-भूषा में कठपुतली खेल-तमासा दिखावे वाला लोग होला। ई लोग कठपुतली नृत्य अपना थिरकत उँगली से कठपुतली धागा से सधल रहेला। हाथ के इसारा पर ई नाच होला । एकरा ला मंच के जरूरत नइखे। गांवा गाई कठपुतली के खेल देखावे ला ई लोग। अतना निपुन रहेला कि एक आदमी दू-दू गो कठपुतली नचा लेवेला। ई लोग राजस्थान के प्रतापी राजा , मुगल बादशाह लोग के काठ के पात्र के अभिनय करावेला । ग्रामीण इलाका भा मेला में गुलाबो, सिताबो,नामक बहिन लोग के घर के कलह के कठपुतली के द्वारा नाच होला। ई लोग पृथ्वीराज चौहान के कहानी कठपुतली के माध्यम से प्रदर्शित करेला। ई सब नाटक का श्रेणी में आवत बा।

उपयुक्त नाटक के विविध रूप के देखत नाटक भा लोक नाटक का विषय में जानल समझल जा सकेला।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. भोजपुरी नाटक, नालंदा खुला विश्वविद्यालय
2. लोकधर्मी नाट्य परम्परा-लेखक श्याम परमार, प्रकाशक-हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, प्रथम संस्करण मार्च 1959 पृष्ट-47
3. हिन्दुस्तानी, त्रैमासिक, जुलाई 1937, पृष्ट-255
4. लोकधर्मी नाट्य परम्परा-लेखक श्याम परमार, प्रकाशक-हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, प्रथम संस्करण, मार्च 1959 पृष्ट-50
5. हिन्दी साहित्य कोश, प0 ज्ञानमंडल लि0बनारस ,प्रथम संस्करण संवत 2015
6. आलोचना त्रैमासिक, नाटक विशेषांक , हिन्दी लोक नाट्य लेखक – रवीन्द्र भ्रमर , प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. अंजोर,भोजपुरी परिवार त्रैमासिक मुखपत्र अप्रैल-जुलाई 1971 , पृष्ट -9
8. लोक साहित्य की भूमिका , लेखक- डॉ कृष्ण देव उपाध्याय , प्रकाशक – साहित्य भवन प्रा0 लि0 इलाहाबाद , प्रथम संस्करण 1957, पृष्ट-87
9. वही............... पृष्ट संख्या-216
10. भोजपुरी लोकगीत भाग-1 , लेखक - डॉ कृष्ण देव उपाध्याय

❑❑

❍ मशरक,सारण, बिहार

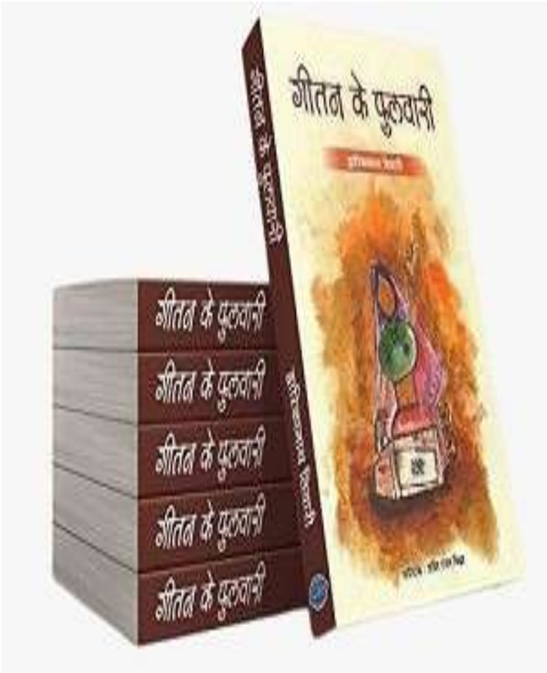

www.bhojpurisahityangan.com

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

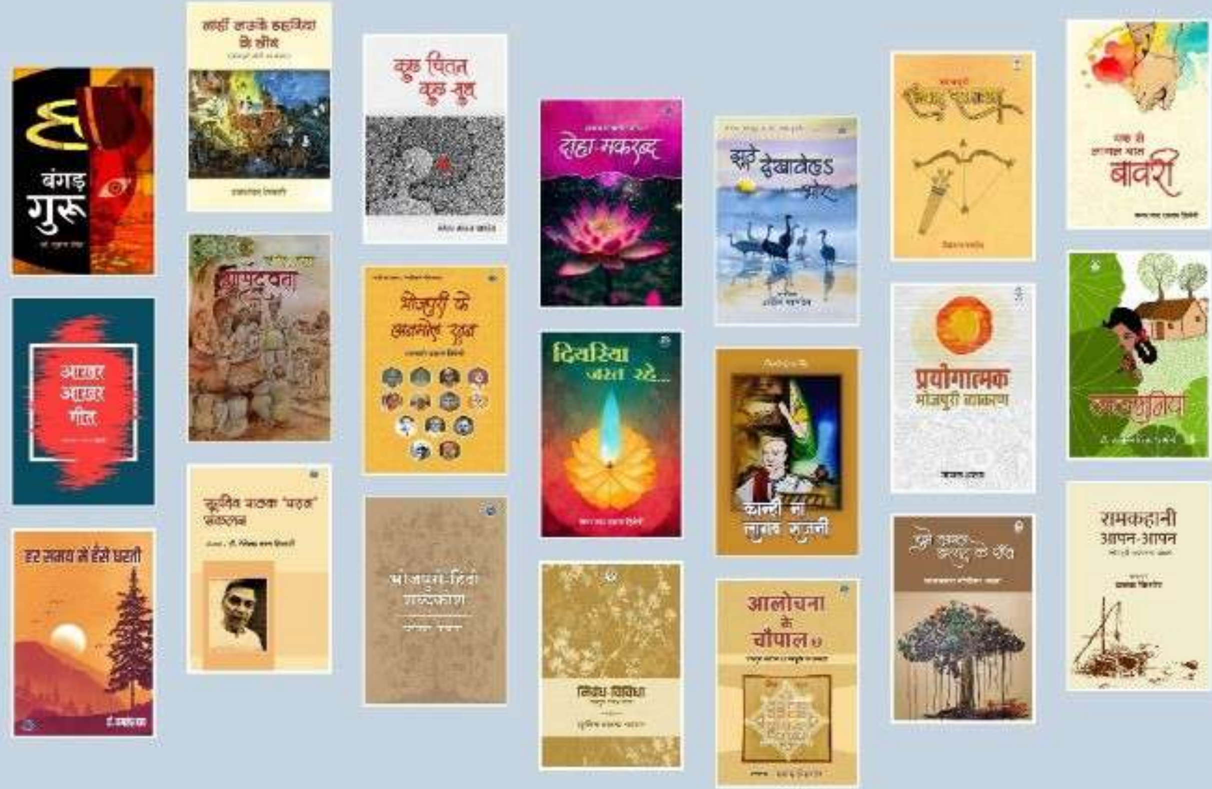

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

लाइक आ सब्सक्राइब करी आ

भोजपुरी साहित्य : रचना-आलोचना

से जुड़ी

@RachanaAalochana